



इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ

BSKC-103
लौकिक संस्कृत गद्य
साहित्य

लौकिक संस्कृत गद्य साहित्य

खण्ड 1	
लौकिक संस्कृत गद्य साहित्य का इतिहास	7
खण्ड 2	
शुकनासोपदेशः	63
खण्ड 3	
शिवराजविजयः (प्रथमो निःश्वासः)	123
खण्ड 4	
विश्रुतचरितम् (1-15 परिच्छेद तक)	187

पाठ्यक्रम विशेषज्ञ समिति

प्रो. रमेश कुमार पाण्डे
राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली

डॉ. रंजन कुमार त्रिपाठी
सह आचार्य , संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो. सत्यकाम
मानविकी विद्यापीठ
इग्नू मैदानगढ़ी, नई दिल्ली

प्रो. आनन्द कुमार श्रीवास्तव
बनारस हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी

डॉ. देवेश कुमार मिश्र
सह आचार्य , संस्कृत विभाग ,मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय,
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली

प्रो. रमाकान्त पाण्डे
निदेशक ,मुक्त स्वाध्याय पीठ
राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

पाठ लेखक

इकाई संख्या

डॉ. पुष्पा, एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत संकाय, इग्नू , नई दिल्ली	1
डॉ. विजय शंकर द्विवेदी, असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	2
डॉ. देवेश कुमार मिश्र, एसोसिएट प्रोफेसर , संस्कृत संकाय, इग्नू , नई दिल्ली	3,4
प्रो. कुलदीप शर्मा, प्रोफेसर, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, जम्मू	5
प्रो.रमाकान्त पाण्डेय, प्रोफेसर, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली	6,7,8,9
डॉ. अर्पिता त्रिपाठी, भूतपूर्व परामर्शदाता संस्कृत संकाय, इग्नू , नई दिल्ली	10
प्रो. रंजन कुमार त्रिपाठी, प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	11,12,13,14
डॉ. देशराज, असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, कालिंदी महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	15,16,17,18

पाठ्यक्रम सम्पादक

डॉ. पुष्पा
एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत संकाय
इग्नू , नई दिल्ली

कार्यक्रम व पाठ्यक्रम संयोजक

डॉ. पुष्पा
एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत संकाय
इग्नू , नई दिल्ली

आवरण : सुश्री अरविंद चावला, ए. डी. ए. ग्राफिक्स ,नई दिल्ली

सामग्री निर्माण

श्री तिलक राज
सहायक कुलसचिव
सा. नि. एवं वि. प्र.
इग्नू, नई दिल्ली

जुलाई, 2022

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2022

ISBN-

सर्वाधिकार सुरक्षित, इस कार्य का कोई भी अंश इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है। मानविकी विद्यापीठ एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के बारे में विश्वविद्यालय कार्यालय मैदान गढ़ी नई दिल्ली से अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की आर से कुलसचिव, सामग्री निर्माण एवं वितरण प्रभाग, इग्नू द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

लेजर टाइप सेटिंग : टेसा मीडिया एण्ड कंप्यूटर, C-206, A.F.Enclave-II, नई दिल्ली

मुद्रक :

पाठ्यक्रम परिचय

BSKC-103 “लौकिक संस्कृत गद्य साहित्य” पाठ्यक्रम में अधिगमकर्त्ताओं को चार खण्डों में विभाजित 18 इकाइयों का अध्ययन करना है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम के प्रथम खण्ड “लौकिक संस्कृत गद्य साहित्य का इतिहास के अन्तर्गत आप लौकिक संस्कृत गद्य साहित्य का परिचय, प्रमुख गद्यकार भाग-1 में सुबंधु, बाणभट्ट, दण्डी के के विषय में अध्ययन करेंगे। प्रमुख गद्यकार भाग-2 में अम्बिकादत्तव्यास, विश्वेश्वर पाण्डे, हृषिकेश भट्टाचार्य और अन्य गद्यकारों के विषय में जानेंगे। पंचतंत्र, हितोपदेश, बेताल पंचविंशति, सिंहासनद्वात्रिंशिका, पुरुष परीक्षा, शुक सप्तति इत्यादि के अध्ययन से नीति और लोककथाओं द्वारा नैतिक, व्यवहारिक ज्ञान के क्षेत्र में असीम वृद्धि होगी।

पाठ्यक्रम का दूसरा खण्ड शुकनासोपदेश है। इस खण्ड में महाकवि बाणभट्ट द्वारा रचित कादम्बरी नामक कथाग्रन्थ से आप शुकनासोपदेश के कुछ महत्वपूर्ण अनुच्छेदों का अध्ययन करेंगे। जिसमें अधिगमकर्त्ता लक्ष्मी का स्वभाव और विशेषताओं से परिचित होंगे। आपको लक्ष्मी से मदमस्त राजाओं की विभिन्न दशाओं का अध्ययन करने का अवसर प्राप्त होगा।

प्रस्तुत पाठ्यक्रम के तृतीय खण्ड शिवराजविजयः (प्रथमो निःश्वासः) के अन्तर्गत प.अम्बिकादत्त व्यास विरचित उपन्यास के कुछ अंश को जान सकेंगे। आपको शिवराजविजयः के प्रथम निःश्वासः में तत्कालीन भारत की दशा को जानने का अवसर मिलेगा।

प्रस्तुत पाठ्यक्रम के चतुर्थ खण्ड विश्रुतचरितं (1-15 परिच्छेद तक) में दस कुमारों की आप बीती का अध्ययन करेंगे

महाकवि दण्डी की कृति दशकुमारचरित एक अद्वितीय रचना है। आप विश्रुतचरितं का परिचय, महाकवि दण्डी की भाषा शैली, विश्रुतचरितं (1-15 परिच्छेद तक) का अध्ययन करेंगे।

इस प्रकार चार खण्डों तथा 18 इकाइयों में विभाजित यह पाठ्यक्रम आपकी ज्ञानपरिधि के विस्तार हेतु उपयोगी सिद्ध होगा। सभी इकाइयों में इकाई से सम्बन्धित काठिन्य निवारण हेतु ‘शब्दावली’ दी गई है, जिसके माध्यम से आप कठिन शब्दों के अर्थ जानकर अपने भाषिक कौशल में विस्तार कर सकेंगे। आपने इकाई द्वारा क्या ग्रहण किया ? इसका निर्धारण आप बोध प्रश्नों जिनके उत्तर उसी इकाई के अन्त में दिए गए हैं और अभ्यास प्रश्नों के माध्यम से जान सकेंगे, जिससे अध्ययनकर्त्ताओं को सकारात्मक पुनर्बल अथवा प्रतिपुष्टि की प्राप्ति भी होगी। परिणामस्वरूप अध्येता पूरे उत्साह के साथ आगे अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित होंगे। इकाई के अन्त में उपयोगी पुस्तकों की सूची भी दी गई है, जिससे आप इन पुस्तकों का अध्ययन कर सम्बन्धित विषय में अधिक ज्ञान की प्राप्ति कर सकेंगे। हमें ऐसी आशा है कि हमारे अध्येताओं के लिए यह प्रस्तुत पाठ्यक्रम रुचिकर व ज्ञानवर्धक होगा।

शुभकामनाओं के साथ

सम्पूर्ण पाठ्यक्रम की पाठ्यसामग्री निम्न प्रकार से प्रस्तुत की गई है –

लौकिक संस्कृत गद्य साहित्य का इतिहास	04 इकाइयाँ
शुकनासोपदेशः	05 इकाइयाँ
शिवराजविजयः	05 इकाइयाँ
विश्रुतचरितम्	04 इकाइयाँ
कुल	18 इकाइयाँ



ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

विषय सूची

पृष्ठ सं.

खण्ड 1	लौकिक संस्कृत गद्य साहित्य का इतिहास	7
इकाई 1	लौकिक संस्कृत गद्य साहित्य का परिचय	9
इकाई 2	प्रमुख गद्यकार भाग—1 सुबंधु, बाणभट्ट, दण्डी	23
इकाई 3	प्रमुख गद्यकार भाग—2 अम्बिकादत्तव्यास, विश्वेश्वर पाण्डे, हर्षिकेश भट्टाचार्य और अन्य	39
इकाई 4	नीति और लोककथाएँ (पंचतंत्र, हितोपदेश, वेतालपंचविंशति, सिंहासनद्वित्रिंशिका, पुरुषपरीक्षा, शुकसप्तति)	53
खण्ड 2	शुकनासोपदेशः	63
इकाई 5	शुकनासोपदेश परिचय	65
इकाई 6	शुकनासोपदेश (लक्ष्मीदोष वर्णन) भाग—1	79
इकाई 7	शुकनासोपदेश (लक्ष्मीदोष वर्णन) भाग—2	89
इकाई 8	शुकनासोपदेश (राजाओं की विभिन्न दशाओं का निरूपण) भाग—1	98
इकाई 9	शुकनासोपदेश (राजाओं की विभिन्न दशाओं का निरूपण) भाग—2	109
खण्ड 3	शिवराजविजयः (प्रथमो निःश्वासः)	123
इकाई 10	शिवराजविजय परिचय	125
इकाई 11	शिवराजविजय (प्रथम निःश्वास) अनुच्छेद 1—14	141
इकाई 12	शिवराजविजय (प्रथम निःश्वास) अनुच्छेद 15—20	158
इकाई 13	शिवराजविजय (प्रथम निःश्वास) अनुच्छेद 21—29	167
इकाई 14	शिवराजविजय (प्रथम निःश्वास) अनुच्छेद 30—36	178
खण्ड 4	विश्रुतचरितं (1—15 परिच्छेद तक)	187
इकाई 15	विश्रुतचरितं परिचय (कथावस्तु, पात्रचित्रण, वैशिष्ट्य आदि)	191
इकाई 16	महाकवि दण्डी की भाषा शैली (दण्डिनः पदलालित्यम्, कविर्दण्डी कविर्दण्डी न संशय)	207
इकाई 17	विश्रुतचरितं (1—10 परिच्छेद तक) अनुवाद, व्याख्या और व्याकरण	214
इकाई 18	विश्रुतचरितं (11—15) अनुवाद, व्याख्या और व्याकरण	240

खण्ड

1

लौकिक संस्कृत गद्य साहित्य का इतिहास

इकाई 1

लौकिक संस्कृत गद्य साहित्य का परिचय

9

इकाई 2

प्रमुख गद्यकार भाग -1 सुबंघु, बाणभट्ट, दण्डी

23

इकाई 3

प्रमुख गद्यकार भाग-2 अम्बिकादत्तव्यास, विश्वेश्वर पाण्डे, हृषिकेश
भट्टाचार्य और अन्य

39

इकाई 4

नीति और लोककथाएँ (पंचतंत्र, हितोपदेश, वेतालपंचविंशति,
सिंहासनद्वात्रिंशिका, पुरुषपरीक्षा, शुकसप्तति)

53

इकाई 1 लौकिक संस्कृत गद्य साहित्य का परिचय

इकाई की रूपरेखा

- 1.0 उद्देश्य
- 1.1 प्रस्तावना
- 1.2 गद्यकाव्य की परंपरा
- 1.3 संस्कृत गद्य काव्य की विशेषताएँ
- 1.4 गद्य के विविध रूप—
- 1.5 कथा और आख्यायिका में मौलिक अंतर
- 1.6 गद्य साहित्य के प्रमुख गद्यकार
- 1.7 सारांश
- 1.8 शब्दावली
- 1.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें
- 1.10 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने से आप :

- संस्कृत लौकिक गद्य के उद्भव और विकास से परिचित होंगे।
- गद्य के विविध रूपों का अध्ययन कर सकेंगे।
- लौकिक गद्य की विशेषताओं से भलीभाँति परिचित हो सकेंगे।
- प्रमुख लौकिक संस्कृत गद्य साहित्य से परिचित होंगे।
- लौकिक संस्कृत गद्य साहित्य का परिचय प्राप्त कर अपने शब्दों में व्यक्त करने में समर्थ होंगे।

1.1 प्रस्तावना

सहितयोः भाव साहित्यम अर्थात् **सहित शब्द और अर्थ का भाव** इन दोनों शब्दों के मेल से ही साहित्य शब्द की व्युत्पत्ति हुई है। संस्कृत साहित्य का इतिहास अनेक काल विभागों में बाँटा जा सकता है। पहला काल **श्रुतिकाल** जिसमें संहिता ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् का निर्माण हुआ। इसी काल में वाक्य रचना सरल संक्षिप्त और क्रिया बहुल होती थी। दूसरा **स्मृतिकाल** जिसमें रामायण, महाभारत, पुराण और वेदाङ्गों की रचना हुई।

तीसरा काल वह है जिस समय **पाणिनी के नियमों** के द्वारा भाषा नितांत संयत और सुव्यवस्थित की गई व काव्य नाटकों की रचना होने लगी। इसी काल को मोटे तौर पर **लौकिक संस्कृत का काल** कहा जाता है। वैदिक साहित्य के अनंतर लौकिक संस्कृत के निबद्ध साहित्य का उदय होता है। लौकिक संस्कृत में लिखा गया साहित्य विषय, भाषा, भाव आदि की दृष्टि से अपना विशिष्ट महत्व रखता है। वैदिक

साहित्य मुख्यतः धर्म प्रधान साहित्य है। देवताओं को लक्ष्य कर यज्ञ- याग का विचार और उनकी कमनीय स्तुतियाँ हैं। स्तुतियाँ इस साहित्य की विशेषताएँ हैं। इसके विपरीत लौकिक संस्कृत साहित्य जिसका प्रसार प्रत्येक दिशा में दिखाई देता है मुख्यतः लोक प्रधान है। पुरुषार्थ के चारों अंगों में अर्थ, काम की ओर इसमें प्रवृत्ति अधिक दिखाई देती है। उपनिषदों के प्रभाव से इस साहित्य में नैतिक भावना का भी महान साम्राज्य है।

यद्यपि संस्कृत साहित्य का प्राचीनतम रूप छन्दोबद्ध रूप में ही प्राप्त होता है परंतु यह स्वीकार करने में कठिनाई का अनुभव होता है कि हमारे ऋषियों ने ऋग्वेद काल में अपने विचारों के आदान प्रदान में पद्यों का ही केवल प्रयोग किया होगा जैसा की हम सभी जानते हैं कि पद्य का संबंध भावना से होता है जबकि गद्य का संबंध विचार से होता है। गद्य की शैली विचारों की समवाहिका है, जिसके माध्यम से बौद्धिक ज्ञान को वाणी का मूर्त रूप देने में इसका प्रयोग प्रायः किया जाता है। विचार गद्यात्मक ही होते हैं, पद्यात्मक नहीं। संस्कृत में गद्य का प्रयोग वैदिककाल से होता रहा है। ऋग्वेद संहिता संस्कृत पद्य एवं गद्य दोनों का प्राचीनतम आधार है, कृष्ण यजुर्वेद की कृष्णता गद्य की अधिकता के कारण ही प्रसिद्ध है। अथर्ववेद का षष्ठांश गद्यात्मक है, ब्राह्मण ग्रंथों तथा अन्य ग्रंथों में भी गद्य का प्रचुर मात्रा में प्रयोग मिलता है। इसके अतिरिक्त उपनिषदों में भी गद्य का प्रयोग हुआ है। वैदिक साहित्य में गद्य का प्रयोग आख्यानो में भी देखने को मिलता है अतः यह सिद्ध है कि संपूर्ण वैदिक वाङ्मय में पद्य के साथ गद्य का प्रयोग प्राप्त होता है। **आचार्य बलदेव उपाध्याय के अनुसार** “वैदिक काल से प्रारंभ कर मध्यकाल तक गद्य के विकसित होने का इतिहास अत्यंत ही मनोरम है। गद्य के दो रूप मिलते हैं। वैदिक काल का सीधा-सीधा बोलचाल का गद्य और लौकिक संस्कृत का प्रौढ़ समास बहुल गाढबंधन वाला गद्य दोनों प्रकार के गद्यों में अपना विशिष्ट सौंदर्य तथा आकर्षण है”।

19वीं शताब्दी के पूर्व रचित संस्कृत साहित्य में गद्य काव्य के दो प्रकार विशेष रूप से प्रचलित रहे कथा और आख्यायिका/आधुनिक काल में यूरोपीय भाषाओं तथा आधुनिक भारतीय भाषाओं के साहित्य के साथ संपर्क से उपन्यास और कथानिका आधारित कहानी गद्य की इन दो कथा प्रधान विधाओं का संस्कृत साहित्य में विकास हुआ। उपन्यास संस्कृत में गद्य काव्य की कथा नामक विधा से अत्यंत ही साम्यता रखता है। आचार्यों द्वारा बताए गए जो कथा के लक्षण हैं उनमें से कुछ ही आधुनिक उपन्यासों पर घटित होते हैं। अतः उपन्यास आज की यांत्रिकी और औद्योगिक सभ्यता की ही देन कहे जा सकते हैं। यदि हम देखें तो आज के साहित्य में महाकाव्य का स्थान उपन्यासों ने ले लिया है इसलिए इसे मानव जीवन का गद्यात्मक महाकाव्य भी कहा जाता है। यह कहानी की अपेक्षा आकार और कथानक के प्रसार में विशाल होता है इसमें सभी घटनाएँ एक सूत्र में जुड़ी रहती हैं और जीवन के समग्र और यथार्थ रूप को इसमें प्रस्तुत किया जाता है यथा- समाज, इतिहास, संस्कृति का व्यापक अध्ययन इसमें प्राप्त होता है।

1.2 गद्यकाव्य की परंपरा

संस्कृत में गद्य का प्रयोग वैदिक काल से होता आया है। कृष्ण यजुर्वेद, ब्राह्मण तथा उपनिषद् अधिकांश गद्य में ही रचित हैं। महाभारत में भी गद्य का प्रयोग दृष्टिगोचर होता है। यॉस्क के निरुक्त, पतंजलि का महाभाष्य भी गद्य में ही रचित हैं।

गद्य ही कवियों की कसौटी है अतः गद्य के माध्यम से ही कवियों की श्रेष्ठता का आकलन किया जाता है। काव्यगत वर्णन की दृष्टि से यदि देखा जाए तो पद्य की अपेक्षा गद्य का स्थान गौण है और गद्य का प्रयोग कथा, आख्यायिका और अल्प रूप में नाटक में भी देखने को मिलता है।

संस्कृत गद्य काव्य की उत्पत्ति के संबंध में निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि इस का उद्भव कब, कैसे और किस प्रकार से हुआ? सर्वप्रथम गद्य का दर्शन दण्डी, सुबन्धु और बाण की कृतियों में ही होता है और वह वहाँ अत्यंत ही विकसित रूप में विराजमान है। उनसे पूर्व के लेखकों और रचनाओं का इतिहास अंधकार की गर्त में धूमिल है परंतु हम इस बात को तो निश्चित तौर पर कह सकते हैं कि गद्य काव्य भी संस्कृत साहित्य की एक प्राचीन शाखा है।

कुछ उपलब्ध शिलालेखों से गद्य काव्य का प्रचार और प्रसार स्पष्ट रूप से लक्षित होता है जैसे रुद्रदामन के शिलालेख 150 ईस्वी एवं गुप्तकालीन शिलालेख 400 ईस्वी में अलंकृत शैली का प्रयोग हमें उसमें देखने को मिलता है। इन प्रमाणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि गद्य काव्य की कला का प्रचार दण्डी, सुबन्धु और बाणभट्ट से कई शताब्दी पूर्व में हो गया होगा किंतु इन श्रेष्ठ गद्यकारों की अद्भुत और अलौकिक कृतियों के प्रभाव ने अपने पूर्ववर्ती लेखकों के प्रभाव को कम कर दिया। अतः तब तो यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि दण्डी, सुबन्धु और बाणभट्ट गद्य काव्य के विकास काल के ऊँचे शिखर पर विराजमान सर्वोत्कृष्ट लेखक हैं।

1.3 संस्कृत गद्य काव्य की विशेषताएँ

संसार में प्रत्येक वस्तु की अपनी कुछ मूलभूत पहचान होती है, वही उसकी विशेषताओं के रूप में स्वीकार्य होती है। इसी प्रकार संस्कृत गद्य काव्य के कथानक प्रायः लोक कथाओं से लिए जाते हैं। लोक कथाओं के समान कथाओं में अन्य कथाओं का समावेश भी होता है। वह भी गद्य काव्य में हमें देखने को मिलता है गद्य का विशिष्ट एवं संभ्रांत वर्ग के लिए रचित होने के कारण उत्कृष्ट एवं अलंकृत भाषा से संबंधित, उत्कृष्ट वर्णन शैली, दीर्घकाय समास अनुप्रास, श्लेष, प्रकृति-चित्रण, नायक-नायिका की शारीरिक व मानसिक दशाओं का अत्यंत ही सुंदर वर्णन भी गद्य काव्य का अंग होते हैं। श्रृंगार रस ही इनका मुख्यता प्रधान रस है। संस्कृत के गद्यकाव्य इस बात की भी पुष्टि करते हैं कि कविता के लिए छंद की अनिवार्यता नहीं होती है इसलिए गद्य और पद्य दोनों में ही समान रूप से कविता की रचना की जा सकती है इसीलिए संस्कृत गद्य काव्य सहृदयों के मन में वास्तविक काव्यानंद का संचार करते हैं। संस्कृत जैसी अलंकृत उत्कृष्ट एवं परिष्कृत गद्य शैली का विकास शायद ही संसार की किसी अन्य भाषाओं में देखने को मिलता हो।

वर्णन करने वाले को कवि और कवि के कर्म को काव्य की संज्ञा दी जाती है। कवते श्लोकान् ग्रथते, वर्णयति वा कविः, कवेः भावः काव्यम्। इसी प्रकार विश्वनाथ वाक्यं रसात्मकं काव्यम् अर्थात् रसात्मक वाक्य को ही काव्य के रूप में ग्रहण करते हैं। जैसा कि हम सब जानते हैं दृश्य और श्रव्य भेद से काव्य के दो प्रकार होते हैं। दृश्य काव्य को ही रूपक कहा जाता है। यह नाटक, प्रकरण भाण, व्यायोग, समवकार, डिम्, ईहामृग, अडक, वीथी, प्रहसन के भेद से 10 प्रकार का होता है इन्हीं 10 रूपक के 18 उपभेद होते हैं।

श्रव्य काव्य के भी पद्य, गद्य और उभय (पद्यगद्य) यह तीन भेद होते हैं पद्य काव्य के 7 भेद हैं – महाकाव्य, खण्डकाव्य, कुलक, कलापक, संदानितक, युग्मक और मुक्तक कविराज विश्वनाथ का कहना है कि वृत्त की गंध से रहित गद्य चार प्रकार का होता है—

1. **मुक्तक** – मुक्तक गद्य समास रहित होता है ।
2. **वृत्तगन्धि**— वृत्तगन्धि में पद्य के अंश होते हैं
3. **उत्कालिकाप्राय**—उत्कालिका प्राय में दीर्घ समास पाए जाते हैं ।
4. **चूर्णक**—चूर्णक में छोटे-छोटे समास होते हैं ।

गद्य काव्य के दो भेद आख्यायिका और कथा स्वीकार किए जाते हैं । अमरकोशकार का कहना है कि कथा कल्पना जन्य होती है और आख्यायिका ऐतिहासिक कथानक पर आधारित होती है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है वह समाज में रहता है। समाज में अपने विचारों के आदान-प्रदान के लिए उसे भाषा की आवश्यकता होती है। इसी भाषा के दो रूप गद्य और पद्य स्वीकार किए जाते हैं। गद्य में व्यक्ति अपने भावों को अत्यंत ही सरल रूप में स्पष्ट तरीके से व्यक्त कर पाता है क्योंकि गद्य में छन्द, गण, लय, मात्रा, चरण इत्यादि का कोई बंधन नहीं रहता है। गद्य काव्य में ही कथा और आख्यायिका भी सम्मिलित होती हैं । संस्कृत भाषा में गद्य साहित्य का अपना अलग ही विशिष्ट स्थान है। गद्य का सर्वप्रथम प्रयोग विधा के रूप में संस्कृत में ही पाया जाता है। संस्कृत गद्य कि अपनी सर्वप्रमुख विशेषता यह है कि अत्यंत ही सीमित शब्दों में मनोभावों को व्यक्त किया जा सकता है जबकि अन्य भाषाओं में किसी बात को कहने के लिए लंबे वाक्य की आवश्यकता होती है। मैक्समूलर ने विश्व की लाइब्रेरी की प्रथम पुस्तक वेद को माना है और यजुर्वेद संहिता में गद्य का पहली बार प्रयोग दिखाई देता है । इसी प्रकार का काठक, मैत्रायणी आदि संहिता में भी अथर्ववेद के पूरे छोटे भाग में, ब्राह्मण ग्रंथ में और याज्ञिक क्रियाओं में गद्य का प्रयोग आसानी और सटीक रूप से किया जा सकता है और यह इस बात का भी प्रमाण है कि वैदिक काल में गद्य का उद्भव हो गया था।

1.4 गद्य के विविध रूप

जिस प्रकार पद्य की विविध विधाएँ हैं, उसी प्रकार से गद्य की भी अनेकों विधाएँ हैं । गद्य के विविध रूप हैं जैसे—

वैदिक गद्य — वैदिक गद्य की संरचना पर वैदिक भाषा का प्रभाव है वैदिक गद्य सीधा —साधा बोलचाल का गद्य था , जिसमें लंबे-लंबे समास और अलंकारों का अधिक प्रयोग नहीं होता था अपितु छोटे-छोटे वाक्य सरल एवं सुबोध रूप में प्रस्तुत किए जाते थे । वैदिक गद्य के भी दो रूप हैं —एक अनुष्ठान उपयोगी तथा यज्ञ विधियों का प्रतिपादक और दूसरा ऊहापोह को व्यक्त करने वाला । इस प्रकार के गद्य यजुर्वेद, ब्राह्मण ग्रंथों और उपनिषदों में मिलते हैं । इनका प्रयोग वाक्य में रोचकता और सुंदरता के लिए किया जाता था । इस गद्य में उपमा एवं रूपक अलंकार का स्वाभाविक प्रयोग भी किया जाता था उदाहरण के लिए ऐतरेय ब्राह्मण के हरिश्चन्द्रोपाख्यान का निम्न गद्यांश दृष्टव्य है —

“हरीश्चंद्रो है वैधस ऐक्ष्वाको राजाऽपुत्र आस । तस्य ह शतं जाया बभूवुः । तासु पुत्रं न लेभे । तस्य ह पर्वतनारदौ गृह उषतुः । स ह नारदं प्रपच्छ ।।” (ऐतरेय ब्राह्मण अ. 30 खण्ड 1)

पौराणिक गद्य— पुराणों में वैदिक और लौकिक संस्कृत के गद्य का मिश्रित रूप

दिखाई देता है। पौराणिक गद्य वैदिक गद्य की तुलना में अधिक अलंकारिक व प्रसादिक हैं। श्रीमद्भागवत व विष्णु पुराण के गद्य में निसंदेह साहित्य गद्य का समग्र सौंदर्य विद्यमान है। विष्णु पुराण का निम्नलिखित गद्यांश उदाहरण के लिए प्रस्तुत है—

“यथैव व्योम्नि वहिन्पिण्डोपमं त्वमहमपश्यं तथैवाद्याग्रतो गतमप्यत्र भगवता किञ्चिन् प्रसादीकृतम्। विशेषमुपलक्षयामीत्युक्ते भगवता सूर्येण निजकण्ठा दुन्मुच्यस्यमन्तकं नाम महामणिवरमवतार्य एकान्ते न्यस्तम्।।” विष्णुपुराण 4/13/14

शास्त्रीय गद्य — अलंकार शास्त्र संबंधी ग्रंथों में भी गद्य का प्रयोग हुआ है इसमें लेखक का ध्यान अपने प्रतिपाद्य के प्रकटीकरण पर हुआ है, भाषा के अलंकरण पर नहीं। इस प्रकार के गद्य में भाषा का लालित्य कम अपितु भावों की गंभीरता अधिक पाई जाती है। शास्त्रीय गद्य का रूप व्याकरण शास्त्र, दर्शन शास्त्र, काव्यशास्त्र आदि ग्रंथों में दिखाई देता है। सूत्रात्मकता और साररूप में चिंतन को व्यक्त करने का कौशल इस गद्य की विशेषता है पूर्वपक्ष और उत्तरपक्ष को प्रस्तुत करने की विशेष प्रकार की शैली इसमें विकसित हुई। शास्त्रीय गद्य का प्रथम उदाहरण पतंजलि के महाभाष्य में प्राप्त होता है और यौस्क के निरुक्त, कौटिल्य के अर्थशास्त्र इसके स्वरूप को प्रकट करते हैं।

साहित्यिक गद्य — का चतुर्थ भेद साहित्य गद्य के रूप में जाना जाता है इसके उदाहरण प्राचीन शिलालेखों और नाटकों में प्रयुक्त होने वाले संवादों में दिखाई देते हैं। इनमें भी केवल तथ्य को व्यक्त किया गया है सामान्य रूप से बातें कही गई हैं। इसमें वह सूचना एवं काव्य दृष्टिगोचर नहीं होता जो स्वतंत्र रूप से विकसित गद्य में दिखाई देता है। उदाहरण के लिए भास विरचित मध्यम व्यायोग रूपक का निम्न गद्यांश प्रस्तुत है—

“हन्त दृढ विज्ञातुम्। एष खलु पाण्डव मध्यमस्यात्मजो हिडिम्बारणि संभूतो राक्षसाग्निकृतवैरं ब्राह्मणजनं वित्रासयति। भो कष्टम्।।”

परन्तु वर्तमान समय में जिसे गद्य साहित्य कहा जाता है उसका प्रथम प्रौढ रूप सुबन्धु विरचित वासवदत्ता ग्रन्थ में प्राप्त होता है। उसके उपरान्त दण्डी, बाणभट्ट, अम्बिकादत्त व्यास आदि द्वारा अपनी कृतियों के माध्यम से इसे उच्चतम शिखर तक पहुँचा दिया।

वार्तालाप की शैली का संवाद उपयोगी गद्य— उपनिषदों के गद्य में भी अनेक स्थानों पर वार्तालाप और संवाद की शैली दिखाई देती है। किस प्रकार गुरु अपने शिष्यों से वार्तालाप करते थे? उसे उपनिषदों में अनेक स्थानों पर उसी प्रकार से संग्रहित किया गया है जो आगे चलकर नीति कथा और लोक कथाओं से प्रेरित कथा रूपों में इस प्रकार के गद्यों का प्रयोग प्रायः मिलता है। इसी का एक रूप पौराणिक गद्य है, जिसके प्राचीनतम उदाहरण महाभारत में मिलते हैं।

उपर्युक्त सभी प्रकार के गद्यों का सरल व सौंदर्य से युक्त रूप काव्यात्मक गद्य के रूप में सामने आया और गद्य काव्य की विधाएँ उस से विकसित हुई। आगे चलकर आचार्यों ने गद्य काव्य की दो विधाओं का निरूपण किया वह है —कथा और आख्यायिका।

1.5 कथा और आख्यायिका में मौलिक अंतर

गद्य साहित्य के मुख्यतः दो भेद किए गए हैं— कथा और आख्यायिका आचार्य दण्डी ने अपने काव्यदर्श में इन दोनों विधाओं के मौलिक अन्तर पर विचार किये हैं और इन

दोनों में निम्न अंतर स्वीकार किए हैं यथा—

- कथा कवि कल्पित होती है जबकि आख्यायिका ऐतिहासिक इतिवृत्त पर अवलंबित होती है।
- कथा में वक्ता स्वयं नायक अथवा अन्य कोई होता है जबकि आख्यायिका में नायक स्वयं ही वक्ता होता है। आख्यायिका को आत्मकथा भी कहा जाता है
- आख्यायिका उच्छवासों में विभक्त होती है और उसमें वक्त्र और अपरवक्त्र छन्द के पद्यों का समावेश रहता है परंतु कथा में ऐसा नहीं होता है।
- कथा वर्णनात्मक होती है जिसमें कन्याहरण, संग्राम, विप्रलम्भ, सूर्योदय, चंद्रोदय, संध्या, रात्रि आदि का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है परंतु आख्यायिका में ऐसे वर्णन को महत्व प्राप्त नहीं होता है।
- कथा में कुछ विशिष्ट सांकेतिक शब्दों का प्रयोग होता है जबकि आख्यायिका में ऐसे शब्द प्रयुक्त नहीं किए जाते हैं। आख्यायिका प्रायः भावात्मक शैली में लिखी जाती है।

1.6 गद्य साहित्य के प्रमुख गद्यकार

गद्य काव्य को समृद्ध बनाने में तीन सर्वोत्कृष्ट गद्यकार हैं — आचार्य दण्डी, सुबन्धु और बाणभट्ट कुछ विद्वान दण्डी को प्रथम गद्यकार स्वीकार करते हैं जबकि अन्य विद्वान सुबन्धुको। आचार्य बलदेव उपाध्याय, डॉ. भोलाशंकर व्यास और डॉ. वचनदेव कुमार आदि विद्वानों ने सुबन्धु को गद्य काव्य का सर्वप्रथम लेखक स्वीकार किया है। इसके विपरीत डॉ. बाबूराम त्रिपाठी, पाण्डेय और व्यास ने दण्डी को प्रथम लेखक माना है।

प्रमुख गद्यकाव्यों का परिचय—

प्रस्तुत इकाई में हम छात्रों के लिए संस्कृत साहित्य के प्रतिष्ठित और सुप्रसिद्ध गद्यकवियों के गद्यकाव्यों का संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत करेंगे—

सुबन्धु : वासवदत्ता—सुबन्धु विरचित एकमात्र उपलब्ध कृति वासवदत्ता है। डॉ. पी.वी. काणे ने कादम्बरी ग्रन्थ की भूमिका में बाण और सुबन्धु के संबंध में अनेक प्रकार की मीमांसा की है और सुबन्धु को बाण से पूर्ववर्ती बताया है। आचार्य बलदेव उपाध्याय ने इन्हें गद्य काव्य का सर्वप्रथम लेखक कहा है। हर्षचरित में बाण ने सुबन्धु की प्रशंसा की है और जो सुबन्धु को बाण से पूर्ववर्ती होने का प्रमाण प्रस्तुत करता है। गुणादय की बृहत्कथा पर आधारित कथानक को आधार बनाकर सुबन्धु ने वासवदत्ता की रचना की। इस कृति का संस्कृत के काव्यों में महत्वपूर्ण स्थान है। इसमें कन्दर्पकेतु और वासवदत्ता की कथा निबद्ध है। ग्रन्थ का प्रारंभ सरस्वती वन्दना से होता है, इसके बाद दो पद्यों में श्रीकृष्ण की स्तुति तथा एक पद में भगवान शिव की स्तुति की गई है। सज्जन प्रशंसा, दर्जनों की निंदा आदि के पश्चात कवि ने स्वरचित **प्रत्यक्षर श्लेषमय** कृति वासवदत्ता का उल्लेख किया है।

कथा का प्रारम्भ चिंतामणि नामक राजा के वर्णन से शुरू होता है। चिंतामणि नामक राजा के कन्दर्पकेतु नामक सुन्दर पुत्र है। वह स्वप्न में एक सुन्दर कन्या को देखता है और उसके रूप पर मुग्ध होकर अपने मित्र मकरन्द के साथ उस सुन्दरी को खोजने के लिए निकल पड़ता है। खोजते-खोजते वह विंध्याटवी पहुँच जाते हैं वहाँ एक जामुन के वृक्ष के नीचे रात्रि को विश्राम करते समय उन दोनों को शुक और सारिका का संवाद कानों में पड़ता है। संवाद से उन्हें पता चलता है कि पाटलिपुत्र की राजकुमारी ने सपने में कन्दर्पकेतु को देखा है। कन्दर्पकेतु को खोजने के लिए उसकी सारिका तमालिका घूम रही है। बाद में सारिका के प्रयास से कन्दर्पकेतु और

राजकुमारी का मिलन होता है। वासवदत्ता एवं कन्दर्पकेतु दोनों के हृदय में एक दूसरे के प्रति दृढ आसक्ति है परंतु वासवदत्ता के पिता श्रृंगारशेखर उसका विवाह किसी विद्याधर से करवाना चाहते हैं। व्यवधान के कारण और कन्दर्पकेतु और वासवदत्ता एक जादुई घोड़े पर बैठ कर भाग जाते हैं। एक बार वासवदत्ता घूमते- घूमते विंध्याटवीं में स्थित एक ऋषि के आश्रम में पहुँच जाती है। ऋषि क्रोधित होकर उसे शाप देते हैं, जिसके प्रभाव से वह शिला बन जाती है उधर दूसरी ओर कन्दर्पकेतु वासवदत्ता को ना पाकर व्याकुल हो जाता है, वह उसके वियोग में आत्महत्या कर लेना चाहता है परंतु आकाशवाणी उसे ऐसा करने से रोकती है। वह बहुत खोजने पर वासवदत्ता की शिला उसे मिलती है और उसके स्पर्श से वह पुनः राजकुमारी के रूप में परिवर्तित हो जाती है। पुनर्मिलन होने पर वे दोनों सुखपूर्वक कन्दर्पकेतु की राजधानी में रहने लगते हैं। इस प्रकार इस कथा का सुखद अन्त होता है।

काव्य सौष्टव और भाषा शैली—

किसी भी कवि का काव्य वस्तुतः अपने युग का प्रतिनिधित्व करता है। अतः उसके काव्य की समीक्षा उसी परिप्रेक्ष्य में करना उचित रहता है इस दृष्टि से यदि हम सुबन्धु के काव्य की समीक्षा करें तो सुबन्धु की अलंकृत शैली उनके युग की उन सब विशेषताओं को अपने में अंतर्निहित किए हुए हैं। जिसे कुन्तक ने विचित्र मार्ग कहकर उल्लेख किया है इस अलंकृत शैली का व्यवहारिक रूप दण्डी में देखा जा सकता है और इसका प्रौढतम रूप सुबन्धु और बाण की रचनाओं में हमें दृष्टिगोचर होता है। सुबन्धु अपने काव्य में भाव पक्ष एवं कला पक्ष का सुंदर सामंजस्य प्रस्तुत करते हैं। हरिदत्त शास्त्री के शब्दों में “सुबन्धु के बुद्धि तत्व को शैली शिल्प ने अत्यधिक आवृत कर लिया है। रागात्मक तत्व का भी विधिवत निर्वाह नहीं हो पाया है। कवि की चित्तवृत्ति हमें पात्रों के हर्ष, विषाद आदि भावों के चित्रण में लीन होती इतनी दिखाई नहीं देती कि जितनी की शाब्दी क्रीडा में। वासवदत्ता के रचयिता सुबन्धु नाना विधाओं मीमांसा, न्याय, बौद्ध इत्यादि दर्शनों में प्रवीण थे। उनकी शैली में उनके पाण्डित्य की स्पष्ट छाप मिलती है। उनकी गद्य शैली अतिशयोक्ति, अनुप्रास समास प्रधान गौड़ी शैली का अनूठा उदाहरण है। वह कोमल पदों की रचना करने में भी सर्वथा समर्थ हैं। सुबन्धु ने अपने काव्य में प्रकृति को भी स्थान प्रदान किया है। उनके प्रकृति वर्णन में संध्या वर्णन, वर्षा वर्णन, प्रभात वर्णन, विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं इसलिए अतिशयोक्ति, उपमा आदि के प्रयोग के द्वारा सुबन्धु ने वर्णनों में विशिष्ट चमत्कार को भी उत्पन्न किया है। कुन्तक के द्वारा वर्णित विचित्र मार्ग का सबसे सुन्दर उदाहरण सुबन्धुकी यह कृति वासवदत्ता ही है।

दण्डी : दशकुमारचरित

गद्य साहित्य परंपरा में आचार्य दण्डी का अत्यंत ही सम्माननीय स्थान है। महाकवि दण्डी के संबंध में **कविर्दण्डी कविर्दण्डी कविर्दण्डी न संशयः** यह उक्ति उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व, पाण्डित्य एवं कवित्व को घोषित करती है। दण्डी विरचित **दशकुमारचरित** संस्कृत साहित्य की गौरवमयी गद्य काव्यत्रयी में अपने आख्यानो की रोमांचकता और कौतूहल से परिपूर्ण होने के कारण महत्वपूर्ण स्थान रखता है। गद्य कवि दण्डी द्वारा रचित **दशकुमारचरित** रोमांचक आख्यान वाला एक गद्य काव्य है यह तीन खण्डों में विभाजित है। 1. पूर्व पीठिका 2. दशकुमारचरित 3. उत्तर पीठिका। दशकुमारचरितजिसमें 14 उच्छ्वास हैं। पूर्व पीठिका में 5 उच्छ्वास हैं, दशकुमारचरित में 8 और उत्तरपीठिका में एक उच्छ्वास है। पूर्वपीठिका के 5 उच्छ्वास में अवन्तिसुन्दरी की कथावस्तु वर्णित की गई है। मध्यभाग के 8 उच्छ्वासों में आठ राजकुमारों का चरित्र वर्णन प्राप्त होता है। इस काव्य में कवि ने 10 राजकुमारों के अपने-अपने पर्यटन के विचित्र अनुभव और पराक्रम का मनोरंजक वर्णन उनकी ही मुख से सरल गद्य में निबद्ध किया है।

दशकुमारचरित गद्य काव्य का कथानक छल कपट पूर्ण कृत्यों, चमत्कारिक एवं अलौकिक घटनाओं से परिपूर्ण है। यही कारण है कि इसे **धूर्ता का रोमांस** भी कहा जाता है। छल— कपट, मारकाट, चोरी, ठगी से ओतप्रोत यह सजीव कृति है। व्यंग्य एवं विनोद का पुट देकर इसमें तत्कालीन समाज का अत्यंत ही सजीव चित्रण प्रस्तुत किया गया है। इस काव्य में कपटी ब्राह्मण, दंभी तपस्वी, व्यभिचारी स्त्रियों एवं हृदयहीन स्त्रियों का चरित्र उभर कर सामने आया है। इसमें अलौकिक एवं अलौकिक घटनाओं का बाहुल्य भी दृष्टिगोचर होता है।

मगध के राजा राजहंस मालव नरेश से पराजित होकर वन में चले जाते हैं वहाँ उनकी रानी राजकुमार राजवाहन को जन्म देती है। इसी समय सम्राट राजहंस के चार मंत्रियों को भी एक— एक पुत्र की प्राप्ति होती है। आगे चलकर अन्य पाँच राजकुमार भी वन में राजा राजहंस के पास लाए जाते हैं और इस तरह यह सभी 10 कुमारों का पालन पोषण तथा प्रशिक्षण एक साथ किया जाता है। व्यस्क होने पर राजवाहन अपने साथियों के साथ दिग्विजय के लिए प्रस्थान करते हैं भाग्य के बल से यह सभी अलग—अलग दिशाओं में जाते हैं और दैव योग से इनका पुनः मिलन होता है और यह सभी अपने साथ बीती घटनाओं को सुनाते हैं। इन्हीं आपबीती घटनाओं का वर्णन इस दशकुमारचरित का वर्ण्य विषय है।

काव्य सौष्टव और भाषा शैली—

दशकुमारचरित में जहाँ कथानक विचित्र हैं, वहीं उनके अनुरूप वर्णन शैली भी सरस एवं प्रभाव से युक्त है। दण्डी वस्तुतः यथार्थवादी थे उनके यथार्थवादी दृष्टिकोण का प्रभाव उनके काव्य में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होकर होता है। जैसे पात्र चयन और चरित्र—चित्रण पर इसका प्रभाव देखा जा सकता है। उनके सभी पात्र सजीव और वास्तविक प्रतीत होते हैं। समाज के उच्च और निम्न वर्ग का जीता जागता चित्र अपने काव्य में प्रस्तुत करते हैं। इन कथाओं में हम न केवल राजाओं और राजकुमारों को पाते हैं अपितु ब्राह्मण, भिक्षुओं, वेश्याओं तथा सुन्दर राजकुमारियों के विभिन्न प्रसंग भी कथाओं में रखे गए हैं। कथानक अनुरूप पात्र चयन भी किया गया है। अनुकूल पात्रों का चयन करके लेखक ने स्वाभाविकता बनाए रखने का प्रयास किया है। पात्रों की संख्या अधिक होने के कारण चरित्रों का भली प्रकार से विकास दशकुमारचरित में नहीं देखने को मिलता है परंतु इसके लिए हम लेखक को दोषी नहीं बना सकते वस्तुतः लघु कथाओं में पात्रों के चरित्रों का विश्लेषण करने का अवकाश लेखक के पास नहीं होता। विभिन्न घटनाओं का कौतूहल वर्णन करना ही दण्डी का भी उद्देश्य रहा है। दशकुमारचरित में दण्डी की रचना कौशल भी दर्शनीय है। कथा की रोचकता में अभिवृद्धि करने के लिए दण्डी कहीं शिष्ट हास्य, कहीं मधुर व्यंग्य और कहीं गंभीर वर्णन का आश्रय लेते हैं। कहीं वर्णन विस्तार है तो कहीं लघु कथाएँ। कथाओं का क्रम प्रशंसनीय है। वर्णन प्रवाह दीर्घ विषयों से आक्रांत नहीं होता है मुख्य कथा के स्रोत में आवान्तर कथाएँ अवरोध उत्पन्न नहीं करती हैं। विशद चरित्र चित्रण, नैसर्गिक शैली, बुद्धि विलास, शिष्ट परिहास, विषयान्तरों की न्यूनता, रसानुकूल शब्द विन्यास यथार्थ और आदर्श का सुंदर सामंजस्य इत्यादि यह सभी विशेषताएँ दशकुमारचरित को संस्कृत गद्य साहित्य में विशिष्ट गौरवमयी स्थान प्रदान करती हैं। दण्डी की रचनाएँ मुख्य रूप से वैदर्भी शैली में लिखी गई हैं। उनकी विशेषता उनके साहित्य गौरव की अभिवृद्धि करती है तभी कहा जाता है —**दण्डिनः पद लालित्यम्** दण्डी वैदर्भी रीति के आचार्य माने जाते हैं पदों की न्यूनता तथा व्यंजन वर्णों का प्रयोग दण्डी की गद्य शैली की प्रमुख विशेषता है। बाणभट्ट की भाँति न दण्डी के गद्य में समासों की अनावश्यक भरमार दिखाई देती है और न ही उसे सुबंधु के गद्य के समान श्लेष से आक्रांत करके अस्वाभाविक बनाया गया है। छोटे—छोटे वाक्यों का प्रयोग कर प्रभाव उत्पन्न करने में सफल होते हैं। दण्डी समस्त पदावली का प्रयोग किसी वस्तु का

वर्णन करने के लिए ही करते हैं, जिससे उस वस्तु का अत्यंत ही सजीव चित्र पाठकों के समक्ष उपस्थित हो जाता है। प्राचीन भारतीय आलोचकों ने दण्डी की मनोरम पद-शय्या की प्रशंसा मुक्त कण्ठ से की है कि वह शब्द और अर्थ पर पूर्ण अधिकार रखते हैं। उपयुक्त शब्दों की मीनाकारी के द्वारा ही दण्डी ऐसी आकर्षक लघु वाक्यमाला तैयार करते हैं, जो अपनी अभिव्यक्ति चारुता एवं सरलता से अनोखी है। यह अपनी योजना के द्वारा वर्ण्य विषय के एक-एक शब्द चित्र को जीवंत बना देते हैं, उनके पदलालित्य में अनुप्रास की योजना भी सहायक बनती है। दशकुमारचरित दण्डी की शैलीगत विशेषताओं को प्रतिबिम्बित करने वाला दर्पण है।

बाणभट्ट : कादम्बरी

संस्कृत गद्य साहित्य में महाकवि बाणभट्ट का सर्वोच्च स्थान है। महाकवि बाणभट्ट की ही कृति कादम्बरी संस्कृत साहित्य का सर्वश्रेष्ठ गद्य काव्य स्वीकार की जाती है। यह कथा श्रेणी का काव्य है यह कथा तीन जन्म-जन्मांतर में चलने वाला प्रेमाख्यान है। इसकी कथाएँ आपस में जुड़ी हुई हैं। इसका नायक प्रथम जन्म में चंद्रमा, दूसरे जन्म में चन्द्रपीड और तीसरे जन्म में शूद्रक बना है। कादम्बरी दो खण्डों में विभाजित है पूर्वार्ध और उत्तरार्ध। पूर्वार्ध संपूर्ण ग्रंथ के दो तिहाई भाग में फैला है जिसे स्वयं बाणभट्ट ने लिखा था उत्तरार्ध को बाणभट्ट की मृत्यु के पश्चात उनके पुत्र पुलिन्दभट्ट ने पूरा किया था। महाकवि बाणभट्ट ने कादम्बरी का प्रारंभ 20 पद्यों की एक प्रस्तावना के उपरांत किया है। इन 20 पद्यों में देव स्तुति, गुरु वंदना, दुर्जन निंदा आदि का वर्णन करके अंत में उन्होंने अपने वंशक्रम का भी उल्लेख किया है। कथा का प्रारंभ राजा शूद्रक के वर्णन से किया है शूद्रक के यहाँ चाण्डाल कन्या वैशम्पायन नामक शुक को लेकर पहुँचती है। शुक सभा में अपना वृत्तान्त सुनाता है तथा यह भी बताता है कि वह किस प्रकार से जाबालि के आश्रम में पहुँचा और अपने पूर्व जन्म की सभी बातों को उसने किस प्रकार जाना? शूद्रक कौन था? चाण्डाल कन्या कौन थी? इत्यादि सभी प्रश्नों का समाधान वहाँ हो जाता है। इस विस्तृत वर्णन में तीन-तीन जन्मों की घटनाएँ आपस में जुड़ी हैं। राजा शूद्रक ही पहले जन्म में चन्द्रा पीड था और उसे ही पूर्व जन्म में श्वेतकेतु पुत्र पुण्डरीक तथा महाश्वेता कथा कादम्बरी का एक जन्म का एक ही वृत्तान्त है। महाश्वेता की कथा तो कादम्बरी के प्रेम की भूमिका मात्र है। इसकी प्रधान नायिका कादम्बरी है जैसा की नाम से स्पष्ट है इस ग्रंथ का नामकरण हुआ है। वस्तुतः कादम्बरी के पात्र गन्धर्वलोक, चन्द्रलोक और मानवलोक की जीवन विभूतियाँ परस्पर एक दूसरे पर प्रेम और समर्पण के लिए दृढ़ संकल्पित हैं। कादम्बरी की कथाओं का मुख्य तत्व प्रेम ही है। इस प्रेम तत्व का विकास बाणभट्ट ने मनोवैज्ञानिक शैली द्वारा ही प्रस्तुत किया है। कादम्बरी की कथा थोड़ी जटिल होते हुए भी प्रभावकारी और आकर्षण का केंद्र है। कौतूहल के कारण पाठक और श्रोताओं की रुचि लगातार बनी रहती है। संपूर्ण कथा के उत्तरोत्तर बढ़ते हुए रहस्य का उद्घाटन कथा के अंत में होता है।

कादम्बरी के कथामुख में एक चाण्डाल कन्या विदिशा नरेश शूद्रक की राज्यसभा में आकर एक बोलने वाला तोता भेंट करती है। इसमें शूद्रक कौशिक अपने जीवन का वृत्तान्त सुनाता है। पूर्वभाग में शुक कथा सुनाता है कि तारापीड एवं विलासवती को तपस्या से चन्द्रापीड नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। शुकनास के वैशम्पायन नामक पुत्र हुआ चन्द्रापीड को राज्याभिषेक के समय उनके वृद्ध मंत्री शुकनास ने उपदेश दिया। युवराज चन्द्रापीड के दिग्विजय पर जाने के मार्ग में उनकी महाश्वेता से भेंट होती है। महाश्वेता उन्हें बताती है— “उनका प्रेमी पुण्डरीक उनकी अभिलाषा में कामपीडा से मृत्यु का भागी हो गया”, वहाँ महाश्वेता चन्द्रापीड को कादम्बरी से मिलवाती है। चन्द्रापीड राजकार्य से लौटता है किंतु वैशम्पायन को सेना के साथ वही छोड़ आता है। बहुत दिनों तक न लौटने पर चन्द्रापीड उसे खोजने वापस वहीं आता है।

महाश्वेता से पूछने पर उसे पता चलता है कि वैशम्पायन महाश्वेता पर आसक्त हो गया था। अतः महाश्वेता ने उसे सुख हो जाने का शाप दे दिया है। मित्र के वियोग से दुःखी होकर चन्द्रापीड भी मर जाता है, तभी कादम्बरी वहाँ जाती है, वह भी मरने को तत्पर हो जाती है। उसी समय आकाशवाणी होती है, जो महाश्वेता और कादम्बरी दोनों को विश्वास दिलाती है कि तुम दोनों का मिलन अपने- अपने प्रियतम से अवश्य ही होगा इसलिए मरने के विषय में मत सोचो। इसी के साथ छोटे-छोटे प्रसंगों से कथा समाप्त होती है।

काव्य सौष्टव और भाषा शैली—

कादम्बरी संस्कृत गद्य साहित्य की महत्वपूर्ण मणि है —कादम्बरी। सचमुच कादम्बरी मतीरा है जिसने इसके रस का अखंड पाठ किया उसे उत्तम से उत्तम आहार भी किसी भी प्रकार अपनी ओर आकर्षित नहीं कर पाएगा कादम्बरी भारतीय विचारधारा की अनेक विशेषताओं को अपने अंदर समाहित किए हुए हैं। कादम्बरी में इस लोक के पात्रों के साथ देवीय पात्रों की संगति दिखाई गई है वह किसी विदेशी पाठक को भले ही उचित प्रतीत न हो किंतु यह बात भारतीय दृष्टिकोण से सर्वथा सामंजस्य से रखती है। मनुष्यों के अनेक योनियों में जन्म लेने की मान्यता भी इसी प्रकार है। कादम्बरी में न केवल कथावस्तु का विन्यास अच्छी तरह से किया गया है अपितु पात्रों का चयन और उनका चित्रण भी भलीभाँति हुआ है। कादम्बरी के पात्र ऐतिहासिक न होकर बाण की अपनी स्वयं की कल्पना द्वारा कल्पित हैं। कादम्बरी में समाज के विभिन्न वर्गों से पात्रों का चुनाव कहीं किया है। राजा, सेवक, ब्राह्मण, प्रेमी, प्रेमिका, तपस्वी इत्यादि के सजीव चित्र कादम्बरी में बाणभट्ट ने अपनी लेखनी से प्रस्तुत किए हैं। बाणभट्ट मानव प्रकृति एवं बाहरी प्रकृति के ज्ञाता थे। उन्होंने दोनों का ही हृदयस्पर्शी

स्वाभाविक चित्रण किया है। गद्य तत्कालीन गद्य शैलियों के समन्वित रूप को दर्शाता है। बाण की कृति में भाव पक्ष और कला पक्ष दोनों का सम्यक् रूप से प्रयोग किया गया है। 'नूतन एवं चमत्कारपूर्ण अर्थ, सुरुचिपूर्ण स्वभावोक्ति, सरल श्लेष, स्पष्ट रूप से प्रतीत होने वाला रस तथा अक्षरों की दृढ़ बन्धता — यह सभी विशेषताएँ किसी काव्य में एक साथ प्राप्त होना कठिन है। 'बाण के गद्य में यह सभी गुण एक स्थान पर ही प्राप्त होते हैं। बाण पांचाली गद्यरीति के आचार्य हैं, जिसमें अर्थ के अनुरूप शब्दों की योजना होती है। वस्तुतः बाहर बाणभट्ट ने विषयों के अनुरूप शैली का भी प्रयोग किया है कभी सुंदर परंपरा अनुसार वर्णन करने के लिए जहाँ उन्होंने कोमल कान्त पदावली का प्रयोग किया है, वहीं उन्होंने विध्याटवी, चण्डिका, शबर सेनापति आदि के भयानक रूपों का वर्णन करने के लिए कठोर शब्दों की योजना भी की है। अतः इसीलिए भारतीय समीक्षकों ने बाणभट्ट की शैली की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है।

हर्षचरित

हर्षचरित भी बाणभट्ट विरचित ग्रंथ है। यह बाणभट्ट की प्रथम रचना है। आठवें उच्छ्वास में उपलब्ध हर्षचरित एक आख्यायिका है। 8 उच्छ्वासों के इस ग्रंथ में प्रथम तीन उच्छ्वास में बाण की आत्मकथा है। तृतीय उच्छ्वास के कतिपय अंशों और शेष पाँच उच्छ्वासों में बाण के आश्रयदाता राजा हर्ष का जीवनचरित है। इसके अतिरिक्त हर्ष के आदि वंशज पुष्पभूती का चरित, प्रभाकरवर्धन का जीवन, हर्ष के बड़े भाई राज्यवर्धन और उनकी छोटी बहन राज्यश्री की भी जीवन कथा इसमें वर्णित है। हर्ष के दिग्विजय की कथा सुरुचिपूर्ण शैली में वर्णित की गई है।

राजा प्रभाकरवर्धन और रानी यशोमती के दो पुत्र और एक पुत्री थी। राज्यवर्धन और हर्षवर्धन तथा पुत्री राज्यश्री। हर्षवर्धन और राज्यवर्धन शत्रुओं का नाश करने के लिए जाते हैं परंतु पिता की अस्वस्थता की सूचना मिलते ही हर्षवर्धन मार्ग से ही लौट आते हैं। राजा प्रभाकरवर्धन की मृत्यु हो जाती है, मृत्यु से पूर्व रानी यशोमती अग्नि में

प्रविष्ट होकर जल जाती है। राज्यवर्धन विजय प्राप्त कर लौटते हैं और राज्य का भार हर्षवर्धन को सौंप देते हैं। इसी समय राज्यश्री के मालवराज द्वारा बंदी बना लिए जाने पर उनके पति ग्रहवर्मा के मारे जाने का समाचार प्राप्त होने पर राज्यवर्धन मालवराज को मारने के लिए जाते हैं। मालवराज को भी मार देते हैं परंतु वह गौडनरेश के छल से मार दिए जाते हैं। राज्यवर्धन की मृत्यु के उपरांत क्रोधित होकर हर्षवर्धन पृथ्वी को गौड विहीन करने की प्रतिज्ञा लेते हैं। राज्यश्री के सपरिवार अग्निदाह का समाचार बौद्ध संन्यासी दिवाकर मिश्र हर्षवर्धन को बताते हैं। हर्षवर्धन उसे बचा लेते हैं। हर्ष अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करने के लिए प्रस्थान करते हैं। संन्यासी से कहते हैं मेरे लौट कर आने तक राज्यश्री का ध्यान रखना, फिर मैं भी कषाय वस्त्र धारण कर लूँगा। इस प्रकार हर्षचरित संध्या वर्णन के साथ समाप्त हो जाता है।

शिवराज विजय—

आधुनिक संस्कृत गद्यकारों में पंडित अंबिकादत्त व्यास का अत्यंत ही महत्वपूर्ण स्थान है। पंडित अंबिकादत्त व्यास के द्वारा लिखित शिवराजविजय 19वीं शताब्दी का सबसे सुंदर गद्यकाव्य है। व्यास ने संस्कृत एवं हिंदी में कुल मिलाकर 48 रचनाएँ निबद्ध की हैं परंतु उनकी प्रसिद्धि का मूल आधार शिवराज विजय ही है। छत्रपति शिवाजी के जीवन पर आधारित यह अत्यंत ही महत्वपूर्ण रचना है शिवराज विजय का कथानक दो धाराओं को लगातार चला रहा है एक ओर महाराष्ट्र के अधिश्चर वीर शिवाजी और दूसरी ओर नायक रघुवीर सिंह यह दोनों धाराएँ एक दूसरे की पूरक बनकर किसी प्रकार अन्योन्याश्रित होकर साथ-साथ प्रवाहित होती रहती हैं।

काव्य सौष्ठव और भाषा शैली—

शिवराज विजय के कथानक को तीन विरामों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक विराम चार निःश्वासाँ में विभक्त है। पांचाली रीति में निबद्ध शिवराज विजय में अंबिकादत्त व्यास ने कहीं समास बहुल पदावली का सहारा लिया है, तो कहीं सरल और लघु पदावली के द्वारा भी काव्य में प्रभाव उत्पन्न किया है। शिवराज विजय देश प्रेम, जाति प्रेम, धर्म प्रेम, का अत्यंत ही उत्तम आदर्श प्रस्तुत करता है। इस उपन्यास का प्रधान रस वीर है किंतु आश्रमों के वर्णन में शांत रस या वनों के भोजन, वस्त्र आदि के वर्णन में शांत रस की निष्पत्ति हुई है आपकी भाषा शैली रोचक है जिसमें माधुर्य, प्रसाद, और ओज रूपी तीनों गुणों तथा वैदर्भी, गौड़ी और पांचाली तीनों ही नीतियों को समुचित रूप से प्रयोग किया गया है। श्रृंगार और वीर रसों के चित्रण में भाषा अपने-अपने रस के अनुकूल कहीं सरस कहीं मधुर और कहीं-कहीं ओजस्वी भी हो गई है। इनकी शैली की विशेषता में स्वाभाविकता है और किसी भी पात्र का जब यह वर्णन करते हैं तो मानो हमारी आँखों के समक्ष उसका चित्र अंकित हो जाता है। शिवराज विजय में अलंकारों का प्रयोग भी समुचित रूप से किया गया है। इसमें विशेष प्रिय अलंकार उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा और विरोधाभास हैं। अलंकारों को स्वाभाविक और रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है भारत रत्न डॉक्टर भगवान दास ने शिवराज विजय की प्रशंसा में कहा है कि शिवराज विजय की भाषा उत्तम, ओजस्विनी, अर्थपूर्ण और सुबोध है। वीर रस का अर्वाचीन साहित्य में प्रभाव है, इस ग्रंथ में प्रधान श्रृंगार भी है। कवि ने सर्वथा सात्विक कोमल प्रीति रूप में कहीं भी अश्लीलता नहीं आने दी है। इसका विषय ऐतिहासिक है अधिकांश वास्तविक है, कपोल कल्पित नहीं है और देशभक्ति जन्म भक्ति प्रजा की राजभक्ति दोनों की धर्मभक्ति और राष्ट्रीय भाव से भरा है जिन भावों का अर्वाचीन संस्कृत ग्रंथों में सर्वथा अभाव है।

पंडित अंबिका दत्त व्यास की उपर्युक्त विशेषताओं उनकी वर्णन चातुर्य और भाषा शैली को देखकर समीक्षकों ने उन्हें अभिनव बाण की उपाधि से विभूषित किया है।

अन्य गद्य काव्य

सुबन्धु, बाण, दण्डी जैसे प्रथम शृंखला के महाकवियों के महत्वपूर्ण गद्य काव्य के अध्ययन के उपरांत आप अन्य महत्वपूर्ण गद्य काव्य के विषय में भी सामान्य रूप से अध्ययन करेंगे जो निम्नवत हैं—

मंदार मंजरी पंडित विश्वेश्वर पाण्डे का समय 18वीं शताब्दी माना जाता है। इन्होंने मंदार मंजरी नामक गद्य काव्य की रचना की बाणभट्ट की कादंबरी के समान इस काव्य का पूर्व भाग पांडे जी द्वारा रचित है और उत्तरभाग उनके शिष्य ने लिखकर उसे पूर्ण किया है। इस काव्य का कथानक कल्पित है इसमें उसूपुर के राजा राजशेखर और रानी मलयवती के पुत्र चित्रभानु तथा विद्याधर चंद्रकेतु एवं चंद्रलेखा की पुत्री मंदारमंजरी के आकर्षण और विवाह का सुंदर चित्रण कवि ने किया है। इनकी कृति को देखकर यह प्रतीत होता है कि इन्होंने बाणभट्ट की शैली का ही अनुकरण किया है भाषा सरस, सरल एवं माधुर्य गुण युक्त है।

गद्यचिंतामणि वादीभसिंह के द्वारा विरचित गद्य काव्य गद्यचिंतामणि अत्यंत ही अलंकृत शैली में लिखा हुआ रोचक काव्य है। इस गद्य काव्य में उन्होंने जिनसेन के महापुराण में वर्णित जीवन भर की कथा का वर्णन किया है। महाराज जीवन्धर के जीवन पर आधारित गद्यचिंतामणि 11 लम्बकों में रचित है अलंकारिक रचना गद्यचिंतामणि एक आख्यायिका है इसका उपजीव्य गुणभद्रकृत उत्तरपुराण है।

तिलकमंजरी उज्जयिनी निवासी सर्वदेव के पुत्र धनपाल राजा मुंजराज के सभा कवि थे। उनकी रचना तिलकमंजरी उच्च कोटि का गद्य काव्य है। कादम्बरी की शैली में वर्णित तिलकमंजरी और समरकेतु की प्रेम कथा इसका वर्ण्य विषय है। कादम्बरी के समान कठिन गुम्फन तथा श्लेष प्रदर्शन इस काव्य में नहीं है अपितु धनपाल की शैली सुगम होने से पूर्ववर्ती गद्यकार इसे बाण, दण्डी और सुबन्धु से भी श्रेष्ठ गद्यकार के रूप में स्वीकार करते हैं।

प्रबंधचिंतामणि चंद्रप्रभु मुनि के शिष्य मेरुतुङ्गाचार्य की रचना प्रबंधचिंतामणि एक ऐतिहासिक कृति है। यह रचना 11 प्रबंधों में निबद्ध है। प्रबंधचिंतामणि में प्रसिद्ध ऐतिहासिक महान विभूतियों जैसे विद्वानों कवियों आचार्यों के जीवन से संबंधित घटनाओं का वर्णन मिलता है।

प्रबंधकोश राजशेखर सूरि को गद्यकारों की श्रेणी में अग्रणी रखा जाता है। इनका यह प्रबंध कोश जिसे चतुर्विंशतिप्रबंध भी कहा जाता है क्योंकि इसमें 24 महापुरुषों के जीवन को वर्णित किया गया है।

वेमभूपालचरितम् वेमभूपाल की राज्यसभा में रहते हुए वामन भट्टबाण ने वेमभूपाल चरितम् नामक आख्यायिका की रचना की। इन्होंने वेमभूपाल का इसमें वर्णन किया है, उनका यशोगान किया है। इन्होंने इसके अतिरिक्त अन्य ग्रंथ भी लिखे हैं।

कुछ उपलब्ध शिलालेखों से गद्य काव्य का प्रचार और प्रसार स्पष्ट रूप से लक्षित होता है जैसे रुद्रदामन के शिलालेख 150 ईस्वी एवं गुप्तकालीन शिलालेख 400 ईसवी में अलंकृत शैली का प्रयोग हमें उसमें देखने को मिलता है। इन प्रमाणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि गद्यकाव्य की कला का प्रचार दण्डी, सुबन्धु और बाणभट्ट से कई शताब्दी पूर्व में हो गया होगा किंतु इन श्रेष्ठ गद्यकारों की अद्भुत और अलौकिक कृतियों के प्रभाव से अपने पूर्ववर्ती लेखकों के प्रभाव को कम कर दिया। अतः तब तो यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि दण्डी, सुबन्धु और बाणभट्ट गद्य काव्य के विकास काल के ऊँचे शिखर पर विराजमान सर्वोत्कृष्ट लेखक हैं।

बोध/अभ्यास प्रश्न

बोध प्रश्न –1

मिलान कीजिए—

कवि

रचना

क. सुबन्धु

1. कादम्बरी

ख. बाणभट्ट

2. वासवदत्ता

ग. अम्बिकादत्त व्यास

3. दशकुमारचरित

घ. दण्डी

4. शिवराजविजय

बोध प्रश्न –2

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

क. कवीनां निकषं वदन्ति

ख. वासवदत्ता गुणादय की पर आधारित कृति है।

ग. हर्षचरित में उच्छवास है।

घ. कथा और आख्यायिका के भेद है।

अभ्यास प्रश्न –

लौकिक संस्कृत गद्य की विशेषताओं को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।

1.7 सारांश

प्रस्तुत इकाई 'लौकिक संस्कृत गद्य साहित्य का परिचय' में आपने गद्य साहित्य की विशेषताओं और विकास यात्रा का अध्ययन किया। आपने अध्ययन के माध्यम से यह जाना कि वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत से किस प्रकार भिन्न है। प्रस्तुत इकाई में संस्कृत गद्यकाव्यों से आपका परिचय हुआ, आपने उनकी विशेषताओं को जाना, उनकी कृतियों के विषय में भी अध्ययन किया। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप उपरोक्त सभी बातों से परिचित हो गए होंगे। आगे की इकाइयों में आप लौकिक संस्कृत गद्य साहित्य का विस्तार पूर्वक अध्ययन करेंगे।

1.8 शब्दावली

वृत्त – छंद

काव्य शास्त्रीय ग्रंथ – काव्य रचना के सिद्धांत संबंधित ग्रंथ

उपजीव्य – जहाँ से विषय लिया गया हो

उच्छवास – आख्यायिका के अंक विभाजन का नाम

प्रणय कथा – प्रेम कथा

1.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन, कस्तूरबा नगर, सिगरा, वाराणसी 2001
2. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास, पंचम खण्ड, आचार्य बलदेव उपाध्याय, उत्तर प्रदेश, संस्कृत संस्थान, लखनऊ 2003

3. संस्कृत साहित्य का इतिहास ,उमाशंकर शर्मा ऋषि ,जयकृष्ण दास कृष्णदास –प्राच्य विद्या ग्रंथ माला, चौखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी 2016
4. संस्कृत साहित्य का इतिहास, प्रीतिप्रभा गोयल ,जोधपुर
5. संस्कृत साहित्य की रूपरेखा, पाण्डे एवं व्यास, साहित्य निकेतन प्रकाशन, कानपुर
6. रामचंद्र मिश्र, संस्कृत साहित्य का इतिहास, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी 2010
7. रामविलास शर्मा ,संस्कृत साहित्य का समालोचनात्मक इतिहास, मोतीलाल बनारसीदास ,नई दिल्ली 1998
8. संस्कृत साहित्य का इतिहास,डॉ. विश्वनाथ शर्मा, आदर्श प्रकाशन
8. संस्कृत साहित्य का समग्र इतिहास,राधावल्लभ त्रिपाठी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी 2020

1.10 बोध /अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

क-2, ख-1, ग-4, घ-3

बोध प्रश्न -2

क. गद्य, ख. बृहत्कथा, ग. आठ, घ. गद्य

इकाई 2 प्रमुख गद्यकार भाग-1 सुबन्धु, बाण तथा दण्डी

इकाई की रूपरेखा

- 2.0 उद्देश्य
- 2.1 प्रस्तावना
- 2.2 सुबन्धु
 - 2.2.1 जीवन-वृत्त
 - 2.2.2 कर्तृत्व
 - 2.2.3 शैलीगत वैशिष्ट्य
- 2.3 बाणभट्ट
 - 2.3.1 जीवन-वृत्त
 - 2.3.2 कर्तृत्व
 - 2.3.3 शैलीगत वैशिष्ट्य
- 2.4 दण्डी
 - 2.4.1 जीवन-वृत्त
 - 2.4.2 कर्तृत्व
 - 2.4.3 शैलीगत वैशिष्ट्य
- 2.5 सारांश
- 2.6 शब्दावली
- 2.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें
- 2.8 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

2.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- गद्य-विधा के प्रमुख ग्रन्थों का सामान्य परिचय प्राप्त करेंगे।
- प्रमुख गद्यकार सुबन्धु, बाण तथा दण्डी के जीवन-वृत्त तथा उनकी कृतियों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।
- प्रमुख गद्यकार सुबन्धु, बाण तथा दण्डी के शैलीगत वैशिष्ट्य से परिचित होंगे।
- संस्कृत में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली एवं प्रमुख शब्दों एवं उनके अर्थों का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- गद्य में संस्कृत के अनेक ग्रन्थ हैं जो वर्तमान में भी प्रासंगिक हैं जिसका अध्ययन कर हमें लाभ अवश्य लेना चाहिए आपको इसकी भी प्रेरणा प्राप्त होगी।

2.1 प्रस्तावना

मानव की स्वाभाविक भाषा का रूप गद्यात्मक होता है। दण्डी ने काव्यादर्श में गद्य की परिभाषा दी है और उसके कथा तथा आख्यायिका दो भेद स्वीकार किए हैं। गद्य लेखन करना स्वयं में एक कठिन कार्य है, इसलिए आठवीं शताब्दी में यह उक्ति प्रचलित हुई कि गद्यकाव्य लिखना कवियों की कसौटी है— ‘गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति।’

प्रिय छात्रों! इस खण्ड की प्रथम इकाई में आपने गद्य-साहित्य के उद्भव और विकास के विषय में अध्ययन किया। इस इकाई के माध्यम से आप संस्कृत साहित्य के प्रमुख गद्यकारों सुबन्धु, बाण तथा दण्डी के व्यक्तित्व, कर्तृत्व एवं शैलीगत वैशिष्ट्य का अध्ययन करेंगे। संस्कृत साहित्य में बाण, सुबन्धु तथा दण्डी ने अपनी रचनाओं द्वारा गद्य-साहित्य को समृद्ध बनाया है। बाण विरचित कादम्बरी, सुबन्धु विरचित वासवदत्ता एवं दण्डी विरचित दशकुमारचरित गद्यरत्नत्रयी के अन्तर्गत परिगणित हैं। यहाँ आप इन्हीं गद्यकाव्यकारों का परिचय प्राप्त करेंगे।

2.2 सुबन्धु

संस्कृत गद्य-साहित्य में सुबन्धु का विशिष्ट स्थान है। उनकी एकमात्र उपलब्ध कृति वासवदत्ता है। प्रिय विद्यार्थियों! इकाई के इस खण्ड के द्वारा आप सुबन्धु के जीवन-वृत्त, कर्तृत्व और शैलीगत वैशिष्ट्य से परिचित होंगे।

2.2.1 जीवन-वृत्त

गद्यरत्नत्रयी (सुबन्धु, बाण और दण्डी) में सुबन्धु का समय, स्थान और वंश आदि का यथार्थ परिचय प्राप्त नहीं होता है। सुबन्धु के माता-पिता के बारे में कोई जानकारी प्राप्त नहीं होती है। उनकी शिक्षा-दीक्षा भी अज्ञात है। गद्यकाव्य के लेखकों में सुबन्धु ही सर्वप्रथम लेखक हैं जिनका ग्रन्थ वासवदत्ता अलंकृत शैली में निबद्ध गद्य का उत्कृष्ट उदाहरण है। सुबन्धु वेद, व्याकरण, पुराण, दर्शन, धर्मशास्त्र, रामायण, महाभारत, काव्यशास्त्र, कामशास्त्र, नीतिशास्त्र और संगीत आदि में निपुण थे।

श्लेषप्रधान शैली के कारण कुछ इन्हें कश्मीरी मानते हैं तो कुछ मध्यदेशीय स्वीकार करते हैं। बाणभट्ट के द्वारा प्रशंसित किये जाने के कारण ये बाण के पूर्ववर्ती सिद्ध होते हैं। इन्होंने एक श्लेष के द्वारा न्यायवार्तिक के रचयिता प्रसिद्ध नैयायिक उद्योगकर का स्पष्ट संकेत किया है—**न्यायस्थितिमिवोद्योतकरस्वरूपाम्**। उद्योतकर का समय छठीं शताब्दी का अन्त तथा सप्तम शताब्दी का आदि माना जाता है। इससे सुबन्धु का समय उद्योतकर के अनन्तर होना चाहिए।

हर्षवर्धन (606–48) के सभापण्डित होने से बाणभट्ट का समय (630–640 ई०) तक मानना उचित प्रतीत होता है। बाण से पूर्ववर्ती होने के कारण सुबन्धु का समय 600 ई० के आस-पास मानना उचित है।

सुबन्धु बाण के लिए प्रेरक और आदर्श थे इसलिए हर्षचरितम् में उनकी कृति की प्रशंसा करके कादम्बरी में उससे आगे निकल जाने की बात बाण ने की है। सुबन्धु की समन्वयवादी एवं धार्मिक भक्त के रूप में प्रतिष्ठा है।

2.2.2 कर्तृत्व

सुबन्धु का एक ही ग्रन्थ है जो वासवदत्ता के नाम से प्रसिद्ध है। 'वासवदत्ता' का कथानक पूर्णतः कल्पित है, इसका कोई विभाजन नहीं है अतः इसे कथा की श्रेणी में रखा जाता है।

इसमें राजकुमार कन्दर्पकेतु तथा राजकुमारी वासवदत्ता के प्रेम और विवाह का रोचक वृत्तान्त वर्णित है। नायक-नायिका एक दूसरे को स्वप्न में देखते हैं और परस्पर अनुरक्त हो जाते हैं। राजा चिन्तामणि का पुत्र राजकुमार कन्दर्पकेतु स्वप्न में एक बहुत ही सुन्दर राजकुमारी को देखता है और अपने मित्र मकरन्द के साथ उसकी खोज में निकल पड़ता

है। विन्ध्य की तलहटी में भ्रमण करते हुए एक वृक्ष के नीचे आराम करते हुए रात्रि में शुक-सारिका की वार्ता में राजकुमार और मित्र मकरन्द ने सुना कि पाटलिपुत्र की राजकुमारी ने राजकुमार कन्दर्पकेतु को स्वप्न में देखा है जिसकी खोज के लिए उसकी सारिका तमालिका निकली हुई है। इस तरह शुक-सारिका के सहयोग से नायक और नायिका का मिलन होता है। किन्तु वासवदत्ता का पिता शृंगारशेखर उसका विवाह पुष्पकेतु से करना चाहते हैं वे दोनों एक जादुई घोड़े से भाग जाते हैं और विन्ध्य पर्वत पर पहुँचते हैं। विन्ध्याटवी में पहुँचकर वासवदत्ता सोते हुए कन्दर्पकेतु को छोड़कर समीप ही घूमने के लिए निकल जाती है जहाँ उसके सौन्दर्य पर मोहित होकर उसे पाने के लिए किरातों के दो समूहों में परस्पर युद्ध होता है। युद्ध के समय किसी तरह छिपकर वासवदत्ता समीप के किसी ऋषि के आश्रम में चुपके से चली जाती है और अनुचित प्रवेश के कारण पाषाणशिला बन जाती है। उधर कन्दर्पकेतु जब अपनी नींद से जागता है तो वासवदत्ता को न पाकर आत्महत्या करने के लिए उद्यत होता है किन्तु तभी आकाशवाणी होती है कि तुम दोनों का पुनः मिलन होगा इसलिए वह आत्महत्या नहीं करता है। कुछ समय पश्चात् राजकुमार कन्दर्पकेतु के स्पर्श से पत्थर की शिलारूपी वासवदत्ता पुनः वासवदत्ता बन जाती है तथा दोनों का मिलन हो जाता है। अन्त में कन्दर्पकेतु वासवदत्ता के साथ स्वराजधानी चला जाता है और शेष जीवन सुखपूर्वक व्यतीत करते हैं। इसी के साथ कथा का अन्त हो जाता है।

2.2.3 शैलीगत वैशिष्ट्य

संस्कृत-गद्यकारों की बृहत्त्रयी में सुबन्धु का अद्वितीय स्थान है। उनकी रचना 'वासवदत्ता' में प्रौढ़ता परिलक्षित होती है। विद्वानों के लिए यह परीक्षा का ग्रन्थ है।

ओज, समास बहुलता, कठिन पद-विन्यास, पाण्डित्य-प्रदर्शन और श्रमसाध्यता, काव्यगौरव और प्रखर पाण्डित्य के लिए विख्यात सुबन्धु ने अपने कृतित्व में जिस शैली को अपनाया है वह श्लेषमयी गौडी रीति है जिसको कवि ने स्वयं ही स्वीकार करते हुए कहा है –

सरस्वतीदत्तवरप्रसादश्चक्रे सुबन्धुः सुजनैकबन्धुः।

प्रत्यक्षरश्लेषमयप्रबन्धविन्यासवैदग्ध्यनिधिर्निबन्धम् ॥ वास.13।

अर्थात् जिसके ऊपर सरस्वती देवी ने वरदान देकर अपना अनुग्रह प्रकट किया है, जो सुबन्धु एकमात्र सज्जनों के सुबन्धु हैं तथा जो प्रत्येक अक्षरों के श्लेषालङ्कार बहुल प्रबन्ध के विन्यास में विदग्धता के निधि हैं, उन्होंने ही वासवदत्ता नामक निबन्ध की रचना की है। शैलीगत वैशिष्ट्य के आधार पर 'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति' की कसौटी पर सुबन्धु की वासवदत्ता पूर्णतया खरी उतरती है।

सुबन्धु की वासवदत्ता में प्रकृति-वर्णन, स्त्री-सौन्दर्य, नगरीवर्णन, विस्तृत संवाद आदि का विस्तार से वर्णन किया गया है। जिसके कारण कवि का कला-पक्ष अत्यधिक विकसित और उजागर हो सका है, परन्तु उनका भाव-पक्ष कहीं दबा सा प्रतीत होता है। रस परिपाक और कथा-प्रवाह में भी न्यूनता दृष्टिगोचर होती है। अलंकारप्रियता, पौराणिक-कथा, विदग्धता और समास रसिकता का अधिक प्रदर्शन किया गया है। श्लेष, विरोधाभास और परिसंख्या आदि अलंकारों की बहुलता है। इनकी बहुलता कवि को रससिद्ध कवित्व की श्रेणी से दूर कर देती है। यही कारण है कि आनन्दवर्धनाचार्य की यह उक्ति सुबन्धु पर पूर्णतया घटती है कि कुछ कवि केवल अलंकार प्रयोग में ही अपनी योग्यता का प्रदर्शन करते हैं और रस परिपाक की सर्वथा उपेक्षा करते हैं। वे उत्तम काव्य में मुख्यतया श्लेषप्रयोग और वक्रोक्ति का समन्वय आवश्यक मानते हैं।

सुबन्धु ने पद-पद पर श्लेष-प्रयोग के महत्त्व पर गर्व करते हुए कहा है –

प्रत्यक्षरश्लेषमयप्रबन्धविन्यासवैदग्धनिधिर्निबन्धम् ॥ (वासवदत्ता भूमिका श्लोक 13)

सुबन्धु को उनकी शैली के कारण विद्वानों में बहुत सम्मान प्राप्त हुआ। सुबन्धु का श्लेष-प्रयोग अद्भुत एवं विलक्षण है। विरोधाभास, परिसंख्या, उत्प्रेक्षा आदि का प्रयोग कवि की नूतन दृष्टि एवं सूक्ष्म चिन्तन को परिलक्षित करता है। इनकी रचना में संगीतात्मकता, लयात्मकता है। विलिप्तपदावली और कोमल-कान्त पदावली का मिश्रण किया गया है। एक तरफ उलझाने वाले श्लेष प्रयोग हैं तो दूसरी ओर स्वभावोक्ति, उत्प्रेक्षा सहजता प्रदान करने वाले अलंकार भी हैं। कवि की भाषा पर सिद्धता है। कठिन के बाद सरल और सरल के बाद कठिन पदावली का प्रयोग काव्य को समता प्रदान करता है। ओज, प्रसाद और माधुर्य गुणों से युक्त यह काव्य अनुपम है। पाण्डित्य प्रदर्शन और सरस पदावली दोनों विरोधी गुणों का समन्वय होने के कारण वासवदत्ता में मणि-कांचन संयोग दृष्टिगोचर होता है।

बोध प्रश्न 1

- 1) निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तरों पर सही(✓) का चिह्न लगाइए –
 - i) वासवदत्ता गद्यकाव्य के लेखक सुबन्धु हैं – ()
 - ii) वासवदत्ता का कथानक ऐतिहासिक है – ()
 - iii) सुबन्धु पांचाली शैली के कवि हैं – ()
 - iv) वासवदत्ता नामक गद्यकाव्य के नायक कन्दर्पकेतु हैं – ()
- 2) निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए –
 - i) सुबन्धु की रचना है –

क) वासवदत्ता	ख) कादम्बरी
ग) हर्षचरितम्	घ) इनमें से कोई नहीं
 - ii) वासवदत्ता में नायक/नायिका हैं –

क) उदयन/ वासवदत्ता	ख) कन्दर्पकेतु/ वासवदत्ता
ग) उदयन/मालती	घ) दुष्यन्त/वासवदत्ता
 - iii) सुबन्धु का प्रिय अलंकार है –

क) श्लेष	ख) अनुप्रास
ग) यमक	घ) उपमा
- 3) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –
 - i) प्रत्यक्षर मय प्रबन्धविन्यासवैदग्धनिधिर्निबन्धम् ।
(श्लेष/उपमा)
 - ii) सुबन्धु की रीति है ।
(वैदर्भी/गौडी)
 - iii) राजकुमारी वासवदत्ता की सारिका का नाम था ।
(तमालिका/मालिका)

अभ्यास प्रश्न

- 1) सुबन्धु के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर टिप्पणी लिखिए।
- 2) सुबन्धु के शैलीगत वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिए।

2.3 बाणभट्ट

प्रिय विद्यार्थियों! अभी तक आपने सुबन्धु के व्यक्तित्व, कर्तृत्व और शैलीगत वैशिष्ट्य का अध्ययन किया। अब आप बाण के व्यक्तित्व, कर्तृत्व और शैलीगत वैशिष्ट्य का अध्ययन करेंगे।

2.3.1 जीवन-वृत्त

काव्य और नाटक के क्षेत्र में जो स्थान तथा कीर्ति कालिदास को प्राप्त है वही गद्यकाव्य के क्षेत्र में बाणभट्ट को प्राप्त है। बाण ने स्वयं हर्षचरित के आरम्भिक उच्छ्वासों में एवं कादम्बरी के मंगल पद्यों में अपना परिचय दिया है। उन्होंने अपने पूर्वजों का निवास स्थान प्रीतिकूट नामक नगर को बताया है। यह प्रीतिकूट नामक स्थान वर्तमान में बिहार का पश्चिमी भाग जो आज 'पीरू' गाँव के रूप में च्यवनाश्रम देवकुण्ड के निकट (बिहार जिले में औरंगाबाद) है। बाण के पूर्वज वात्स्यायन वंश के थे जिसमें कुबेर नामक व्यक्ति का जन्म हुआ। कुबेर के अच्युत, ईशान, हर, पाशुपत नामक चार पुत्र हुए। पाशुपत के पुत्र अर्थपति हुए। अर्थपति के पुत्रों में (भृगु, हंस, शुचि, कवि, महीदत्त, धर्म, जातवेदस्, चित्रभानु, त्र्यक्ष, अहिदत्त, विश्वरूप) आठवें पुत्र चित्रभानु थे जो बाण के पिता थे। बाण के पुत्र भूषण (उपनाम पुलिन्द) हुए जिन्होंने बाण की अपूर्ण गद्यकृति कादम्बरी को पूर्ण किया।

बाण का समय संस्कृत साहित्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण समय था। उस समय विद्वानों तथा कवियों की अच्छी संख्या थी। सूर्यशतक के रचयिता मयूर का भी आविर्भाव इसी समय हुआ था। बाण और मयूर दोनों हर्ष के आश्रयदाता कवि थे। हर्षवर्धन (606 से 648 ई.) के सभा पण्डित होने के कारण बाणभट्ट का समय सातवीं शताब्दी ई० पूर्वाब्द माना जाता है।

बाल्यावस्था में ही इनकी माता राजदेवी का स्वर्गवास हो गया था। चौदह वर्ष की अवस्था में इनके पिता का भी देहान्त हो गया। पिता की मृत्यु के बाद शोकसन्तप्त बाण कुछ समय पश्चात् देशाटन के लिए निकल पड़े। अपने साथियों के साथ घुमक्कड़ी जीवन व्यतीत करने लगे जिससे उनका उपहास होने लगा, परन्तु बाण ने इसकी परवाह नहीं की। राजा हर्ष ने इन्हें 'महानयं भुजंग' कहा। बाण ने उसका समाधान किया कि मेरा बचपन बाल्योचित धृष्टताओं से युक्त था। अब विवाह हो जाने के कारण मैं एक स्वच्छ आचरण वाला गृहस्थ हो गया हूँ।

2.3.2 कर्तृत्व

बाणभट्ट के ग्रन्थों में उनके द्वारा रचित दो ग्रन्थों को प्रमुख माना जाता है — 1. हर्षचरित (आख्यायिका), 2. कादम्बरी (कथा)। चण्डीशतक (दुर्गा की स्तुति का काव्य), मुकुटताडितकम् नाटक को भी कुछ विद्वान् इनकी कृति मानते हैं।

- 1) **हर्षचरित** — हर्षचरित अपनी महत्ता के कारण विद्वानों में बहुत समादृत है। ऐतिहासिक कथानक पर आश्रित गद्यकाव्यों में यह प्राचीनतम उपलब्ध आख्यायिका है, बाण ने

प्रारम्भ में ही कहा है— **करोम्याख्यायिकाम्मौद्यौ जिह्वाप्लवनचापलम्**। यह बाण की प्रथम रचना है। इसमें 8 उच्छ्वास हैं। प्रथम दो उच्छ्वासों में बाण ने अपने वंश का परिचय दिया है और अग्रिम 6 उच्छ्वासों में हर्ष के पूर्वजों का वर्णन किया है। इसमें हर्ष के जन्म से लेकर राज्यश्री से मिलने तक का विवरण है। बाण ने हर्षचरित के आरम्भ के 21 श्लोकों में मंगलाचरण तथा पूर्व कवियों एवं कृतियों की प्रशंसा करके महाराज हर्षवर्धन का जयकार किया है।

- 2) **कादम्बरी** — यह बाण की दूसरी कृति है जो अत्यधिक लोकप्रिय है। यह काल्पनिक कथा है। दुर्भाग्यवश अपनी इस कृति को बाण स्वयं पूर्ण नहीं कर सके। उनके पुत्र भूषणभट्ट (या पुलिनभट्ट) ने इसे पूरा किया। पुत्र ने पिता की शैली अपनाकर अधूरी कथा का सुन्दर उपसंहार किया। इसका कथानक बृहत्कथा पर आश्रित है जो कथासरित्सागर (59/22-178) तथा बृहत्कथामंजरी (16/183....)में निर्दिष्ट है।

कादम्बरी में चन्द्रापीड और वैशम्पायन के तीन जन्मों का वर्णन है। कथा के अन्त में प्रेमी अपनी प्रेमिकाओं से मिल जाते हैं। इनके तीन जन्मों का विवरण इस प्रकार है —

	चन्द्रापीड	वैशम्पायन	पत्रलेखा	इन्द्रायुध	चाण्डालकन्या
प्रथमजन्म	चन्द्रमा	पुण्डरीक	रोहिणी	कपिंजल	लक्ष्मी
द्वितीयजन्म	चन्द्रापीड	वैशम्पायन	पत्रलेखा	इन्द्रायुध	
तृतीयजन्म	शूद्रक	शुक		कपिंजल	चाण्डालकन्या

मूलकथा (आमुख) — विदिशा के राजा शूद्रक के दरबार में आकर एक चाण्डालकन्या एक अत्यन्त मेधावी, शास्त्रज्ञ और मनुष्य की वाणी बोलने वाला शुक राजा को समर्पित करती है। शुक आर्या छन्द में राजा की स्तुति करता है जिसे सुनकर राजा आश्चर्यचकित हो जाते हैं और उसके जन्मादि के बारे में पूछते हैं। शुक अपने जन्म के तुरन्त बाद विन्ध्याटवी में माता की मृत्यु, पिता के द्वारा लालन-पालन, शिकारियों द्वारा पिता का वध एवं जाबालि ऋषि के शिष्य हारीत के द्वारा जाबालि ऋषि के आश्रम में अपने आगमन का वर्णन करता है। इसके बाद जाबालि ऋषि ने शुक के पूर्वजन्म का वर्णन इस प्रकार किया।

पूर्वार्द्ध की कथा — उज्जयिनी के राजा तारापीड और रानी विलासवती को तपस्या से चन्द्रापीड नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। राजा के सुयोग्य मन्त्री शुकनास की पत्नी मनोरमा को भी इसी समय पुत्र हुआ जिसका नाम वैशम्पायन हुआ। दोनों में घनिष्ठ मित्रता थी। दोनों समस्त विद्याओं में निपुण हो गए। युवराज पद पर अभिषेक के समय मन्त्री शुकनास ने चन्द्रापीड को अत्यन्त सारगर्भित उपदेश दिया। चन्द्रापीड को इन्द्रायुध नामक घोड़ा और पत्रलेखा नामक दासी भी मिली। चन्द्रापीड और वैशम्पायन दिग्विजय के लिए निकल पड़े। किन्नरयुगल का पीछा करते हुए इन्द्रायुध पर सवार चन्द्रापीड अच्छेद सरोवर पर पहुँचा। वहाँ एक युवती तपस्विनी महाश्वेता से उसका परिचय हुआ। महाश्वेता ने वर्णन करते हुए बताया कि पुण्डरीक नामक एक ऋषिकुमार से उसका प्रेम हो गया था, परन्तु मिलने से पूर्व ही पुण्डरीक कामपीड़ा से दिवंगत हो गया। तभी से वह इस सरोवर में तपस्विनी का जीवन व्यतीत कर रही थी। महाश्वेता अपनी सखी गन्धर्वराजपुत्री कादम्बरी से मिलाने के लिए चन्द्रापीड को ले जाती है। कादम्बरी ने भी महाश्वेता के विवाह न करने के कारण कौमार्यव्रत धारण किया था। प्रथम मिलन में ही चन्द्रापीड और कादम्बरी परस्पर अनुरक्त हो जाते हैं। इसी समय पिता के बुलाने पर चन्द्रापीड उज्जयिनी लौटता है और सेना सहित वैशम्पायन को बाद में आने के लिए छोड़ देता है।

उत्तरार्द्ध की कथा — बहुत समय तक वैशम्पायन के न लौटने पर चिन्तित चन्द्रापीड उसकी खोज में अच्छोद सरोवर पहुँचता है। वहाँ महाश्वेता ने बताया कि वैशम्पायन मुझ पर आसक्त हो गया था। अतः मैंने उसे शुक होने का शाप दे दिया। अपने मित्र के वियोग से दुःखी चन्द्रापीड के भी प्राण निकल गए। तभी कादम्बरी वहाँ आती है और प्रिय के वियोग में प्राण देना चाहती है। तभी आकाशवाणी उसे रोकती है और आश्वासन देती है कि इस शरीर को जलाना मत इसमें पुनः प्राण आएगा और शीघ्र ही तुम दोनों सखियों का अपने प्रेमी से पुनर्मिलन होगा। (यहाँ जाबालि द्वारा वर्णित कथा समाप्त होती है।)

ऋषि जाबालि से अपने पूर्वजन्म का विवरण सुनते ही शुक में दिव्यवाणी और ज्ञान जागृत हो गया और महाश्वेता की स्मृति सताने लगी। तोते ने राजा शूद्रक से कहा कि मैं महाश्वेता से मिलने के लिए अधीर होकर उड़ा तभी चाण्डालकन्या ने उसे पकड़ लिया और उसके पास ले आई। चाण्डालकन्या ने राजा को बताया कि मैं पुण्डरीक (इस जन्म में वैशम्पायन) की माता हूँ। आप भी पूर्वजन्म में चन्द्रापीड थे। यह सुनते ही राजा शूद्रक को कादम्बरी की याद सताने लगी और वे प्राणहीन हो गए। उधर चन्द्रापीड जीवित हो गए। तोते की कथा समाप्त होने पर शाप का समय समाप्त हो गया था। तोता भी पुण्डरीक हो गया। इस प्रकार चन्द्रापीड-कादम्बरी और पुण्डरीक-महाश्वेता का पुनर्मिलन हो गया और सभी सानन्द रहने लगे।

2.3.3 शैलीगत वैशिष्ट्य

बाणभट्ट गद्यकाव्य के मूर्धाभिषिक्त सम्राट हैं। इनकी शैली गद्यकवियों के लिए आदर्श है। इन्होंने गद्य के समस्त गुणों को आत्मसात् करके पांचाली शैली में प्रकट किया है। ये पांचाली शैली के प्रयोग में इतने निपुण हैं कि सभी पाठक इनके प्रति नतमस्तक हो जाते हैं। कलापक्ष, भावपक्ष एवं अर्थगौरव में भी सिद्धहस्त हैं। कादम्बरी के शुकनासोपदेश में मन्त्री शुकनास के द्वारा राजकुमार चन्द्रापीड को पांचाली शैली में दिया गया उपदेश तो मानो हृदय को उत्साह से सम्पन्न कर देता है और साथ ही जीवन जीने के लिए एक श्रेष्ठतम मार्गदर्शन करता है। बाणभट्ट ने लक्ष्मी के वर्णन प्रसंग में कहा है —

“लब्धापि दुःखेन पाल्यते। न परिचयं रक्षति। नाभिजनमीक्षते। नरूपमालोकयते। न कुलक्रममनुवर्तते। न शीलं पश्यति।” इस प्रकार बाणभट्ट ने अपने काव्यों में छोटे-छोटे समासों का प्रयोग करके पांचाली शैली के सौन्दर्य में चार चाँद लगा दिए हैं।

चित्रण की सजीवता तथा प्रभावशीलता उत्पन्न करने के लिए बाणभट्ट ने समास बहुल ओजगुण से युक्त शैली का स्थान-स्थान पर अवश्य आश्रय लिया है, परन्तु अन्यत्र छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग कर उन्होंने अपनी शैली को सशक्त तथा प्रभावोत्पादक बनाया है।

बाणभट्ट ने अटवी और सन्ध्या के वर्णन में दीर्घ समासों का प्रयोग किया है वहीं विरह वर्णन के अवसर पर लघुकलेवर प्रासादिक वाक्यों का प्रयोग किया है। बाण की लेखनशैली विषय वर्णन के अनुरूप उचित और सरस है। राजशेखर के मत में बाण की शैली में पांचाली रीति का सुन्दर निदर्शन प्राप्त होता है—

शब्दार्थयोः समो गुम्फः पांचालीरीतिरिष्यते।

शिलाभट्टारिका वाचि बाणोक्तिषु च सा यदि।।

पांचाली शैली का प्राण है— वर्ण्य-विषय के अनुरूप पदों का विन्यास जैसा अर्थ वैसा शब्द। यदि वर्ण्य-विषय घनघोर जंगल है तो कवि की वाणी उत्कृष्ट पदावली से मण्डित है। यदि

वह कामिनी के लावण्यरूप का चित्रण है तो कवि का पदविन्यास नितान्त ललित तथा कमनीय है। शब्द के ऊपर अखण्ड साम्राज्य बाण की विशेषता है।

त्रिलोचन कवि की दृष्टि में बाण की रसभाववती कविता के सामने अन्य कवियों की रचना केवल चपलता मात्र है।

हृदि लग्नेन बाणेन यन्मन्दोऽपि पदक्रमः।

भवेत् कविकुरंगाणां चापलं तत्र कारणम्॥

बाण रस सिद्ध कवि हैं बाण को शृंगार रस प्रिय है, परन्तु करुण, शान्त, भयानक आदि का भी वर्णन उन्होंने किया है। उनकी रचना में जहाँ प्रकृति का वर्णन है वहीं मनोभावों, अन्तर्द्वन्द्वों का मार्मिक विवेचन भी किया गया है। बाण ने लम्बे समास, अल्पसमास तथा समास रहित तीनों तरह का वर्णन किया है। भाव और भाषा का सुन्दर समन्वय ही बाण की विशेषता है।

महाकवि बाण के विषय में निम्नलिखित प्रशस्तियाँ प्रसिद्ध हैं –

- वश्यवाणी कविचक्रवर्ती – हर्षवर्धन
- कविताकामिनीकौतुक – जयदेव
- कविताकाननकेशरी – चन्द्रदेव
- महानयं भुजंग– हर्षवर्धन
- वाणीबाणस्य मधुरशीलस्य–धर्मदास
- गद्य कवीनां निकषं वदन्ति– आलोचक
- बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम् – समालोचक
- तुरंगबाण – आलोचक
- रुचिरस्वरवर्णपदा रसभाववती जगन्मनो हरति।
सा किं तरुणी? नहि नहि वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य॥ विदग्धमुखमण्डन धर्मदास।
- बाणः कवीनामिह चक्रवर्ती। उदयसुन्दरी कथा, सोड्डल।

बोध प्रश्न 2

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तरों पर सही(✓) का चिह्न लगाइए –

- i) विलासवती तारापीड की पत्नी थी – ()
- ii) चन्द्रापीड का विवाह महाश्वेता के साथ हुआ था – ()
- iii) शूद्रक चन्द्रापीड का अवतार थे – ()
- iv) शुकनास तारापीड के प्रधान आमात्य थे – ()
- v) कादम्बरी में चन्द्रापीड उज्जयिनी के राजा थे – ()
- vi) शूद्रक का वर्णन कादम्बरी में हुआ है – ()
- vii) इन्द्रायुध वैशम्पायन का अवतार था – ()
- viii) कादम्बरी में वर्णित इन्द्रायुध घोड़ा था – ()
- ix) कादम्बरी शब्द का अर्थ मदिरा है – ()

- x) शुक के द्वारा आर्या छन्द सुनकर राजा आश्चर्यचकित हो गया – ()
- 2) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –
- i) चन्द्रापीड अवतार थे। (शिव के / चन्द्रमा के)
- ii) कादम्बरी की नायिका है – (महाश्वेता / कादम्बरी)
- iii) कादम्बरी के कथानक का मूलस्रोत है।
(गुणादय की बृहत्कथा / अवन्तिसुन्दरीकथा)
- iv) कादम्बरी के मंगलाचरण में की वन्दना की गयी है।
(शिव / त्रिगुणमयपरब्रह्म)
- v) कादम्बरी का प्रधान रस है। (करुण / शृंगार)
- vi) हर्षचरित काव्य है। (गद्य / नाटक)
- vii) हर्षचरित का उदाहरण है। (कथा / आख्यायिका)
- viii) हर्षचरित में उच्छ्वास हैं। (सात / आठ)
- ix) वैशम्पायन पूर्वजन्म में था। (पुण्डरीक / शुक)
- x) शब्दार्थयोः समो गुम्फः रीतिरिष्यते। (वैदर्भी / पांचाली)

3) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

i) बाणभट्ट के पिता का क्या नाम था ?

.....

.....

.....

ii) बाणभट्ट की सर्वप्रथम रचना कौन सी है ?

.....

.....

.....

iii) बाणभट्ट ने अपने काव्यों की रचना किस शैली में की है ?

.....

.....

.....

iv) कादम्बरी के नायक कौन हैं ?

.....

.....

.....

v) कादम्बरी में कितने जन्मों की कथा का वर्णन है ?

.....

.....

.....

.....

vi) चन्द्रापीड की प्रेमिका कौन है ?

.....

.....

.....

.....

अभ्यास प्रश्न

- 1) 'बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्' इस कथन की विवेचना कीजिए।
- 2) बाणभट्ट के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

2.4 दण्डी

प्रिय विद्यार्थियों! इकाई के इस खण्ड में आप महाकवि दण्डी के जीवन-वृत्त, कर्तृत्व और शैलीगत वैशिष्ट्य का अध्ययन करेंगे।

2.4.1 जीवन-वृत्त

संस्कृत गद्यकाव्य के इतिहास में सरल, प्रांजल और भावपूर्ण गद्य के लेखक के रूप में दण्डी का नाम अमर है। दण्डी के विषय में जो सामग्री प्राप्त होती है उसका आधार 'अवन्तिसुन्दरीकथा' है। इसमें उन्होंने अपने वंश के विषय में बताते हुए कहा है कि उनके पूर्वज आनन्दपुर नामक स्थान पर निवास करते थे और यह क्षेत्र कुशिकगोत्रीय ब्राह्मणों का अधिष्ठान था। यहीं से एक शाखा नासिक्य प्रदेश चली गई जिसने अचलपुर को अपना निवासस्थान बनाया। उसी अचलपुर में श्रीनारायण स्वामी के घर पर दामोदर का जन्म हुआ और उन दामोदर के तीन पुत्रों में मध्यम पुत्र मनोरथ के भी चार पुत्रों में कनिष्ठ वीरदत्त की कनिष्ठतम सन्तान के रूप में दण्डी का जन्म हुआ। इसके अनुसार दण्डी किरातार्जुनीयम् महाकाव्य के रचयिता भारवि के प्रपौत्र हैं। भारवि का ही दूसरा नाम दामोदर है। दण्डी की माता गौरी थीं। बाल्यावस्था में ही इनके माता-पिता का स्वर्गवास हो गया। एक चालुक्य राजा ने कांची नगर पर आक्रमण करके उसे लूट लिया। आत्मरक्षार्थ दण्डी भी वहाँ से अन्यत्र चले गए। बहुत समय तक वे इधर-उधर घूमते हुए उच्चशिक्षा प्राप्ति में लगे रहे, जब राजा नरसिंह वर्मा ने पुनः कांची पर अधिकार कर लिया तब वे भी कांची वापस आ गये और वहीं उन्होंने अवन्तिसुन्दरीकथा ग्रन्थ की रचना की। दण्डी ने काव्यादर्श में महाराष्ट्री प्राकृत और वैदर्भी रीति की प्रशंसा की है। दशकुमारचरित में कोची नगर, कावेरीपत्तन, आन्ध्र, चोल, कलिंग, आदि प्रदेशों के साथ विन्ध्याटवी का वर्णन किया गया है। इस आधार पर उन्हें दक्षिणात्य माना जाता है।

दण्डी के काल के विषय में विद्वानों में मतभेद है एक दल छठीं शताब्दी ई० का मत प्रस्तुत करता है तो दूसरा दल उन्हें 700 ई० के आस पास मानता है। काव्यादर्श (1.34) में दण्डी ने प्रवरसेन विरचित सेतुबन्ध नामक प्राकृत काव्य का उल्लेख किया है जिससे यह सिद्ध

होता है कि उनका समय प्रवरसेन के बाद का है। प्रवरसेन का समय 410-440 ई० के मध्य माना जाता है। इसलिए दण्डी 440 ई० के पश्चात् ही हुए होंगे। दण्डी ने अवन्तिसुन्दरीकथा में बाणभट्ट की कादम्बरी के सारांश को ही देने का प्रयास किया है और साथ ही साथ काव्यादर्श (2.17) में 'यूनां यौवनप्रभवं तमः' जैसे शुकनासोपदेश के पदों को भी अपनाया है। इस तरह दण्डी के समय निर्धारण के सन्दर्भ में कहा जा सकता है कि दण्डी का समय 650-750 ई. के मध्य रहा होगा।

2.4.2 कर्तृत्व

दण्डी की रचनाओं को लेकर विद्वानों में मतभेद है। शारङ्गधरपद्धति में दण्डी की तीन रचनाओं का उल्लेख किया गया है।

त्रयोऽग्नयस्त्रयो देवास्त्रयो वेदास्त्रयो गुणाः।

त्रयो दण्डिप्रबन्धाश्च त्रिषु लोकेषु विश्रुताः॥

शारङ्गधरपद्धति 174, राजशेखर।

शारङ्गधरपद्धति के उपरोक्त पद्य से यह तो स्पष्ट हो जाता है कि दण्डी ने तीन प्रबन्धों की रचना की, परन्तु ये प्रबन्ध कौन-कौन से हैं इस पर विचार करते हैं। बहुधा विद्वानों ने दण्डी के द्वारा लिखित प्रबन्धों में काव्यादर्श को प्रथम स्थान पर, दूसरे स्थान पर दशकुमारचरित को और तीसरे स्थान पर अवन्तिसुन्दरीकथा को स्वीकार किया है। कुछ विद्वानों ने दण्डी के चौथे ग्रन्थ के रूप में द्विसन्धानकाव्य को भी स्वीकार किया है किन्तु बहुधा विद्वानों ने द्विसन्धानकाव्य को दण्डी की चौथी रचना स्वीकार करने से इन्कार कर दिया है। इस तरह दण्डी ने एक काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ और दो गद्यात्मक कथा ग्रन्थों की रचना की।

वाल्मीकि और व्यास के बाद तीसरा स्थान दण्डी को ही प्राप्त है।

जाते जगति वाल्मीकौ कविरित्यभिधाऽभवत्।

कवी इति ततो व्यासे, कवयस्त्वयि दण्डिनि॥

वाल्मीकि के आने पर कविः शब्द बना व्यास के आने पर द्विवचन में कवी रूप हुआ तथा दण्डी का आविर्भाव होने पर ही बहुवचन रूप कवयः हो सका।

- 1) **काव्यादर्श** — यह तीन परिच्छेदों में निबद्ध एक काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ है। इसके प्रथम परिच्छेद में 105 कारिकाएं हैं जिसमें काव्य का महत्त्व, लक्षण, भेद, महाकाव्य, गद्यकाव्य, भाषाभेद तथा काव्यगुणों पर विचार किया गया है। द्वितीय परिच्छेद में 368 कारिकाएं हैं जिसमें अलंकारों का विवेचन किया गया है जिसमें उपमा, रूपक, दीपक, आदि के भेद-प्रभेदों का विस्तृत वर्णन है। तृतीय परिच्छेद 187 कारिकाएं हैं जिसमें यमक अलंकार, चित्रकाव्य तथा काव्य-दोषों का विवेचन है।
- 2) **दशकुमारचरित** — यह दण्डी रचित गद्यकाव्य है। जिसमें कथा और आख्यायिका नामक दोनों गद्य भेदों के लक्षण दिए गए हैं। वर्तमान में सम्पूर्ण गद्य तीन भागों में उपलब्ध है।
- 1) **पाँच उच्छ्वासों की पूर्वपीठिका** — इसमें राजवाहन का जन्म (कुमारोत्पत्ति), मन्त्री पुत्रों का जन्म (द्विजोपकृतिः), सोमदत्त के साहसिक कार्य (सोमदत्तचरितम्), पुष्पोद्भव की साहसिक कथा (पुष्पोद्भवचरितम्), राजवाहन का अवन्तिसुन्दरी से विवाह (अवन्तिसुन्दरीपरिणयः) आदि का वर्णन है।

- 2) **आठ उच्छ्वासों का दशकुमारचरित** — इसमें आठ उच्छ्वास हैं कुमारों का चरित वर्णित है, राजवाहन-चरित, अपहारवर्मा-चरित, उपहारवर्मा-चरित, अर्थपाल-चरित, प्रमति-चरित, मित्रगुप्त-चरित, मन्त्रगुप्त-चरित, विश्रुत-चरित।
- 3) उत्तरपीठिका (उपसंहार) है।

दशकुमारचरित एक घटना प्रधान कथानक है। जिसमें नाना प्रकार की उल्लासमयी रोमांचक घटनाएँ पाठकों के हृदय में कभी विस्मय की और कभी विवाद की ओर रेखाएँ खींचने में नितान्त समर्थ होती हैं। कभी पाठक भयानक जंगल के पास हिंसक पशुओं की चीत्कारों को सुनकर व्यग्र हो उठता है, तो कहीं समुद्र के बीच जहाज टूट जाने से अपने को पानी में काठ के सहारे तैरता हुआ पाता है। मित्रगुप्त के जीवन में जलयात्रा का एक बड़ा ही रोचक चित्र मिलता है। मित्रगुप्त ताम्रलिखित नामक प्रख्यात बंगीय बंदरगाह से किसी नवीन द्वीप में जहाज से जाता है। बहुत देर तक तैरने के बाद उसे एक काठ का तैरता हुआ टुकड़ा मिलता है। रात-दिन उसी के सहारे बिताने पर भवन नाविकों का एक जहाज दिखायी पड़ता है। जिसके कप्तान का नाम रामेषु है। भवनों के ऊपर एक युद्धतोप का आक्रमण होता है। भवन नाविक इस विपत्ति से विचलित हो जाते हैं। मित्रगुप्त जिसे जंजीरों से बाँधा गया था मुक्त हो गया। वह इस पोत के डाकुओं को अपनी वीरता से हराकर भवनों को बचाता है और उनसे पुरस्कृत होकर पुनः अपने स्वदेश लौट आता है। इसी प्रकार की रोमांच तथा साहस से भरी विस्मयावह घटनाओं से पूर्ण होने के कारण दशकुमारचरित का वातावरण नितान्त भौतिक है। दण्डी की प्रतिभा घटनाओं की यथार्थता में चरितार्थ होती है। यथार्थवाद यहाँ पूर्णतः प्रतिबिम्बित हो रहा है।

2.4.3 शैलीगत वैशिष्ट्य

दण्डी की प्रशस्ति के रूप में 'दण्डिनः पदलालित्यम्' अत्यधिक प्रसिद्ध है पदों का लालित्य, समासरहित सौम्य पदावली तथा अनुप्रासयुक्त नादसौन्दर्य दशकुमारचरित में मिलता है। सप्तम उच्छ्वास में जहाँ मन्त्रिगुप्त नियोष्ठवर्णों से अपना वृत्तान्त सुनाता है उस समय दण्डी को सुन्दर से सुन्दर पदावली की खोज करनी पड़ती है, जिससे वर्णसाम्यरूप अनुप्रास स्वतः स्फूर्त हो जाता है।

आचार्य दण्डी परिष्कृत गद्य-शैली के जन्मदाता हैं। गद्य का क्या स्वरूप होना चाहिए, उसमें भाव-भाषा-रस-अलंकारों का किस प्रकार समन्वय प्रस्तुत करना चाहिए, इसका आदर्श उन्होंने दशकुमारचरित में प्रस्तुत किया है। वे वैदर्भी शैली के कवि हैं। उनकी भाषा में प्रसाद और माधुर्य गुणों की पराकाष्ठा है। उनमें भावों की अभिव्यंजना की शक्ति इतनी प्रबल है कि कठिन से कठिन राजनीति आदि के तत्त्वों को सरलता से भाषा में प्रस्तुत कर सकते हैं। भावानुकूल पदावली का संचयन उनकी प्रमुख विशेषता है।

शृंगार, करुण आदि के वर्णनों में उनकी भाषा में प्रसाद और माधुर्य की मंजुल छटा दर्शनीय है, नखशिख वर्णन, प्रकृति-वर्णन आदि में समासयुक्त और सालंकार पदावली भी उनकी ही प्रौढ़ एवं परिष्कृत भाषा का रूप है। 'मधुराविजय' महाकाव्यकार गंगादेवी ने दण्डी की कृति को सरस्वती का मणिदर्पण बताया है।

आचार्यदण्डिनो वाचामचान्तामृतसम्पदाम्।

विकासो वेधसः पत्न्या विलासमणिदर्पणम्॥

कुछ आलोचकों का मत है कि कवित्व का परिपाक केवल दण्डी में ही दृश्य है, अन्यत्र नहीं।

कल्पनाशील दण्डी की काव्यशैली पांचाली रीति का अनुसरण करती है क्योंकि इनकी रचना में शब्द-गुम्फन अर्थ के अनुरूप है। अतएव 'शब्दार्थयोः समो गुम्फः पांचाली रीतिरुच्यते' यह लक्षण घटित होता है। अर्थ की स्पष्टता, रस की सुन्दर अभिव्यक्ति, कल्पना की सजीवता और शब्द का लालित्य ये दण्डी की शैली के विशेष गुण हैं इसलिए इनके बारे में कहा गया है 'दण्डिनः पदलालित्यम्'। इनकी रचना में माधुर्य गुण विशेष रूप से पाया जाता है किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि इन्होंने ओज की तरफ ध्यान नहीं दिया।

ओजः समासभूयस्त्वमेतद् गद्यस्य जीवितम्।

इन्होंने लम्बे व छोटे समस्त प्रकार के वाक्यों का प्रयोग किया है। दण्डी का दृष्टिकोण यथार्थवादी है। उन्होंने समाज के सभी पात्रों को लिया है क्योंकि इसमें राजा, राजकुमार, ब्राह्मण, भिक्षुक, चोर, राजकुमारियाँ, वेश्याएं, दम्भी और पाखण्डी सभी को सम्मिलित किया है। दण्डी ने ढूँढ-ढूँढकर सामाजिक बुराइयों को निकाला है। दण्डी को स्वच्छ समाज से प्रेम है, दम्भी और पाखण्डियों से नहीं। अतः कुलटा पत्नी धूमिनी, ऋषिमनोहारिणी काममंजरी, कार्मदक्ष उपहारवर्मा, योग्य आमात्य वसुरक्षित, धूर्ताधिराज विहारभद्र आदि के चरित्र का वर्णन करते हैं। भले-बुरे सभी कोटि के पात्र उनकी रचना में वर्णित हैं। उनमें मनोवांछित हर्षशोक, सुख-दुःख, रागद्वेष, प्रेम-घृणा, आशा-निराशा व्याप्त है। दण्डी आदर्शवादी न होकर यथार्थवादी और व्यवहारवादी हैं। उन्होंने केवल सैद्धान्तिक शिक्षा न देकर व्यावहारिक शिक्षा भी दी है। व्यवहार कुशलता से जीवन सुखी बन सकता है यह दण्डी का लक्ष्य है। दण्डी निर्भीक, सुधारवादी, क्रान्तिकारी और व्यवहारकुशल कवि हैं।

बोध प्रश्न 3

- 1) निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तरों पर सही (✓) का चिह्न लगाइए –
 - i) दशकुमारचरित में आठ उच्छ्वास हैं – ()
 - ii) 'राजवाहन' नामक राजकुमार का वर्णन दशकुमारचरित में है – ()
 - iii) दशकुमारचरित में दण्डी ने वैदर्भी रीति का प्रयोग किया – ()
 - iv) दण्डी रचित गद्यकाव्य कादम्बरी है – ()
- 2) निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए –
 - i) 'राजवाहन' नामक राजकुमार का वर्णन है—

क) दशकुमारचरित	ख) मृच्छकटिक
ग) रत्नावली	घ) वेणीसंहार
 - ii) दशकुमारचरित के अनुसार राजहंस की राजधानी थी—

क) कुसुमपुर	ख) उज्जयिनी
ग) पुष्पपुरी	घ) विदिशा
 - iii) रोमांचक घटनाओं का वर्णन किस काव्य में है—

क) हर्षचरित	ख) दशकुमारचरित
ग) कादम्बरी	घ) वासवदत्ता
 - iv) दशकुमारचरितम् में दण्डी ने किस रीति का प्रयोग किया—

क) गौणी	ख) वैदर्भी
ग) पांचाली	घ) अवन्ती

3) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

i) दण्डी की कितनी रचनाएं हैं ?

.....

.....

.....

.....

ii) 'दण्डिनः पदलालित्यम्' यह प्रशस्ति किस कवि के लिए कही गई है ?

.....

.....

.....

.....

iii) काव्यादर्श में कितने परिच्छेद हैं ?

.....

.....

.....

.....

iv) दण्डी के पिता का क्या नाम था ?

.....

.....

.....

.....

अभ्यास प्रश्न

- 1) दण्डी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर टिप्पणी लिखिए।
- 2) दण्डी के शैलीगत वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिए।

2.5 सारांश

सुबन्धु, बाण तथा दण्डी का संस्कृत गद्य-साहित्य में मूर्धन्य स्थान है। सुबन्धु की एकमात्र उपलब्ध कृति वासवदत्ता है। इसका कथानक पूर्णतः काल्पनिक है। अतः इस रचना को कथा की श्रेणी में स्थान दिया गया है। शृंगार रस प्रधान इस ग्रन्थ में राजकुमार कन्दर्पकेतु एवं राजकुमारी वासवदत्ता के प्रेम एवं विवाह का वर्णन इस गद्यकाव्य का प्रतिपाद्य विषय है। इनकी रचना में ओजगुण, समास बहुलता, कठिन पद-विन्यास, पाण्डित्य प्रदर्शन, गौडी रीति आदि का प्रचुर मात्रा में प्रयोग मिलता है। सुबन्धु के पश्चात् बाण ने कादम्बरी, हर्षचरित आदि ग्रन्थों की रचना कर संस्कृत साहित्य में अपना स्थान बनाया। काव्य और नाटक के

क्षेत्र में जो स्थान कालिदास को प्राप्त हुआ गद्यकाव्य के क्षेत्र में वही स्थान बाणभट्ट को प्राप्त है। बाण ने हर्षचरित एवं कादम्बरी में स्वयं अपना परिचय दिया है। कादम्बरी में बाण ने तीन जन्मों की कथा का वर्णन किया है जिसका आधार गुणादय की बृहत्कथा है। बाण की शैली गद्यकवियों के लिए आदर्श है। बाण पांचाली रीति के प्रयोग में निपुण थे। उनकी रचनाओं में एक ओर छोटे-छोटे सामासिक पदों का प्रयोग है तो दूसरी ओर सन्ध्या और अटवी वर्णन में लम्बे-लम्बे सामासिक पदों का भी प्रयोग मिलता है। बाण रससिद्ध कवि हैं। उनका प्रिय रस शृंगार है। भाषा और भावों का सुन्दर समन्वय बाण के काव्य की विशेषता है। सरल, प्रांजल और भावपूर्ण गद्य लेखक के रूप में दण्डी का नाम श्रेष्ठ है। अवन्तिसुन्दरीकथा एवं दशकुमारचरित दण्डी की ही रचनाएं हैं। उन्होंने अवन्तिसुन्दरीकथा में अपने वंश के विषय में बताया है। रोमांच तथा साहस से पूर्ण विस्मयावह घटनाओं से पूर्ण होने के कारण दशकुमारचरित का कथानक नितान्त भौतिक है। उनकी प्रतिभा घटनाओं की यथार्थता में चरितार्थ होती है। दण्डी पदों के सुन्दर प्रयोग में निपुण थे, इसलिए 'दण्डिनः पदलालित्यम्' यह उक्ति उनके सन्दर्भ में प्रचलित हुई। उनकी कृति में वैदर्भी रीति, प्रसाद और माधुर्य गुण, भावों की सुन्दर अभिव्यंजना, प्रकृति-वर्णन आदि का सुन्दर निदर्शन मिलता है। इस प्रकार इस इकाई के द्वारा आपने यह जाना कि सुबन्धु, बाण तथा दण्डी संस्कृत गद्य साहित्य के ऐसे स्तम्भ हैं जिनके बिना गद्य-साहित्य की कल्पना कर पाना नितान्त असम्भव है।

2.6 शब्दावली

निपुण	— कुशल
कथानक	— संक्षिप्त कथा, कथासार
पूर्ववर्ती	— पहले से स्थित
अनुरक्त	— आसक्त
उद्यत	— तत्पर, प्रयत्नशील
अनुग्रह	— उपकार करना
बहुलता	— अधिकता, सघनता
समन्वय	— पारस्परिक सम्बन्ध, संयोग
विलक्षण	— असाधारण
आविर्भाव	— उत्पत्ति, जन्म लेना
आत्मसात्	— अपना, आत्माधीन
सन्दिग्ध	— सन्देहयुक्त

2.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास — डॉ कपिलदेव द्विवेदी, रामनारायणलाल, विजयकुमार, कटरा, प्रयागराज।
- संस्कृत साहित्य का इतिहास — डॉ उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', चौखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी।
- संस्कृत साहित्य का इतिहास — डॉ आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन, वाराणसी।

- संस्कृत साहित्य का बृहद् इतिहास पंचम खण्ड – गद्य, प्रधान सम्पादक आचार्य बलदेव उपाध्याय, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ।
- कादम्बरी – जयशंकर लाल त्रिपाठी, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।

2.8 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

- 1) (i) सही (ii) गलत (iii) गलत (iv) सही
- 2) (i) (क) वासवदत्ता (ii) (ख) कन्दर्पकेतु/वासवदत्ता (iii) (क) श्लेष
- 3) (i) श्लेष (ii) गौडी (iii) तमालिका (iv) मकरन्द

बोध प्रश्न 2

- 1) (i) सही (ii) गलत (iii) सही (iv) सही (v) सही (vi) सही (vii) गलत (viii) सही (ix) सही (x) सही
- 2) (i) चन्द्रमा के (ii) कादम्बरी (iii) गुणादय की बृहत्कथा (iv) त्रिगुणमयपरब्रह्म (v) शृंगार (vi) गद्य (vii) आख्यायिका (viii) आठ (ix) शुक (x) पांचाली
- 3) i) बाणभट्ट के पिता का नाम चित्रभानु था।
ii) बाणभट्ट की सर्वप्रथम रचना हर्षचरित है।
iii) बाणभट्ट ने अपने काव्यों की रचना पांचाली शैली में की है।
iv) कादम्बरी के नायक चन्द्रापीड हैं।
v) कादम्बरी में तीन जन्मों की कथा का वर्णन है।
vi) चन्द्रापीड की प्रेमिका कादम्बरी है।

बोधप्रश्न 3

- 1) (i) सही (ii) सही (iii) सही (iv) गलत
- 2) (i) (क) दशकुमारचरित (ii) (ग) पुष्पपुरी (iii) (ख) दशकुमारचरित (iv) (ख) वैदर्भी
i) दण्डी की तीन रचनाएं हैं।
ii) 'दण्डिनः पदलालित्यम्' यह प्रशस्ति दण्डी के लिए कही गई है।
iii) काव्यादर्श में तीन परिच्छेद हैं।
iv) दण्डी के पिता का नाम वीरदत्त था।

अभ्यास प्रश्न

इन प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।

इकाई 3 प्रमुख गद्यकार भाग-2 अम्बिकादत्त व्यास, विश्वेश्वर पाण्डेय, हृषीकेश भट्टाचार्य और अन्य

इकाई की रूपरेखा

- 3.0 उद्देश्य
- 3.1 प्रस्तावना
- 3.2 पण्डित अम्बिकादत्त व्यास
 - 3.2.1 जीवन-वृत्त
 - 3.2.2 कर्तृत्व
 - 3.2.3 शैलीगत वैशिष्ट्य
- 3.3 आचार्य विश्वेश्वर पाण्डेय
 - 3.3.1 जीवन-वृत्त
 - 3.3.2 कर्तृत्व
 - 3.3.3 शैलीगत वैशिष्ट्य
- 3.4 पण्डित हृषीकेश भट्टाचार्य
 - 3.4.1 जीवन-वृत्त
 - 3.4.2 कर्तृत्व
 - 3.4.3 शैलीगत वैशिष्ट्य
- 3.5 पण्डिता क्षमाराव
 - 3.5.1 जीवन-वृत्त
 - 3.5.2 कर्तृत्व
 - 3.5.3 शैलीगत वैशिष्ट्य
- 3.6 डॉ. रामशरण त्रिपाठी
 - 3.6.1 जीवन-वृत्त
 - 3.6.2 कर्तृत्व
 - 3.6.3 शैलीगत वैशिष्ट्य
- 3.7 अन्य गद्यकार
 - 3.7.1 धनपाल
 - 3.7.2 वादीभसिंह
- 3.8 सारांश
- 3.9 शब्दावली
- 3.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें
- 3.11 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

3.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- पण्डित अम्बिकादत्त व्यास के जीवन के विषय में बता सकेंगे।

- अम्बिकादत्त व्यास की रचनाओं के बारे में बता सकेंगे ।
- हृषीकेश भट्टाचार्य का परिचय बताते हुए उनकी रचनाओं की विशेषताओं से परिचित होंगे ।
- आचार्य विश्वेश्वर पाण्डेय के व्यक्तित्व को बताकर उनकी कवित्व शक्ति का वर्णन कर सकेंगे ।
- पण्डिता क्षमाराव के जीवन की विशेषताओं का उल्लेख कर सकेंगे ।
- संस्कृत गद्य के कवियों में रामशरण त्रिपाठी की रचनाएं भी विशेष स्थान रखती हैं, इस तथ्य को समझ सकेंगे ।
- धनपाल तथा वादीभसिंह के व्यक्तित्व को बताते हुए उनकी लेखन शैली का परिचय प्राप्त कर सकेंगे ।

3.1 प्रस्तावना

इस इकाई में आप संस्कृत गद्य से सम्बन्धित कुछ प्रमुख कवियों, रचनाकारों के जीवन-वृत्त तथा उनकी रचनाओं का परिचय प्राप्त करेंगे। इसके पूर्व की इकाई में आपने बाणभट्ट, सुबन्धु, दण्डी आदि अन्य पूर्ववर्ती प्रमुख कवियों के जीवन-वृत्त का परिचय प्राप्त करते हुए उनकी रचनाओं का अध्ययन किया है। जिससे आपको अम्बिकादत्त व्यास से पूर्व प्रतिष्ठित गद्यकारों के जीवन तथा उनकी काव्य-शैली की विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त हुआ।

संस्कृत गद्य की परम्परा प्राचीन है व्यास से लेकर बाणभट्ट, दण्डी आदि कवियों ने गद्य रचना करके भारतीय संस्कृत साहित्य में अपूर्व योगदान दिया है। उनकी रचनाओं में कथा और पद्य के माध्यम से जीवन से लेकर राष्ट्र तक की सभी उत्कृष्टताओं का वर्णन पाया जाता है। साथ ही प्राचीन कवि अपनी गद्य-शैली की विशेषताओं के कारण सम्पूर्ण साहित्य जगत् में प्रतिष्ठा के विषय रहे हैं।

इस इकाई में आप पण्डित अम्बिकादत्त व्यास से लेकर हृषीकेश भट्टाचार्य, विश्वेश्वर पाण्डेय तथा पण्डिता क्षमाराव के अतिरिक्त अन्य कुछ प्रमुख संस्कृत गद्यकवियों के जीवन-वृत्त तथा उनकी रचनाओं का अध्ययन करेंगे। जिससे आप परवर्ती गद्य की विशेषताओं से परिचित होते हुए इन प्रमुख कवियों की शैलीगत विशेषताओं का उल्लेख कर सकेंगे।

3.2 पण्डित अम्बिकादत्त व्यास

3.2.1 जीवन-वृत्त

पण्डित अम्बिकादत्त व्यास का नाम आधुनिक संस्कृत गद्यकारों में बहुत आदरणीय है। इनके पूर्वजों का मूल स्थान जयपुर है। जयपुर की ही रावत जी का धूला नामक गाँव में व्यास जी का जन्म हुआ था। यह पाराशर गोत्री ब्राह्मण थे साथ ही यजुर्वेदीय भी थे। इनके वृद्ध पितामह श्री गोविन्दराम जी राजस्थान के मानसिंह के पुत्र दुर्जनसिंह के वंश में उत्पन्न दलेल सिंह के राज्य पण्डित थे। इन्हीं गोविन्दराम जी के प्रपौत्र पण्डित राजाराम जी कभी तीर्थयात्रा के लिए काशी आए थे। स्थानीय लोगों के स्नेह के कारण वे काशी में ही बस गए। पण्डित राजाराम जी के बड़े पुत्र का नाम पण्डित दुर्गादत्त था जो संस्कृत और हिन्दी साहित्य की विद्वत्ता से ओत-प्रोत तो थे ही बल्कि लेखक भी थे। इनका विवाह जयपुर के सिलावट में हुआ था जहाँ इनके द्वारा द्वितीय पुत्र के रूप में अम्बिकादत्त का जन्म चैत्र शुक्ल अष्टमी संवत् 1915 तदनुसार 1858 ईस्वी को हुआ। इनकी प्रतिभा बचपन से ही

विलक्षण थी। 12 वर्ष की छोटी सी अवस्था से ही वह गोष्ठियों में सम्मिलित होने जाया करते थे। अम्बिकादत्त व्यास जी की शिक्षा-दीक्षा काशी में सम्पन्न हुई। पण्डित ताराचरण जी से व्यास जी ने साहित्यदर्पण और काव्यप्रकाश का अध्ययन किया। इसी प्रकार कुंज लाल बाजपेई से न्यायशास्त्र का और राममिश्र शास्त्री से सांख्यदर्शन का अध्ययन किया। आयुर्वेद और बंगला आदि भाषाओं की शिक्षा इन्होंने विश्वनाथ कविराज जी से पाई थी। 1928 में जब इनका विवाह हुआ तब वह 13 वर्ष के थे। 16 वर्ष की उम्र में इनकी माता का तथा 22 वर्ष की उम्र में इनके पिता का भी देहावसान हो गया।

3.2.2 कर्तृत्व

विलक्षण प्रतिभासम्पन्न पण्डित अम्बिकादत्त व्यास जी अपने अध्ययन और मनन से कभी विरत नहीं रहे। इनकी कविता लिखने की गति को देखकर लगता है कि इनमें कविता करने की अद्भुत शक्ति थी। 1 घंटे में 100 श्लोकों की रचना कर देने पर इन्हें घटिकाशतक की उपाधि दी गई।

अम्बिकादत्त व्यास को शतावधान भी कहा गया है। उनका समस्त जीवन संस्कृत और सनातन धर्म के प्रचार प्रसार में समर्पित था। बिहार के मधुबनी में उन्होंने अध्यापन किया। उन्होंने धर्म-सभा-सुधानिधि, संचारिणी सभा जैसी संस्थाओं की स्थापना की। पटना में बिहार संस्कृत जीवन को पुनर्जीवित करने में इन्हीं का योगदान रहा है। साहित्य के अलावा न्याय, वेदान्त, दर्शन, व्याकरणशास्त्र के भी व्यास जी आधिकारिक विद्वान् थे। उन्होंने आर्यभाषा सूत्रधार नामक एक हिन्दी व्याकरण लिखना प्रारम्भ किया था जो दुर्भाग्यवश अपूर्ण रह गया। व्यास जी अप्रतिम प्रतिभासम्पन्न थे। वस्तुतः अम्बिकादत्त व्यास जी ने कुल 80 रचनाएं की थीं। कतिपय कारणों से सभी रचनाओं के नाम उपलब्ध नहीं होते। उनके द्वारा रचित शिवराजविजय नामक संस्कृत उपन्यास अत्यन्त प्रसिद्ध और महत्त्वपूर्ण है। सामवतम् नाटक, गुप्ताशुद्धिप्रदर्शनम्, बिहारी-विहार और अबोधनिवारण व्यास जी द्वारा रचित रचनाएँ हैं। पण्डित अम्बिकादत्त व्यास जी दीर्घायु नहीं रहे। 42 वर्ष की अवस्था में इनका देहावसान हो गया था। उस समय ये गवर्नमेंट संस्कृत कालेज पटना में प्रोफेसर थे।

शिवराजविजय

यह एक ऐतिहासिक उपन्यास है। इसकी रचना 1945 से 1950 के बीच में हुई थी। शिवराजविजय उपन्यास का सम्पूर्ण कथानक 3 विरामों में विभक्त है। प्रत्येक विराम में चार निःश्वास हैं।

3.2.3 शैलीगत वैशिष्ट्य

शिवराजविजय में व्यास जी ने पांचाली रीति का प्रयोग किया है। इस उपन्यास में उन्होंने छोटे और लम्बे पदों का प्रयोग किया है। इस उपन्यास का प्रधान रस वीर है। इसके कथानक में 2 स्वतन्त्र कथाएँ हैं एक के नायक के रूप में वीर शिवाजी तथा दूसरे के नायक के रूप में रघुवीर सिंह है। प्रायः अन्य सभी प्रतिनिधि पात्र हैं। शिवाजी तथा उनके सहयोगी देशप्रेम की भावना से ओतप्रोत हैं। इस उपन्यास में कवि द्वारा नाटकीय संवादों की योजना प्रस्तुत करके संस्कृत गद्यकाव्य के लिए एक नवीन दिशा प्रदान की गई है। शिवराजविजय की रचना से काव्य के परम्परागत प्रयोजनों के अतिरिक्त संस्कृत कवियों को एक नई दिशा में प्रेरणा भी प्रदान की गई है। इसी उपन्यास से बाद के कवियों को नई विधा की रचना में प्रवृत्त होने की प्रेरणा मिली है।

3.3 आचार्य विश्वेश्वर पाण्डेय

3.3.1 जीवन-वृत्त

आचार्य विश्वेश्वर पाण्डेय के पूर्वज भारद्वाज गोत्र के ब्राह्मण थे। मूल रूप से वह पर्वतीय ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम लक्ष्मीधर पाण्डेय था। लक्ष्मीधर सभी शास्त्रों में प्रवीण विद्वान् थे। इन लोगों का मूल स्थान उत्तराखण्ड के अल्मोड़ा जनपद के पटिया नामक ग्राम में था। विश्वेश्वर पाण्डेय के पिता लक्ष्मीधर जी काशी आ गए थे। वह सन्तान के अभाव में बहुत दुःखी थे। इस कारण उन्होंने अपना पूरा जीवन बाबा विश्वनाथ की आराधना में समर्पित कर दिया। ऐसी कथा प्रचलित है की विश्वेश्वर पाण्डेय को बाबा विश्वनाथ की कृपा से पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई। अलौकिक कृपा से उत्पन्न पुत्र का नाम विश्वेश्वर रखा गया। उन्होंने सभी शास्त्रों का अध्ययन अपने पिता लक्ष्मीधर के चरणों में बैठकर काशी में ही किया। अपनी 5 वर्ष की अवस्था में ही वह बुद्धि की विचित्रता का प्रदर्शन करने लगे थे। विश्वेश्वर पाण्डेय जी की विशेषता थी की वे जिन-जिन शास्त्रों का अध्ययन करते थे उन-उन शास्त्रों में ही नए ग्रन्थों का निर्माण प्रारम्भ कर देते थे।

3.3.2 कर्तृत्व

आचार्य विश्वेश्वर पाण्डेय द्वारा रचित ग्रन्थ निर्णय सागर प्रेस मुम्बई और कतिपय काशी से संस्कृत ग्रन्थमाला के द्वारा प्रकाशित हुए हैं जो आज भी उपलब्ध होते हैं। यह व्याकरण, न्याय और काव्यशास्त्र के अद्वितीय विद्वान् थे। उन्होंने महर्षि पाणिनि अष्टाध्यायी की विशद व्याख्या के रूप में वैयाकरणसिद्धान्तसुधानिधि नामक ग्रन्थ की रचना की जो पाणिनीय व्याकरण से सम्बन्धित प्रमुख ग्रन्थ माना जाता है।

इसके अलावा अलंकारकौस्तुभ, अलंकारप्रदीप, रसचन्द्रिका, अलंकारमुक्तावली इनके द्वारा रचित काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ हैं। काव्य ग्रन्थों में – रोमावलीशतक, आर्यासप्तशती आदि के नाम आते हैं।

गद्यकाव्य से सम्बन्धित विश्वेश्वर पाण्डेय की रचना का नाम मन्दारमंजरी है। यह ग्रन्थ पूर्व और उत्तर दो भागों में विभक्त है। इसका पूर्वार्ध विश्वेश्वर जी द्वारा रचित है और उत्तरार्ध इनके किसी शिष्य की कृति है। किन्तु यह समग्र रूप में उपलब्ध नहीं है। मन्दारमंजरी के पूर्वभाग का प्रारम्भ आर्या छन्द से हुआ है। इन प्रारम्भिक श्लोकों में ताण्डव नृत्य में प्रशक्त शिव, गौरी, गणेश, लक्ष्मी एवं सरस्वती आदि देवताओं की वन्दना की गई है। मन्दारमंजरी की कथा का प्रारम्भ प्राची दिशा के वर्णन से होता है। यहाँ पर मगध प्रदेश में पुष्पपुर या पाटलिपुत्र नाम का एक नगर था। वहाँ राजा राजशेखर राज्य करता था। उसकी रानी का नाम मलयवती था। इसमें राजा राजशेखर एवं रानी मलयवती के पुत्र राजकुमार चित्रभानु और विद्याधर चन्द्रकेतु एवं चन्द्रलेखा की पुत्री मन्दारमंजरी के प्रणय और परिणय का वर्णन है। इसी राजा द्वारा उत्कृष्ट यज्ञ सम्पन्न किए जाने और इसकी रानी मलयवती के गर्भवती होने के पश्चात् पुत्र की प्राप्ति और उस पुत्र के संस्कारों आदि का वर्णन करते हुए कवि ने राजा को उदयगिरि, अमरावती, गंधमादन गिरी होते हुए कैलाश पर्वत तक पहुंचाया है।

3.3.3 शैलीगत वैशिष्ट्य

विश्वेश्वर पाण्डेय कृत मन्दारमंजरी गद्यकाव्य का एक कथा-ग्रन्थ है। यद्यपि विश्वेश्वर बाण और सुबन्धु की कृतियों से बहुत प्रभावित थे फिर भी उन्होंने मन्दारमंजरी की प्रस्तावना में इस बात का स्पष्ट उल्लेख कर दिया है कि मेरी मन्दारमंजरी समस्त काव्यों से विचित्र

होगी। मन्दारमंजरी की कथा कादम्बरी की कथा के तुल्य उलझी हुई है। कथा में उपकथा का प्रवाह चलता जाता है। मूलकथा छूट जाती है और उपकथाओं का वर्णन प्रवाहित रहता है। अन्त में कथा को जोड़ दिया जाता है। श्लेष, उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, व्यतिरेक, विरोधाभास, परिसंख्या आदि अलंकारों के प्रयोग मन्दारमंजरी में प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। इतने अलंकारों का प्रयोग करने के पश्चात् भी विश्वेश्वर जी की शैली के कारण यह ग्रन्थ अलंकारों के बोझ से कहीं भी बोझिल दिखाई नहीं देता। पाण्डेय जी की शैली में लघु तथा दीर्घ दोनों प्रकार के वाक्यों का प्रयोग होता है। सभी जगहों पर समासबहुल पदावली का प्रयोग नहीं है बल्कि ऐसे प्रयोग मन्दारमंजरी में यत्र-तत्र ही पाए जाते हैं। मन्दारमंजरी के पारस्परिक संवादों में भाषा का प्रवाह बहुत ही प्रांजल है। इस प्रकार मन्दारमंजरी कवि की गद्यकाव्य में रचित एकमात्र प्रौढ़ कृति है। बाण और सुबन्धु से सर्वथा प्रभावित होते हुए भी कवि ने अपनी इस कृति में नवीनता लाने का भरपूर प्रयास किया है।

बोध प्रश्न 1

- 1) नीचे दिए गए कथनों में से सत्य (✓) तथा असत्य (✗) कथन का चयन कीजिए –
 - i) पण्डित अम्बिकादत्त व्यास एक नाटककार थे – ()
 - ii) अम्बिकादत्त व्यास के पूर्वज कलकत्ता के निवासी थे – ()
 - iii) विश्वेश्वर पाण्डेय को 'शतावधान' कहा गया है – ()
 - iv) 'अलंकारप्रदीप' विश्वेश्वर पाण्डेय की कृति है – ()
- 2) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :-
 - i) पण्डित अम्बिकादत्त व्यास का जन्म चैत्र शुक्ल.....को हुआ था।
 - ii) 1 घण्टे में 100 श्लोकों की रचना करने के कारण अम्बिकादत्त व्यास को कहते हैं।
 - iii) मन्दारमंजरी भागों में विभक्त है।
- 3) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक पंक्ति में लिखिए –
 - i) 'आर्यभाषासूत्राधार' किसकी रचना है?
.....
.....
 - ii) 'शिवराजविजय' के रचयिता कौन हैं ?
.....
.....
 - iii) विश्वेश्वर पाण्डेय का जन्म कहाँ हुआ ?
.....
.....
 - iv) 'अलंकार-कौस्तुभ' किसकी रचना है ?
.....
.....

v) 'मन्दारमंजरी' के लेखक कौन हैं ?

.....

.....

.....

अभ्यास प्रश्न

- i) पण्डित अम्बिकादत्त व्यास के जीवन-वृत्त पर प्रकाश डालिए।
- ii) विश्वेश्वर पाण्डेय के शैलीगत वैशिष्ट्य प्रकाश डालिए।

3.4 हृषीकेश भट्टाचार्य

3.4.1 जीवन-वृत्त

पण्डित हृषीकेश भट्टाचार्य का जन्म बंगाल में हुआ था। बंगाल में ही इनकी शिक्षा-दीक्षा भी हुई थी। उच्चतर अध्ययन के लिए भट्टाचार्य जी लाहौर गए थे जहाँ उन्होंने गवर्नमेंट संस्कृत कॉलेज में अध्ययन किया तथा वहीं पर उन्होंने प्राध्यापक के रूप में कार्य किया। लाहौर में ही संस्कृत, अंग्रेजी आदि की शिक्षा प्राप्त कर परीक्षाएं देने के कारण भट्टाचार्य जी की विचार परिधि, चिन्तन शक्ति, दृष्टिकोण आदि अत्यन्त व्यापक हो गए थे। इन्होंने 'विद्योदय' नामक संस्कृत-पत्रिका का 44 वर्ष सम्पादन किया। ये सामयिक विषयों पर विनोदपूर्ण शैली में लेख लिखते रहे। प्रो. मैक्समूलर भी इनकी लेखन शैली से प्रभावित थे, अतः इनके प्रशंसक रहे। इनके लेखों का संग्रह 'प्रबन्धमंजरी' नाम से मुद्रित हुआ है। हृषीकेश भट्टाचार्य का समय 1850 से लेकर 1913 तक माना गया है।

3.4.2 कर्तृत्व

लघुकथा और निबन्धों में हृषीकेश भट्टाचार्य का नाम अत्यन्त प्रतिष्ठित है। उनकी कृतियों में विद्योदय, संस्कृतचन्द्रिका आदि का नाम आता है। विद्योदय नामक पत्रिका के सम्पादक हृषीकेश भट्टाचार्य थे। हृषीकेश भट्टाचार्य ने 'उदर-दर्शनम्' को ही ब्रह्म बताते हुए 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' की शैली में कुछ उदर सूत्र भी लिखे हैं। कालिदास नाम से भी इनका संस्कृत गद्य में निबन्ध है। यह निबन्ध बहुत प्रतिष्ठित है। विद्योदय पत्रिका में लिखे निबन्धों के संकलन के रूप में पण्डित पद्मसिंह शर्मा ने भट्टाचार्य जी के निबन्धों का संकलन 'प्रबन्धमंजरी' नामक शीर्षक से प्रकाशित किया था। हृषीकेश भट्टाचार्य साहित्य मर्मज्ञ, अनुवादक और बांग्ला व्याकरण के भी प्रणेता रहे हैं।

3.4.3 शैलीगत वैशिष्ट्य

हृषीकेश भट्टाचार्य की लेखन-शैली उस कालखण्ड में अन्य कवियों और लेखकों की अपेक्षा व्यक्तिगत विचारों को उन्नत बनाकर सुन्दर ललित शैली में प्रस्तुत करते हुए निबन्धों की रचना करने में प्रतिष्ठित रही है। कालिदास जैसे निबन्ध तो उस कालखण्ड में विभिन्न पत्रिकाओं में छपते रहे होंगे फिर भी इनके द्वारा इस शीर्षक पर लिखा गया 'कालिदासः' नामक निबन्ध विद्वानों में आदर का विषय बना था। 'प्राप्तपत्रम्' नामक शीर्षक से उन्हें मिले हुए किसी पत्र का सन्दर्भ देते हुए कभी वे किसी विषय पर स्वयं लिखते थे अथवा पुणे में निवास करने वाली अनामिका देवी की ओर से मिले पत्र के रूप में महिलाओं के महत्त्व पर और जो उनकी दशा स्वार्थी भारतीयों ने बना दी थी, उस पर अपने सटीक विचार रख देते थे। हृषीकेश भट्टाचार्य के गद्य की विशेषता यह थी की उनकी रचनाओं में बाणभट्ट की शैली

के भी दर्शन होते थे जैसे— वर्णनात्मक लम्बे वाक्य। भट्टाचार्य जी की संस्कृत शैली बिल्कुल नवीन और बाण के समान सुन्दर थी। इसीलिये ये 'अभिनव बाण' कहे जाते थे। इनकी बातें सर्वथा नवीन होती थीं और नए ढंग से कही हुई होती थीं। हृषीकेश भट्टाचार्य के गद्य की दो विशेषताएं इस श्लोक में देखने को मिलेंगी—

मुद्रयतिवदनविवरं मृतभाषावादिनां मुहेराणाम् ।

स्मरयति च भट्टबाणं भट्टाचार्यस्य सा वाणी ।।

प्रमुख गद्यकार भाग-2
अम्बिकादत्त व्यास, विश्वेश्वर
पाण्डेय, हृषीकेश भट्टाचार्य
और अन्य

3.5 पण्डिता क्षमाराव

3.5.1 जीवन-वृत्त

क्षमाराव का जन्म 4 जुलाई 1890 को हुआ था। इनका जन्म-स्थान पुणे बताया गया है। इनके पिता का नाम पण्डित शंकर पांडुरंग था। ये संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् थे। जब पण्डिता क्षमाराव 3 वर्ष की थीं तभी उनके पिता जी का देहावसान हो गया था। चाचा ने इनका पालन-पोषण किया था। वे राजकोट में बैरिस्टर थे। क्षमा की छोटी बहन का नाम तारा था। दोनों बहनें चाचा के घर रहते हुए भी अपने चचेरे भाइयों के पाठों को सुन-सुन कर याद कर लेती थीं। इन्हें पाठशाला नहीं भेजा जाता था। 12 वर्ष की आयु में ही तारा का भी देहावसान हो गया। इसी क्रम में क्षमा ने सौराष्ट्र से मैट्रिक की परीक्षा पास की। इसके बाद मुम्बई के विल्सन कॉलेज में क्षमा ने प्रवेश लिया जहाँ पर काणे साहब उनके शिक्षक रहे। अध्ययन की पूर्ति के पूर्व ही 20 वर्ष की आयु में क्षमा जी का विवाह मुम्बई के एक प्रसिद्ध डॉक्टर राव से हो गया। क्षमा जी ने अपने चिकित्सक पति के साथ यूरोप का भ्रमण किया। फ्रेंच, जर्मन तथा अंग्रेजी भाषाओं का खूब अभ्यास भी किया। कालक्रम के अनुसार 1953 में इनके पति का भी देहावसान हो गया। आजादी की लड़ाई तथा गाँधी जी के सत्याग्रह के प्रति आस्था होने के कारण क्षमा जी ने स्वतन्त्रता संग्राम पर तीन महाकाव्यों की रचना की। अयोध्या की संस्कृत कल्याण संस्था द्वारा 1938 में इन्हें पण्डिता की उपाधि से अलंकृत किया गया था। इसके पश्चात् 1942 ईस्वी में 'साहित्य चन्द्रिका' उपाधि से विभूषित हुईं।

3.5.2 कर्तृत्व

पण्डिता क्षमाराव की निम्नलिखित कृतियाँ उपलब्ध हैं —

- 1) **सत्याग्रहगीता**— इसमें कुल 18 अध्याय हैं। अनुष्टुप् छन्द में गीता के अनुकरण पर गाँधी जी के सत्याग्रह आन्दोलन के वर्णन के साथ 659 पदों में यह पुस्तक 1932 में प्रकाशित हुई। क्षमा जी ने इस पुस्तक में भगवद्गीता की स्थितप्रज्ञ का और गाँधी जी की महत्त्वता की एक जैसी तुलना की है।
- 2) **स्वराज्यविजयः** — इस पुस्तक में कुल 45 अध्याय हैं। यह ग्रन्थ 1962 में प्रकाशित हुआ। गाँधी जी की जीवन गाथा के साथ-साथ भारतीय स्वतन्त्रता के इतिहास का वर्णन इस पुस्तक में क्षमा जी ने किया है।
- 3) **मीरालहरी** — यह खण्डकाव्य है। यह ग्रन्थ 1944 में प्रकाशित हुआ। इसमें 2 खण्ड हैं। पूर्वखण्ड में 91 श्लोक तथा उत्तरखण्ड में 44 श्लोक हैं। पूरा का पूरा खण्डकाव्य शार्दूलविक्रीडित छन्द में रचा गया है। इसमें मीरा के उदात्त चरित्र का वर्णन किया गया है।

- 4) **तुकारामचरितम्** — यह महाकाव्य है। इसका प्रकाशन 1950 में हुआ। यह नौ सर्ग तथा 435 श्लोकों में निबद्ध है। इस महाकाव्य में क्षमाराव ने महाराष्ट्र के भक्त शिरोमणि तुकाराम जी के चरित्र का उदात्त चित्रण किया है।
- 5) **श्री रामदासचरितम्** — यह भी महाकाव्य है। 1953 में इसका प्रकाशन हुआ। छत्रपति वीर शिवाजी के गुरु रामदास का चरित्र इस महाकाव्य में वर्णित किया गया है।
- 6) **श्री ज्ञानेश्वरचरित्र** — इसमें आठ सर्ग हैं। यह भी महाकाव्य है। 1954 में सन्त योगी ज्ञानेश्वर का चरित्र वर्णन इस महाकाव्य में कवि के द्वारा किया गया है। इसके अतिरिक्त उत्तर सत्याग्रह गीता भी पण्डिता क्षमाराव जी की रचना है।
- 7) **ग्रामज्योतिः** — 1955 में ग्रामज्योतिः के अन्तर्गत तीन कथाओं का संग्रह किया गया।
 - क) **रेवा की कथा** — इसमें कृषक महिला के त्याग की कथा का वर्णन किया गया है जिसमें लगान न देने के कारण उसके घर में आग लगा दी जाती है।
 - ख) **कटुविपाक कथा** — इसमें किसान के सत्याग्रह किए जाने का वर्णन है जो कभी सत्याग्रही नहीं था।
 - ग) **वीरभा** — इस कथा में एक ऐसी महिला की गाथा का वर्णन किया गया है जिसने प्राणों की चिन्ता न करके राष्ट्रीय ध्वज को अपमानित होने से बचाया है। उपर्युक्त सभी कथाएं श्लोकों में लिखी गई हैं। इसके अतिरिक्त कथापंचकम् है जो पाँच कथाओं के लिए प्रसिद्ध है।

कथा मुक्तावली पूर्णरूप से गद्यमय है। इसके अतिरिक्त एकांकी, नाटक, तीन अंकों वाले चार नाटक, 35 लघुकथाएं जिनमें 23 अप्रकाशित हैं। पत्र-साहित्य, यात्रा-विवरण आदि अनेक संस्कृत गद्य की रचनाएं प्राप्त हैं। इन रचनाओं में पण्डिता क्षमाराव जी की देशभक्ति, साहित्य-प्रेम और पूर्णनिष्ठा की झलक दिखाई देती है।

3.5.3 शैलीगत वैशिष्ट्य

पण्डिता क्षमाराव की भाषा-शैली में समरसता, प्रसाद और प्रांजलता होने के साथ-साथ उत्कृष्टता के दर्शन होते हैं। विषय की नवीनता और जीवन की अनुभूतियों की गहराई के कारण क्षमाराव के गद्य और पद्य दोनों में एक अद्भुत शैली का दर्शन होता है। इनकी सभी रचनाओं को देखने से पता चलता है कि पण्डिता क्षमाराव का दृष्टिकोण बिल्कुल विशिष्ट और आधुनिक था। यह बात उनकी सभी रचनाओं में प्रतिबिम्बित होती है। रस वर्णन, अलंकार वर्णन से लेकर समाज प्रयोग, प्रकृति वर्णन और समाज की समसामयिक समस्याओं से लेकर राष्ट्र के गौरव पथ का चिन्तन आपकी शैली की विशेषता रही है। आपने अपनी लेखनी से कुशीलियों का विरोध किया है। उनके प्रति विद्रोह का भाव आपके लेखन में झलकता है। इसके अतिरिक्त भक्ति भाव में तन्मयता भी आपकी शैली की विशेषता है।

बोध प्रश्न 2

- 1) नीचे दिए गए कथनों में से सत्य (✓) तथा असत्य (✗) कथन का चयन कीजिए —
 - i) हृषीकेश भट्टाचार्य की शिक्षा लाहौर में नहीं हुई थी — ()
 - ii) 'चण्डीशतक' विश्वेश्वर पाण्डेय की कृति है — ()
 - iii) हृषीकेश भट्टाचार्य 'विद्योदय' नामक पत्रिका के सम्पादक थे — ()
 - iv) संस्कृत कल्याण संस्था द्वारा क्षमाराव को 'पण्डिता' की उपाधि दी गयी — ()

2) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

- सत्याग्रहगीता में कुल अध्याय हैं।
- स्वराज्यविजय की रचना है।
- मीरालहरी है।
- प्राप्तपत्रम् का सम्बन्ध से है।
- कथामुक्तावली की रचना है।

अभ्यास प्रश्न

- हृषीकेश भट्टाचार्य के शैलीगत वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिए।
- पण्डिता क्षमाराव की रचनाओं के विषय में संक्षेप में लिखिए।

3.6 डॉ. रामशरण त्रिपाठी

3.6.1 जीवन-वृत्त

डॉ. रामशरण त्रिपाठी का जन्म बाँदा जिले के मरका नामक ग्राम में हुआ था। बाँदा उत्तर प्रदेश का एक जनपद है। रामशरण जी संस्कृत भाषा के समर्पित साधक थे। इन्होंने विभिन्न महाविद्यालयों में अध्यापन भी किया। विद्वानों की परम्परा में इनका समय 1960 से 1977 तक निर्धारित किया है। इनके माता-पिता, भाई-बहन तथा बाल्यकाल के जीवन के विषय में बहुधा उल्लेख नहीं मिलता। फिर भी पुष्ट प्रमाणों के आधार पर यह कहा जाता है कि डॉ. रामशरण त्रिपाठी ने जीवन के अन्तिम दिनों में प्रयाग में निवास किया था। विद्वानों के बीच समादर पाने वाली रामशरण त्रिपाठी जी की रचनाएँ ही इस बात का प्रमाण हैं कि उन्होंने अत्यन्त परिश्रमपूर्वक संस्कृत के प्रत्येक पक्ष के शिक्षा ग्रहण की होगी।

3.6.2 कर्तृत्व

डॉ. रामशरण त्रिपाठी के पाँच ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं— रचानुवादरत्नाकर, सरलज्योतिर्विज्ञान, वेदान्तसार (भावबोधिनी टीका), ब्रह्मसूत्रप्रमुखभाष्यपञ्चकसमालोचनम्, कौमुदीकथाकल्लोलिनी। इनमें कौमुदीकथाकल्लोलिनी चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी से 1961 में प्रकाशित हुई है। यह रचना श्री गंगानाथ झा केंद्रीय संस्कृत विद्यापीठ इलाहाबाद से 1989 में प्रकाशित हुई। कौमुदीकथाकल्लोलिनी में 11 कल्लोलों (अध्यायों) में कौशाम्बी के राजा उदयन के पुत्र नरवाहनदत्त की जन्म से लेकर गान्धर्व-महाभिषेक तक की कथा वर्णित है।

3.6.3 शैलीगत वैशिष्ट्य

रामशरण त्रिपाठी के ग्रन्थों का अध्ययन करने से यह प्रतीत होता है कि उनमें कवित्व की प्रतिभा प्रखर थी। प्रत्यय के प्रयोग से कथानक के साथ-साथ भाषा का ठीक से पाठक को ज्ञान कराना रचनाकार की एक विशेष विशेषता है। इस प्रकार की शैली केवल रावणवध महाकाव्य की रचना के समय प्रयुक्त की गई थी। कारक और समास का एकसाथ ज्ञान कराते हुए गद्य में रचना के माध्यम से अध्येता के ज्ञान को साहित्य और व्याकरण दोनों से परिपूर्ण करने वाली शैली के प्रयोक्ता रामशरण त्रिपाठी जी रहे हैं। साहित्य के माध्यम से व्याकरण के शिक्षा देना अथवा व्याकरण का वर्णन करते हुए साहित्य की शिक्षा दे देना, दोनों प्रकार की कलायें कवि की शैली में विद्यमान हैं।

3.7 अन्य गद्यकार

3.7.1 धनपाल

संस्कृत गद्य में लेखन करने वाले धनपाल का समय 10 वीं शताब्दी माना गया है। आचार्य बलदेव उपाध्याय अपनी पुस्तक 'संस्कृत साहित्य के इतिहास' में इनका समय इसी प्रकार मानते हैं। धनपाल कश्यप गोत्र में उत्पन्न जैन थे। यह मुंजराज के सभासद थे तथा भोजराज के चाचा थे। 'प्रबन्धचिन्तामणि' में इनके जीवन के बारे में उल्लेख मिलता है। इनके पिता का नाम सर्वदेव था वह भी उज्जैन के कश्यप गोत्र के ब्राह्मण थे। यह दो भाई थे, दोनों ने जैन धर्म की दीक्षा ग्रहण की थी। तत्कालीन राजाओं के द्वारा इन्हें विशेष सम्मान प्राप्त था। राजा ने इनकी काव्य-प्रतिभा से प्रसन्न होकर इनको 'सरस्वती' की उपाधि दी थी।

भोजराज के दरबार में धनपाल की बहुत प्रतिष्ठा थी। उन्हीं की प्रेरणा से इन्होंने 'तिलकमंजरी' नामक गद्यकाव्य की रचना की। तिलकमंजरी धनपाल की रचना का एकमात्र आधार है। यद्यपि इनकी अन्य दो रचनाएं भी हैं—ऋशभपंचाशिका तथा पांडु लच्छीव, जिसे प्राकृत लक्ष्मी कहते हैं। इन दोनों रचनाओं ने धनपाल को एक सफल कवि के रूप में उतना प्रतिष्ठित नहीं किया जितना वे साहित्य जगत् में तिलकमंजरी की रचना के कारण हुए। संस्कृत गद्य में बाणभट्ट की प्रतिभा की अलौकिकता के सामने अन्य कोई कवि आज तक सफल नहीं हो सका। बाणभट्ट की शैली ने गद्यकाव्य की एक ऐसी दिशा को प्रदर्शित किया, एक ऐसे उन्मेष का निदर्शन किया, जिसके कारण अन्य गद्य-कवि उस मार्ग पर चलने में अपना गौरव समझने लगे। धनपाल की शैली शोभन शैली है। इन्होंने बाणभट्ट के मार्ग का अनुसरण किया है। अपेक्षाकृत सुबोध शैली में तिलकमंजरी की रचना की है। धनपाल जी की शैली में दुरुहता नहीं है। भाषा प्रांजल है कठिन शब्दों के प्रति अभिरुचि नहीं है अतः शैली सुबोध है। बाणभट्ट के समान ही धनपाल भी उपमा, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों के प्रयोग में निपुण दिखाई देते हैं। इनकी भाषा और शैली के विन्यास में रस प्रयोग के दर्शन हो जाते हैं। धनपाल की भाषा व्यावहारिक विषयों के यथार्थ चित्रण की क्षमता से भरपूर है।

3.7.2 वादीभसिंह

वादीभसिंह की जन्म-भूमि के उल्लेख के अभाव में इनके मूलनाम ओड्यदेव के आधार पर श्री पं.के. भुजबली शास्त्री ने इन्हें तमिल प्रदेश निवासी कहा है और वी. शेषगिरि राव ने अनुमान किया है कि वादीभसिंह मूलतः कलिंग (तेलंगु) के गन्जाम के निवासी हो सकते हैं। भुजबली शास्त्री का कथन है कि तमिल निवासी होते हुए भी वादीभसिंह की साहित्यिक साधना की भूमि मैसूर प्रान्त ही थी क्योंकि मैसूर प्रान्त के अन्तर्गत कई स्थानों में उपलब्ध शिलालेख इस उपर्युक्त तथ्य के साक्षीभूत हैं।

बाण की दोनों कृतियों 'हर्षचरित' और 'कादम्बरी' से वादीभसिंहकृत 'गद्यचिन्तामणि' प्रभावित है क्योंकि प्रस्तुत ग्रन्थ में प्रदत्त उपदेश 'कादम्बरी' के शुकनासोपदेश की छाया ही है। इसके अतिरिक्त 'गद्यचिन्तामणि' के बहुत से वर्णन-स्थल 'हर्षचरित' के अनुरूप हैं। अतः वादीभसिंह निर्विवाद रूप से बाण के परवर्ती हैं।

“कर्मकोद्रवरसेन हि मत्तः किं किमेत्यशुभधाम न जीवः” के आधार पर उल्लेख किया है कि वादीभसिंह और वादीराज दोनों गुरुभाई थे और सोमदेव उनके गुरु थे। सोमदेव ने 'यशस्तिलकचम्पू' की रचना शकाब्द 881 तदनुसार 959 ई. में की थी तथा वादीराज ने 'पार्श्वचरित' का निर्माण शकाब्द 947 तदनुसार 1025 ई. में किया था। अतः वादीभसिंह का

समय ईसा की एकादश शताब्दी होना चाहिए। आचार्य पण्डित बलदेव उपाध्याय जी ने भी उपर्युक्त तिथि ही मानी है। वादीभसिंह दार्शनिक तथा कवि दोनों थे। 'गद्यचिन्तामणि' इनकी प्रमुख गद्यप्रबन्धात्मक रचना है। कवि ने उसी कथा को 'क्षत्रचूड़ामणि' नामक पद्यकाव्य के रूप में प्रणीत किया। दोनों ग्रन्थ एकादश लम्बों में लिपिबद्ध हैं। क्षत्रचूड़ामणि का उल्लेखनीय वैशिष्ट्य है कि इसमें कुमार जीवन्धर के जीवन-चरित के वर्णन के साथ-साथ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूप पुरुषार्थचतुष्टय का वर्णन नीतिपुरस्सर किया गया है। इस दृष्टिकोण से इस ग्रन्थ का समस्त संस्कृत वाङ्मय में अद्वितीय महत्त्व है। इस ग्रन्थ का मूलरूप में प्रकाशन सर्वप्रथम टी.एस. कुप्पूस्वामी तथा पं. मोहनलाल जी ने किया है।

वादीभसिंह की दोनों रचनायें 'गद्यचिन्तामणि' और 'क्षत्रचूड़ामणि' पूर्ववर्ती कवियों कालिदास, सुबन्धु, बाण, दण्डी आदि की कृतियों से प्रभावित हैं। कवि ने क्लिष्ट अलंकृत गद्य-शैली में 'गद्यचिन्तामणि' का प्रणयन किया है। यह काव्य 'क्षत्रचूड़ामणि' के समान ही एकादश लम्बों में विभक्त है।

इस काव्य में सानुप्रासिक समासान्त पदावली एवं विरोधाभास और परिसंख्या आदि अलंकारों का चमत्कार सर्वथा दर्शनीय है। काव्य की शब्दगत सुषमा को सुरक्षित रखने के लिए कवि ने पुनरुक्ति से बचने हेतु नये-नये शब्दों का सृजन किया है।

'गद्यचिन्तामणि' की भाषा की प्रवाहयुक्तता अभीष्ट रस की अभिव्यक्ति में सहायक सिद्ध होती है। प्रस्तुत काव्य की इन्हीं विशेषताओं का उल्लेख करते हुए इसके प्रथम सम्पादक पं० कुप्पूस्वामी ने कहा है कि यह काव्य पदों की सुन्दरता, श्रवणीय शब्दों की रचना, सरल कथासार, चित्त को आश्चर्य में डालने वाली कल्पनाएं और हृदय में प्रसन्नता उत्पन्न करने वाले धर्मोपदेश आदि से सुशोभित है।

“अस्य काव्यपथे पदानां लालित्यं, श्राव्यः शब्द-सन्निवेशः, निरर्गला वाग्वैखरी, सुगमः कथासारागमः, चित्त-विस्मापिकाः कल्पनाश्चेतः प्रसादजनको-धर्मोपदेशो विलसन्ति विशिष्टगुणाः।”

काव्यशास्त्रीय सभी नौ रसों का 'गद्यचिन्तामणि' में परिपाक सम्यक् रीति से हुआ है। इस गद्यप्रबन्ध का अंगी रस शान्त है और समस्त शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स और अद्भुत शेष अन्य रस स्थान-स्थान पर अपनी गरिमा प्रकट करते हैं। कथा के नायक की गन्धर्वदत्ता आदि आठ नई नवेली वधुएं हैं। उनके साथ पाणिग्रहणोपरान्त शृंगार रस के संयोग तथा वियोग उभय पक्ष का परिपाक हुआ है, पर कवि ने वर्णन में अश्लीलता नहीं आने दी है।

बोध प्रश्न 3

- 1) नीचे दिए गए कथनों में से सत्य (✓) तथा असत्य (✗) कथन का चयन कीजिए –
 - i) 'तिलकमंजरी' के रचयिता वादीभसिंह हैं – ()
 - ii) 'गद्यचिन्तामणि' के रचयिता धनपाल हैं – ()
 - iii) 'क्षत्रचूड़ामणि' वादीभसिंह की रचना है – ()
 - iv) वादीभसिंह का समय ईसा की एकादश शताब्दी है – ()

2) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

- i) कौमुदीकथाकल्लोलिनी में कल्लोल हैं।
- ii) धनपाल का समय है।
- iii) धनपाल के पिता का नाम था।
- iv) गद्यचिन्तामणि का अंगी रस है।

अभ्यास प्रश्न

- i) निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए –
 - क) विश्वेश्वर पाण्डेय
 - ख) रामशरण त्रिपाठी
 - ग) धनपाल

3.8 सारांश

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आपने जाना कि बाणभट्ट के पश्चात संस्कृत गद्य की चली आ रही विशाल परम्परा में पण्डित अम्बिकादत्त व्यास का एक महत्वपूर्ण स्थान है। अम्बिकादत्त व्यास जी ने संस्कृत गद्य लेखन की एक नई विधा में उपन्यास का लेखन करके सम्पूर्ण साहित्य जगत् में मानक स्थापित किया। उनके द्वारा रचित उपन्यास का नाम 'शिवराजविजय' है। इनकी भाषा सहज, सरल और मनोहर है। इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए पण्डित हृषीकेश भट्टाचार्य ने भी विद्योदय पत्रिका का सम्पादन करने के साथ-साथ प्राप्तपत्रम् में गद्य-लेखन करके पाठक जगत् को एक नवीन लाभ पहुंचाया। इसके अतिरिक्त विद्योदय पत्रिका में लिखे निबन्धों के संकलन के रूप में पण्डित पद्मसिंह शर्मा ने भट्टाचार्य जी के निबन्धों का संकलन 'प्रबन्धमंजरी' नामक शीर्षक से प्रकाशित किया। हृषीकेश भट्टाचार्य बांग्ला भाषा के ज्ञाता होते हुए साहित्य मर्मज्ञ अनुवादक और बांग्ला व्याकरण के प्रणेता भी रहे हैं। विश्वेश्वर पाण्डेय ने 'मन्दारमंजरी' नामक एक अद्भुत गद्य ग्रन्थ की रचना की जो संस्कृत जगत् के विद्वानों में आदर का पात्र बनी। आचार्य विश्वेश्वर पाण्डेय की शैली और उनकी लेखन कला से आचार्य परम्परा से लेकर पाठक परम्परा तक सभी प्रशंसक बने। संस्कृत गद्य लेखन के इसी क्रम में पण्डिता क्षमाराव का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है जिन्होंने गाँधी जी के सत्याग्रह से प्रेरित होकर सत्याग्रह गीता आदि अनेक ग्रन्थों की रचना की। साथ-साथ इन्होंने लघु कथाओं का भी प्रणयन किया जिनमें कुछ प्रकाशित और कुछ अप्रकाशित रहीं। डॉ. रामशरण त्रिपाठी ने व्याकरण के माध्यम से साहित्य के शिक्षा और साहित्य के माध्यम से व्याकरण के शिक्षा देने के लिए दो ग्रन्थों की रचना की। रावणवध महाकाव्य की रचना प्रकृति इनकी रचनाओं से मेल खाती है। धनपाल ने 'तिलकमंजरी' नामक ग्रन्थ की रचना करके एक चमत्कार का अनुभव कराया है। धनपाल जी की रचना संस्कृत गद्य में प्रतिष्ठित है।

'गद्यचिन्तामणि' वादीभसिंह की रचना है जिसमें उन्होंने सुबोध शैली का प्रयोग करके बाणभट्ट से चली आ रही परम्परा का सफल संरक्षण किया है। फिर भी इनकी रचनाओं में नवीनता पाई जाती है। इस सम्पूर्ण इकाई का अध्ययन करने के बाद आप अम्बिकादत्त व्यास से लेकर वादीभसिंह तक की सम्पूर्ण गद्य परम्परा का उल्लेख कर सकेंगे।

3.9 शब्दावली

प्रतिष्ठा	—	संस्थापित
विलक्षण	—	असाधारण
परम्परागत	—	पूर्वागत
प्रेरणा	—	प्रेरित करना
प्रवीण	—	कुशल
आराधना	—	उपासना
अलौकिक	—	अद्भुत, लोक में सर्वोत्तम
उत्कृष्ट	—	श्रेष्ठ, प्रशंसनीय
प्रांजल	—	सीधा, सरल
प्रकाण्ड	—	योग्य, निपुण
उदात्त	—	उन्नत

3.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- 1) संस्कृत साहित्य का इतिहास — आचार्य बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा प्रकाशन वाराणसी
- 2) संस्कृत साहित्य का इतिहास — वाचस्पति गैरोला, चौखम्बा प्रकाशन वाराणसी
- 3) संस्कृत साहित्य का इतिहास — डॉ. शिवमूर्ति शर्मा, दया पब्लिशिंग हाउस इलाहाबाद
- 4) संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास — कपिलदेव, द्विवेदी, रामनारायणलाल विजयकुमार, कटरा, इलाहाबाद।
- 5) संस्कृत साहित्य का इतिहास — डॉ. उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', चौखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी।

3.11 बोध/अभ्यास प्रश्नों उत्तर

बोध प्रश्न 1

- 1) i) असत्य (ii) असत्य (iii) असत्य (iv) सत्य
- 2) i) अष्टमी (ii) घटिकाशतक (iii) दो
- 3) i) आर्यभाषासूत्रधार पण्डित अम्बिकादत्त व्यास की रचना है।
ii) शिवराजविजय के रचयिता अम्बिकादत्त व्यास हैं।
iii) विश्वेश्वर पाण्डेय का जन्म अल्मोड़ा में हुआ था।
iv) अलंकार-कौस्तुभ विश्वेश्वर पाण्डेय की रचना है।
v) मन्दारमंजरी के लेखक विश्वेश्वर पाण्डेय हैं।

बोध प्रश्न 2

- 1) (i) असत्य (ii) असत्य (iii) सत्य (iv) सत्य
- 2) (i) 18 (ii) पण्डिता क्षमाराव (iii) खण्डकाव्य (iv) हृषीकेश भट्टाचार्य (v) क्षमाराव

बोध प्रश्न 3

- 1) (i) असत्य (ii) असत्य (iii) सत्य (iv) सत्य
- 2) (i) 11 (ii) 10वीं शताब्दी (iii) सर्वदेव (iv) शान्त

अभ्यास प्रश्न

इन प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।



ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 4 नीति और लोककथाएँ

इकाई की रूपरेखा

- 4.0 उद्देश्य
- 4.1 प्रस्तावना
- 4.2 नीति तथा लोककथाओं का उद्भव और विकास
- 4.3 पंचतन्त्र
- 4.4 हितोपदेश
- 4.5 वेतालपंचविंशतिका
- 4.6 सिंहासनद्वात्रिंशिका
- 4.7 पुरुष-परीक्षा
- 4.8 सारांश
- 4.9 शब्दावली
- 4.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें
- 4.11 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

4.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप —

- संस्कृत साहित्य के नीतिकारों का परिचय बता सकेंगे।
- संस्कृत साहित्य की प्रमुख नीतियों की विशेषताएं समझा सकेंगे।
- नीतियों का उद्भव कब हुआ तथा नीतिपरक कथाएं किन-किन ग्रन्थों में हैं, इन्हें आप भली-भाँति समझा सकेंगे।
- उपदेशपरक नीति कथाओं की रचना करके कवियों ने जनमानस को व्यावहारिक नीतिशास्त्र बताया है, इस तथ्य का आप भली-भाँति विश्लेषण कर सकेंगे।
- मानव व्यवहार के अतिरिक्त पशु-पात्र प्रधान कथाओं के द्वारा भी समाज को नीति बताने वाली कथाएँ लिखी गई हैं, उन कथाओं का आप परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- संस्कृत साहित्य में कवियों ने लोककथाओं के माध्यम से रुचिकर संवादों में व्यावहारिक नीतिशास्त्र का उपदेश किया है, आप इसका उल्लेख कर सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य में वैदिक युग से ही नीतिपरक उपदेशों की परम्परा चली आ रही है, जिसमें विभिन्न मनुष्यों ने अपने अनुसार नीतिकथाओं के विधानों एवं नीतिवचनों के वर्णन किए हैं। इस इकाई के अन्तर्गत आप संस्कृत वाङ्मय में वर्णित नीतियों का अध्ययन करेंगे। वस्तुतः नीति के उद्भावक ब्रह्मा और प्रतिष्ठापक विष्णु हैं। कालान्तर में मध्यकाल से लेकर आधुनिक युग तक नीतियों का अत्यधिक प्रसार हुआ है, जिनमें शुक्रनीति, चाणक्यनीति, विदुरनीति, पंचतन्त्र, हितोपदेश आदि नीतियाँ प्रमुख व प्रसिद्ध हैं। विष्णुशर्मा के पंचतन्त्र में पशु-पात्रों का चयन करके सभी भागों में अत्यन्त व्यावहारिक नीतिशास्त्र की रचना की गई है।

पंचतन्त्र की कथाएं पशुओं में मानवोचित क्रियाकलापों का दर्शन कराती हैं। पंचतन्त्र के आधार पर नारायण पण्डित ने हितोपदेश नामक कथा-ग्रन्थ की रचना की जिसमें लोक कथाओं के माध्यम से उन्होंने समाज को शिक्षित करने का प्रयास किया। हितोपदेश के भी चार भाग किए गए जिनमें विभिन्न रूप से लोककथाएं, कूटनीतियाँ आदि समाहित की गई हैं। इस प्रकार वैदिक युग से लेकर सिद्धान्तपरक नीतियों की रचना के अतिरिक्त आधुनिक काल में लोककथाओं का विकास बेतालपच्चीसी तथा सिंहासनबत्तीसी नामक ग्रन्थों में रुचिकर कथाओं के माध्यम से व्यावहारिक नीतिशास्त्र का उपदेश पदे-पदे दृष्टिगोचर होता है। पुरुष-परीक्षा नामक कथाग्रन्थ तो नाम से ही पुरुषों की परीक्षा का ग्रन्थ लगता है।

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप वैदिक काल से नीति की उत्पत्ति का ज्ञान करते हुए कथाओं के माध्यम से किस प्रकार संस्कृत साहित्य में नीतियों का उपदेश किया गया है, इसका सहज विश्लेषण कर सकेंगे।

4.2 नीति तथा लोककथाओं का उद्भव और विकास

नीति शब्द 'नी' धातु में 'वित्' प्रत्यय से जुड़कर बना है, जिसका अर्थ है जिस मार्ग (व्यवहार) से व्यक्ति और समाज का जीवन सरलता के साथ व्यतीत हो उसे नीति कहते हैं। नीति का अर्थ सही मार्ग की ओर ले जाना है, नीति का सही रूप में पालन करने से व्यक्ति एवं समाज दोनों का कल्याण होता है।

नीति के अर्थ को हम कई प्रकार से जान सकते हैं। मनुष्य जीवन के वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए साधन रूप में जिन बातों की आवश्यकता है, वही नीति है। समाज में रहने वाले व्यक्ति, वर्ग, जाति आदि भिन्न-भिन्न घटक हैं। यहाँ रहकर परस्पर उनको कैसा व्यवहार करना चाहिए इसके कुछ विशेष नियम होते हैं, वही नीति है। चार पुरुषार्थ— धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष इन्हें प्राप्त करने के उपायों का निर्देश जिसके द्वारा होता है वही नीति है। नीति शब्द का अर्थ होता है ले जाना, पहुँचाना, दिग्दर्शन कराना, नेतृत्व करना तथा उपायों को बतलाना। नीतिवचनों के अनुसार यदि मनुष्य व्यवहार करता है तो वह अभीष्ट फल प्राप्त करता है, मनुष्य यदि नीति के विरुद्ध आचरण करता है तो वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में असफल हो जाता है। नीतिशास्त्र के ज्ञाता चाणक्य का सर्वप्रथम वाक्य है— 'सुखस्य मूलं धर्मः' सुख का मूल आधार धर्म है इसलिये सबसे उत्तम नीति धर्माचरण ही है, क्योंकि संसार का प्रत्येक प्राणी सदैव सुख की ही आकांक्षा रखता है और नीति का सहारा भी वह केवल अपने सुख के लिए ही करता है। ऋग्वेद में नीति का प्रयोग अभीष्ट फल की प्राप्ति से है— 'ऋजुनीति नो वरुणो मित्रो नयतु विद्वान्' (ऋक् 1/90/1) इसमें मित्र और वरुण से प्रार्थना करते हुए कहा है कि हमें ऋजु अर्थात् सरल नीति से अभीष्ट फल की सिद्धि होती है। संस्कृत भाषा में नीति साहित्य का विशाल भण्डार है। इसमें नीति उपदेशों का संग्रह है, नीतिशास्त्र के उद्भावक परमपिता ब्रह्मा, प्रतिष्ठापक विष्णु और प्रवर्तक शंकर हैं। वैदिक संस्कृत साहित्य में नीति-वचनों का प्रचुर भण्डार पड़ा है वहीं दूसरी ओर लौकिक संस्कृत साहित्य में पुराणों, स्मृतियों, रामायण, महाभारत आदि महाकाव्यों एवं विभिन्न नाटकों में भी भिन्न-भिन्न धाराओं से परिपूर्ण नीति का भण्डार दृष्टिगोचर होता है। नीति-वचनों के विशेष संग्रह वाल्मीकीय रामायण के सातवें काण्ड में भरे पड़े हैं। महाभारत में भी उद्योग पर्व के आठवें अध्याय में महात्मा विदुर द्वारा कथित नीति-वचन विदुर नीति के नाम से सुप्रसिद्ध है। इसी प्रकार महाभारत के ही भीष्म पर्व के 25वें तथा 42वें अध्याय में सम्पूर्ण विश्व में विख्यात श्रीमद्भगवद्गीता तथा योगशास्त्र के साथ-साथ ब्रह्मविद्या से सम्बन्धित एक महत्त्वपूर्ण नीतिशास्त्र है। महाभारत के शान्ति पर्व का वर्णित राजधर्म तो राजनीति ही है, इन समस्त नीतियों की चर्चा परवर्ती नीति ग्रन्थों में पदे-पदे उद्धृत की गई,

जैसे— विष्णुशर्मा के पंचतन्त्र और हितोपदेश आदि में भी महाभारत की नीतियों की चर्चा है। भारतीय इतिहास के महामनीषी चाणक्य ने अपने ग्रन्थ कौटिल्य अर्थशास्त्र के अन्तर्गत नीति-वचनों का वर्णन किया है, इसके अतिरिक्त चाणक्यनीति, चाणक्यनीतिदर्पण और चाणक्यनीतिसूत्र आदि ग्रन्थों में भी उनके नीति वचनों का संग्रह है।

वैदिक साहित्य से लेकर लौकिक संस्कृत साहित्य में राजनीति, धर्मनीति आदि का सृजन प्रणयन तो हुआ किन्तु शुक्र, विदुर, चाणक्य, भर्तृहरि आदि प्रमुख नीतिकारों ने नीति सिद्धान्तों के अनुसरण में वर्णन की प्रधानता रखी। इसके अलावा नीति साहित्य में एक अलग प्रकार की विधा के अन्तर्गत उपदेशक नीतिकथाओं के माध्यम से, पशु पात्रों के संवादों के माध्यम से रुचिकर कथाओं को आधार बनाते हुए विष्णुशर्मा ने पंचतन्त्र में नीति का सृजन किया। विष्णुशर्मा का पंचतन्त्र संस्कृत के कथासाहित्य के अन्तर्गत उपदेशप्रद पशुपात्र प्रधान कथाग्रन्थ है। सामाजिक सरोकारों की अनुभूति के साथ-साथ मनुष्य और प्रकृति के किस प्रकार के सम्बन्ध हैं या मनुष्य की भाँति पशुओं का भी समाज किस तरह अपने भावों को प्रकट करता है, किन-किन नियमों के अनुसार जीवन की सफलताओं के दर्शन करता है। इस तरह के नीतिपरक रुचिकर तथ्य विष्णुशर्मा के पंचतन्त्र, हितोपदेश और कथासरित्सागर में तो पाए ही जाते हैं, प्रसिद्ध लोककथाओं में नीतियों का विकास संस्कृत की दो कथाओं में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है — वेतालपंचविंशतिका तथा सिंहासनद्वित्रिंशिका। यह दोनों संस्कृत की लोककथाएँ हैं। इन्हें हिन्दी में सिंहासनबत्तीसी तथा वेतालपच्चीसी कहते हैं। इस प्रकार आपने देखा कि नीति का उद्भव मानवीय मूल्यों के मध्य तो हुआ ही है बल्कि कवियों ने पशुओं के संवाद और उनकी जीवन शैली में भी नीतियों का सृजन किया है। अतः नीतियों का ज्ञान करने के साथ-साथ लोककथाओं के माध्यम से भी नीतियों को भली-भाँति जानने के लिए हमें सर्वप्रथम पंचतन्त्र नामक ग्रन्थ का सिंहावलोकन करना चाहिए।

4.3 पंचतन्त्र

संस्कृत के कथासाहित्य में यह ग्रन्थ पशु-पात्रों से प्रधान रूप से सुशोभित किया गया है। वैदिक साहित्य, महाभारत तथा बौद्ध और जैन साहित्य में भी इस ग्रन्थ के विकास के बीज हैं। इस ग्रन्थ में विष्णुशर्मा ने पशुओं में मानवोचित क्रियाकलाप का दर्शन कराया है। पंचतन्त्र के अध्ययन से ही पता चल जाता है कि इसके रचयिता व्यावहारिक नीतिशास्त्र के अपार ज्ञाता थे। इस ग्रन्थ की सम्पूर्ण कथाओं में पशु-पात्रों के संवादों का ही अध्ययन किया जाता है, इनमें मानव क्रिया-कलापों का पूरा-पूरा आरोप दिखाई देता है। सम्भवतः छान्दोग्य उपनिषद् में श्वानों की कथा, जिसमें सभी श्वान अपने एक श्वान नेता की तलाश करते हैं, ऐसी कथा भी पंचतन्त्र की रचना में प्रेरणा बनी होगी। नाम से ही लगता है कि पंचतन्त्र के 5 भाग होंगे। सम्पूर्ण ग्रन्थ पाँच तन्त्रों में उपलब्ध है— मित्रभेद, मित्रसम्प्राप्ति, काकोलुकीय, लब्धप्रणाश तथा अपरीक्षितकारकम्। पंचतन्त्र अपने इन्हीं पाँच भागों में अनेक कथाओं के माध्यम से व्यावहारिक नीतिशास्त्र का प्रदर्शन करता है।

मित्रभेद के अन्तर्गत एक चतुर शृगाल के द्वारा पिंगलक नामक सिंह और संजीवक नामक वृषभ के बीच मित्रता में फूट डालने के लिए मुख्य कथा का सृजन किया गया है। इसमें राजनीति से सम्बन्धित विवादों के साथ-साथ पशु पक्षियों के बीच मनोरंजक कथाएं प्राप्त होती हैं। इसमें कुल 22 कथाएँ हैं— पिंगलक, संजीवक-दमनक कथा, कीलोत्पाटी वानर की कथा, शृगाल और दुंदुभी की कथा, दन्तिल और गोरम्भ की कथा, आषाढ भूति-प्रतिभूति की कथा, गौरैया और बन्दर की कथा, धर्म बुद्धि और पाप बुद्धि की कथा, कृष्ण सर्प एवं नकुल की कथा, राजा और उसके सेवक वानर की कथा आदि कुल प्रमुख 22 कथाएँ हैं। इन

कथाओं में लोकरंजन के साथ-साथ नीतिपरक उपदेशों की प्राप्ति भी सहज हो जाती है। मित्रसम्प्राप्ति नामक भेद के अन्तर्गत चित्रग्रीव नामक कपोत, हिरण्यक नामक मूषक, लघुपतनक नामक काक, चित्रांग नामक हरिण, मन्थरक नामक कच्छप की कथाएं मुख्य रूप से कही गई हैं। इन कथाओं में मित्र संग्रह के आकर्षक रूप का वर्णन किया गया है। काकोलुकीय नामक पंचतन्त्र के तीसरे तन्त्र में काक और उल्लू के जन्मजात बैर भाव के दृष्टान्त के द्वारा युद्ध और सन्धि के बहुत ही रुचिकर सिद्धान्तों का वर्णन किया गया है। इसके अन्तर्गत कुल 19 कथाओं के वर्णन प्राप्त होते हैं। लब्धप्रणाश नाम के चौथे तन्त्र में रक्तमुख नामक वानर तथा करालमुख नाम के मगर की कथा के द्वारा उपलब्ध वस्तु के नष्ट हो जाने की स्थितियों पर प्रकाश डालते हुए समाज को नीतिपरक शिक्षा प्रदान की गई है। इस तन्त्र में कुल 12 कथाएं मिलती हैं— वानर तथा मगर की मैत्री कथा से लेकर सियार और सिंह की कथा तथा कुत्ते की कथा के साथ इस तन्त्र का वर्णन समाप्त किया गया है। अपरीक्षितकारकम् नामक पंचतन्त्र के पाँचवें तन्त्र में बताई गई कथाएं हमें यह शिक्षा देती हैं कि बिना सोचे समझे किए गए कार्यों का परिणाम सफल और सुखदाई नहीं होता। अतः कोई भी कार्य सोच समझ कर करना चाहिए इन्हीं से सम्बन्धित कुल 14 कथाएं इस तन्त्र में बताई गई हैं। जिसमें प्रथम कथा मणिभद्र नामक श्रेष्ठी तथा नापित की है, अन्तिम कथा भारुंड नामक पक्षी की है। पंचतन्त्र नामक कथाग्रन्थ बहुत ही लोकप्रिय रहा है। भारत के अलावा भी इसकी वाचनाएं प्राप्त होती हैं, जिसमें तन्त्राख्यायिका पंचतन्त्र की कश्मीरी वाचना कही जाती है। दक्षिण भारतीय पंचतन्त्र भी उपलब्ध होता है, नेपाली पंचतन्त्र भी पाया जाता है। इस वाचना के अन्तर्गत गद्य और पद्य दोनों का ही अस्तित्व प्राचीन काल से विद्यमान था। पंचतन्त्र का हितोपदेश नामक संस्करण ईसा की नवीं शताब्दी के आस-पास नारायण भट्ट नामक विद्वान् ने बनाया था इसी के आधार पर उन्होंने हितोपदेश नामक लोकप्रिय कथाग्रन्थ का प्रणयन किया। अतः पंचतन्त्र नामक नीतिप्रद कथाग्रन्थ का संक्षिप्त परिचय प्राप्त कर लेने के पश्चात् अब आप आगे हितोपदेश का अध्ययन करके दोनों कथाग्रन्थों का प्रतिपाद्य बता सकेंगे।

4.4 हितोपदेश

यह बहुत लोकप्रिय और व्यापक कथाग्रन्थ है। इसकी रचना पंचतन्त्र के आधार पर उपदेशपरक कथाग्रन्थ के रूप में की गई है। नारायण पण्डित नामक विद्वान् ने इसकी रचना की है जो राजा धवलचन्द्र के आश्रित बताए जाते हैं। वस्तुतः यह रचना पंचतन्त्र पर ही आधारित है किन्तु पंचतन्त्र के मूल कलेवर में पर्याप्त परिवर्तन करते हुए कवि ने हितोपदेश के कलेवर को चार भागों में बाँटा है— मित्रलाभ, सुहृदभेद, विग्रह, सन्धि। इन्हीं चार भागों के अन्तर्गत रचनाकार के द्वारा 17 नवीन कथाओं का सन्निवेश करते हुए 7 पशुपात्र प्रधान कथाएँ, 5 कूटनीतिमूलक कथाएं तथा तीन लोककथाश्रित और दो उपदेशात्मक कथाएं लिखी गई हैं। बालकों को कथा के द्वारा नीति की शिक्षा देना ही हितोपदेश का लक्ष्य है— ‘कथाच्छालेनबालानां नीतिस्तदिह कथ्यते’। इस उद्देश्य की पूर्ति में नारायण पण्डित सर्वदा सफल भी हैं। एक ओर हितोपदेश नीतिकथा के माध्यम से अनुशासित जीवन, सफल जीवन, अनिन्दित जीवन जीने का मार्ग सिखाता है तो दूसरी ओर हितोपदेश संस्कृत शिक्षण की अद्भुत पुस्तक मानी गई है। यूरोप में अनेक भाषाओं में हितोपदेश का किया गया अनुवाद इस बात का प्रमाण है। प्रस्तावना को लेकर मित्रलाभ में कुल 10 वर्णन हैं जिनमें नौ कथाएं हैं। लघुपतनक नाम के कौवे की कथा, प्रथम कथा है तथा कर्पूरतिलक नामक हाथी की कथा अन्तिम कथा है। हितोपदेश के द्वितीय भाग सुहृदभेद में कुल नौ कथाएं मिलती हैं जिनमें वर्धमान नामक वणिक की कथा से लेकर टिटिहरी के जोड़े तथा समुद्र की कथा का वर्णन पाया जाता है। तृतीय भाग विग्रह के अन्तर्गत भी 10 कथाएँ हैं

जिनमें हिरण्यगर्भ नामक राजहंस, चित्रवर्णन नामक मयूर तथा दीर्घमुख नामक बगुले की कथा से प्रारम्भ करके चूड़ामणि नामक क्षत्रिय, नापित तथा भिक्षुक की कथा के साथ तीसरे भाग का वर्णन समाप्त होता है। हितोपदेश के चतुर्थ भाग सन्धि में कुल 13 कथाएँ हैं जिनमें प्रथम कथा हंस और मयूर के मेल की है। इसके अलावा अन्तिम तेरहवीं कथा माधव नामक ब्राह्मण और उसके द्वारा पालित नेवले की है।

बोध प्रश्न 1

- 1) नीचे दिए गए कथनों में से सत्य (✓) तथा असत्य (✗) कथन का चयन कीजिए –
 - i) पंचतन्त्र के रचयिता नारायण पण्डित हैं – ()
 - ii) पंचतन्त्र का विभाजन पाँच भागों में हुआ है – ()
 - iii) मित्र सम्प्राप्ति पंचतन्त्र का भाग नहीं है – ()
 - iv) नीति का अर्थ अभीष्ट फल की प्राप्ति कराना है, ऐसा ऋग्वेद का कथन है— ()
 - v) विष्णुशर्मा ने हितोपदेश की रचना की है – ()
 - vi) पशुपात्र प्रधान कथाग्रन्थ का नाम पंचतन्त्र है – ()
- 2) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –
 - i) पिंगलक, दमनक कथा का वर्णन में है।
 - ii) राजा और उसके सेवक वानर की कथा का वर्णन में है।
 - iii) चित्रग्रीव नामक कपोत की कथा का वर्णन में है।
 - iv) काक और उलूक का तात्पर्य है।

अभ्यास प्रश्न

- i) नीति तथा लोककथाओं के उद्भव और विकास पर प्रकाश डालिए।
- ii) पंचतन्त्र कथाग्रन्थ में वर्णित विषय अत्यन्त संक्षेप में लिखिए।

4.5 वेतालपंचविंशतिका

पंचतन्त्र के बाद पशु पक्षियों की कहानियाँ लुप्तप्राय हो गईं। बृहत्कथा के बाद भी कोई उस परम्परा का अनुगामी ग्रन्थ नहीं दिखा। रोचक लोककथाओं का एक सुन्दर तथा सुव्यवस्थित ग्रन्थ वेतालपच्चीसी उपलब्ध होता है जिसे संस्कृत में वेतालपंचविंशतिका कहते हैं। विद्वानों की परम्परा में इसे स्वतन्त्र कथाग्रन्थ माना गया है। अनेक मतों में यह बृहत्कथामंजरी तथा कथासरित्सागर से प्रभावित रचना मानी जाती है। वेतालपच्चीसी की कहानियों का सबसे प्रचलित रूप 11वीं शताब्दी के क्षेमेन्द्र तथा सोमदेव के ग्रन्थ में पाया जाता है। वेतालपच्चीसी की रचना जम्भलदत्त ने की जो पूर्णतया गद्य में है। वेतालपच्चीसी की कथाएँ अत्यन्त रोचक, बुद्धिबर्धक तथा कौतूहल का उत्पादन करने वाली हैं। वेतालपंचविंशतिका में विक्रमसेन के बौद्धिक उत्कर्ष से प्रकाशित 25 कहानियाँ निबद्ध की गई हैं। इस लोककथा ग्रन्थ के प्रारम्भ और उपसंहार की संरचना इस प्रकार देखी जा सकती है –

राजा त्रिविक्रमसेन को एक भिक्षु प्रतिदिन एक फल लाकर दिया करता था जिसे वे अपने कोषाध्यक्ष को दे देते थे। यह क्रम 10 वर्षों तक चलता रहा। एक दिन राजा को संयोगवश ज्ञात हो गया कि प्रत्येक फल में एक-एक रत्न निहित रहता है। कोषाध्यक्ष से पता लगाने

पर बात सच निकली। राजा का हृदय उस भिक्षु की असाधारण राजभक्ति को देखकर उसकी ओर आकृष्ट हो गया। एक दिन राजा द्वारा प्रणाम कर इस मूल्यवान वस्तु का कारण पूछे जाने पर वह भिक्षु राजा को एकान्त में ले गया और कहने लगा कि मुझे एक मन्त्र की साधना करनी है जिसमें किसी वीर पुरुष की सहायता की आवश्यकता है। आपसे उपयुक्त वीर कौन मिलेगा। आगामी कृष्ण चतुर्दशी को मैं श्मशान घाट पर वट वृक्ष के नीचे प्रतीक्षा करूँगा। अवसर आते ही राजा वहाँ के लिए निकल पड़े। श्मशान पहुँचकर उन्होंने भयंकर दृश्य देखे। राजा ने भिक्षु के पास जाकर कहा मैं आ गया हूँ अपना काम बताओ। भिक्षु ने कहा कि राजन् यहाँ से दक्षिण दिशा में जाइए बहुत दूर जाने पर शिंशपा नाम का एक वृक्ष मिलेगा, उस वृक्ष की डाल से एक मृतक का शरीर लटक रहा है, उसे आप यहाँ लाकर रख दीजिए और मेरा काम पूर्ण करिए।

दृढ प्रतिज्ञा वाले राजा ने शिंशपा वृक्ष के पास पहुँचकर उसकी डाल से शव को गिराया और जैसे ही उसे लाना शुरू किया पुनः वह शव शरीर उसी डाल पर जा लटका और अट्टाहस करने लगा। ऐसा देखकर राजा ने समझ लिया कि इसके शरीर में कोई वेताल अधिष्ठित है। अगली बार पूर्ण साहस से राजा ने दोबारा उस शव को डाल से गिराया और अपने कन्धे पर लेकर चल पड़े। रास्ते में उस शरीर में अवस्थित वेताल ने राजा को एक उलझन भरी कहानी सुनाई और कहा कि तुम इसका समाधान कर दो नहीं तो तुम्हारे सिर के सौ टुकड़े हो जाएंगे। राजा ने समाधान किया, पुनः वह वेताल उसी स्थान पर लौट गया। राजा फिर उस वृक्ष के पास गए और उसके शरीर को लाने का प्रयास करते रहे ऐसा करते करते 23 बार तक यह क्रम चला। चौबीसवीं बार ऐसी उलझन भरी कहानी वेताल ने सुनाई कि राजा उसका समाधान नहीं कर सका। राजा शव को लेकर चलता चला जा रहा था पुनः वेताल ने सोचा कि यह समाधान नहीं कर पा रहा है तो राजा से उसने कहा कि तुम इस अंधेरी रात में श्मशान में बार-बार आने-जाने के कष्ट को झेलते रहे और डरे नहीं इसलिए मैं तुम्हारे ऊपर प्रसन्न हूँ। तुम्हारी दृढता और धैर्य से प्रसन्न होकर मैं इस शव से बाहर हो जाता हूँ। तुम इस शव शरीर को लेकर भिक्षु के पास जाओ। वह भिक्षु इस शरीर में आज रात मेरा आवाहन करके पूजन करेगा फिर वह तुम्हें साष्टांग प्रणाम करने के लिए कहेगा ताकि वह तुम्हारी बलि चढ़ा दे। हे राजा! तुम कहना कि मुझे साष्टांग प्रणाम करने नहीं आता है। पहले तुम साष्टांग प्रणाम करके दिखाओ तब मैं उसका अनुकरण करके करूँगा। ऐसा होते ही जब भिक्षु साष्टांग प्रणाम करेगा तो तुम उसका सिर काट देना। इसलिए जिन सिद्धियों की इच्छा वह भिक्षु करता है वह सारी सिद्धियाँ तुम्हें प्राप्त हो जाएंगी। ऐसा कहते हुए वेताल शव से निकलकर बाहर चला गया और राजा ने उस शव शरीर को भिक्षु के पास लाकर रख दिया। राजा ने वेताल की कथा अनुसार ही सारे कार्य किए और भिक्षु के सिर की बलि चढ़ा दी। इस पर श्मशान के निवासी सारे भूत, प्रेत और वेताल प्रसन्न हुए और राजा की बहुत प्रशंसा की। उनसे वर माँगने को कहा फिर राजा ने कहा कि आपने मेरी सहायता की है। अतः यह पच्चीसों कथाएं संसार में सुप्रसिद्ध हों यही वरदान माँगता हूँ। प्रसन्न होकर वेताल ने कहा कि यह पच्चीसों कथाएं संसार में वेतालपंचविंशतिका के नाम से सुप्रसिद्ध और समादृत होंगी।

4.6 सिंहासनद्वात्रिंशिका

इस कथाग्रन्थ को सिंहासनवत्तीसी भी कहते हैं। ऐसी किंवदन्ती है कि विक्रमादित्य को देवराज इन्द्र ने एक दिव्य सिंहासन उपहार में प्रदान किया था जिसमें दिव्य आत्माओं से अधिष्ठित 32 पुत्तलियाँ लगी हुई थीं। शालिवाहन के द्वारा पराजित होने के बाद अन्तिम बार उन्होंने सिंहासन पर बैठकर पुत्तलियों को सम्बोधित करते हुए कहा था कि मेरे देहावसान के 500 वर्षों के बाद भोज नामक राजा पृथ्वी के गर्भ से इस सिंहासन को प्राप्त कर लेगा

और इस पर बैठने के लिए उत्सुक होगा। तुम सभी उससे मेरे महान् कर्मों का वर्णन करोगी और उसके बाद मुक्त होकर स्वर्ग में अपना स्थान ग्रहण करोगी। इतना कहकर वह सिंहासन से उतर पड़े और उसे धरती के अन्दर छिपा दिया गया। 11वीं शताब्दी ई. में धारा नरेश भोजराज एक दिन अपने मन्त्री के साथ शिकार खेलने के क्रम में जंगल में घूम रहे थे तभी एक टीले के नीचे जमीन के अन्दर गड़े हुए सिंहासन का पता लगने पर उन्होंने उसे निकलवाया और बड़े ही धूमधाम से उसका पूजन किया। शान्ति पाठ, वेद पाठ और ब्राह्मण भोजन जैसे माँगलिक विधि-विधानों के बाद जब सिंहासन पर बैठने के लिए उन्होंने पैर बढाया तभी पहली सीढ़ी पर खड़ी पुत्तली ने उन्हें रोकते हुए विक्रमादित्य के जन्म और उनकी दैवी सिद्धियों के सम्बन्ध में आख्यान कह सुनाया और उनसे पूछा कि क्या आप समझते हैं कि उनका कोई भी गुण सौवें अंश में भी आप में विद्यमान है। जिससे आप इस सिंहासन पर बैठकर शासन कर पाएंगे? पुत्तली की बात सुनकर राजा भोज आश्चर्यचकित हो गए। वे वापस लौट गए, किन्तु बार-बार ऐसा होने पर और बार-बार पुत्तलियों द्वारा विक्रमादित्य की गाथा सुनाए जाने पर भोजराज वापस लौटते रहे। अन्त में उनके धैर्य को देखकर पुत्तलियों ने कहा कि हे राजन्! हम सभी ने अपने कर्तव्य का पालन किया अब आप इस सिंहासन पर 1 वर्ष तक बैठकर शासन कर सकते हैं। इतना कहने के बाद वे सभी पुत्तलियाँ बन्धन मुक्त होकर स्वर्ग चली गईं। इस लोककथा ग्रन्थ के भी कई संस्करण मिलते हैं जिनमें क्षेमंकर रचित जैन संस्करण प्रामाणिक माना गया है। इस कथाग्रन्थ में प्रत्येक कथा के आरम्भ तथा अन्त में श्लोकों का सन्निवेश अवश्य किया गया है। उन्हीं श्लोकों में कथाओं की विषय-वस्तु का उल्लेख किया गया है। इस कथाग्रन्थ का एक दक्षिण भारतीय संस्करण भी प्राप्त होता है। इसके गद्यभाग में सूक्तिमूलक श्लोक पाए जाते हैं।

4.7 पुरुष-परीक्षा

पुरुष-परीक्षा की रचना विद्यापति ने की है। यह उपदेशात्मक संस्कृत कथासाहित्य का महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ की विशेषता यह है कि इसमें पशु-पक्षी जैसे पात्रों के स्थान पर समसामयिक आदर्श चरित्रों को प्रस्तुत किया गया है जो कलियुग में उत्पन्न हैं। इस ग्रन्थ में ग्रन्थकार का मानना है कि पुरुष वही है जिसके व्यक्तित्व में वीरता हो, सुबुद्धि हो, विद्या तथा पुरुषार्थ चतुष्टय का ठीक से समन्वय हो। यदि व्यक्ति इससे रहित है तो वह केवल पुरुष की भाँति आकार-प्रकार धारण करता है और वह बिना पूँछ और सींग के पशु ही है। पुरुष-परीक्षा नाम ही इस ग्रन्थ का अभिप्राय सिद्ध करता है। मंगलाचरण में आदिशक्ति की वन्दना करते हुए विद्यापति ने कहा है कि एकबार जब चन्द्रातपा नगरी के राजा पारावार ने अपनी सर्वगुणसम्पन्न पुत्री के अनुरूप वर के लिए विचार किया तथा मुनिवर सुबुद्धि के पास जाकर प्रश्न किया तब उन्होंने कहा कि वीरता, सुबुद्धि, सद्बुद्धि तथा पुरुषार्थ से युक्त पुरुष ही वास्तविक पुरुष है। ऐसे पुरुष को ही अपनी कन्या प्रदान करनी चाहिए। इसी सन्दर्भ में मुनिवर सुबुद्धि के द्वारा पुरुषों के परिचय हेतु दी गई अज्ञात कथाओं का सम्पूर्ण वर्णन इस ग्रन्थ में किया गया है। विद्वानों की मान्यता के अनुसार इस ग्रन्थ की रचना 14वीं सदी में हुई। इस कथाग्रन्थ में चार परिच्छेद हैं— प्रथम परिच्छेद के अन्तर्गत उदाहरण कथा की कोटि में दानवीर विक्रमादित्य, युद्धवीर कर्णाट राजकुमार मल्लदेव, दयावीर रणथम्भौर के नरेश हम्मीर देव तथा सत्यवीर चौहान वंश के नरेश चाचिक देव की कथाएँ लिखी गई हैं। दूसरे परिच्छेद में कवि ने उदाहरण कथा की दृष्टि से प्रतिभासम्पन्न विशाख, मेधासम्पन्न कोकपण्डित तथा कर्णाट नरेश हरिसिंह देव के मन्त्री सुबुद्धिसम्पन्न गणेश्वर की कथाओं का वर्णन किया है। तृतीय परिच्छेद में कवि के द्वारा संविद्यकथा की दृष्टि से उदाहरण के रूप में धारा नगरी निवासी शस्त्र विद्या में निपुण सिंघल नामक क्षत्रिय धनुर्धर, शास्त्र के जानकार ज्योतिषी वाराहमिहिर, आयुर्वेद के जानकार हरिश्चन्द्र एवं

मीमांसक शबर स्वामी की कथाएं लिखी गई हैं। चतुर्थ परिच्छेद में धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष जैसे पुरुषार्थ से सम्बन्धित कथाओं का वर्णन किया गया है। धर्म के उदाहरण के लिए तत्त्वज्ञानी बोधि नामक कायस्थ, तमोगुण धार्मिक श्रीकण्ठ नामक ब्राह्मण तथा पापकर्म के लिए पश्चातापपूर्वक पुण्य अर्जन करने वाले राजकुमार रत्नांगद की कथाएं लिखी गई हैं। अर्थमूलक कथाओं में न्याय के द्वारा उपार्जित धन का दान एवं भोग में व्यय करने वाले धनिक की कथा के साथ-साथ कई कथाओं का वर्णन करते हुए तृष्णा से ग्रस्त एक माली की कथा का वर्णन भी किया गया है। काम कथा के अन्तर्गत अनुकूल नायक राजा शूद्रक की कथा, गौड नरेश लक्ष्मण सेन की कथा, महाराज विक्रमादित्य की कथा, धूर्त नायक शशि की कथा तथा विद्या एवं बुद्धि से सम्पन्न होने पर भी अपनी प्रेयसी पटरानी शुभ देवी के वशीभूत रहने के कारण अपने राज्य तथा प्राण को भी गंवा देने वाले महाराज जयचन्द की कथा भी प्राप्त होती है। मोक्ष कथा के अन्तर्गत भर्तृहरि की कथा, विवेकशर्मा की कथा, स्पृहा से रहित मुमुक्षु कृष्ण चैतन्य की कथा तथा लब्धसिद्धि मुमुक्षु की कथा के वर्णनों के साथ इस ग्रन्थ के वर्णन की समाप्ति हो जाती है।

बोध प्रश्न 2

- 1) निम्नलिखित प्रश्नों में सही विकल्प का चयन कीजिए –
 - i) वेतालपंचविंशतिका में कथाएं हैं –
(क) 20 (ख) 22 (ग) 24 (घ) 25
 - ii) विक्रमादित्य को दिव्य सिंहासन दिया था –
(क) इन्द्र (ख) विष्णु (ग) नारद (घ) शिव
 - iii) पुरुष-परीक्षा रचना है –
(क) विद्यापति (ख) जम्भलदत्त (ग) कल्हण (घ) सुमेरु
 - iv) वाराहमिहिर की चर्चा किस ग्रन्थ में है–
(क) पुरुष-परीक्षा (ख) वेतालपंचविंशतिका (ग) हितोपदेश
(घ) पंचतन्त्र
- 2) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –
 - i) भिक्षुक ने राजा से वृक्ष की डाल पर से शव लाने को कहा।
 - (ii) वास्तविक पुरुष को होना चाहिए।
 - (iii) राजा विक्रमादित्य का सिंहासन में पाया गया था।
 - (iv) पुरुष-परीक्षा नामक ग्रन्थ की रचना सदी में हुई।
3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –
 - i) वेतालपंचविंशतिका को हिन्दी में क्या कहते हैं?
.....
.....
.....
 - ii) वेतालपंचविंशतिका की कथायें किससे सम्बन्धित हैं?
.....

iii) राजा ने वेताल से क्या वरदान माँगा?

iv) पुरुष-परीक्षा ग्रन्थ के अनुसार किस प्रकार के व्यक्ति को कन्या देनी चाहिये?

अभ्यास प्रश्न

1) निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए –

क) वेतालपंचविंशतिका

ख) सिंहासनद्वात्रिंशिका

ग) पुरुष-परीक्षा

4.8 सारांश

इस इकाई का अध्ययन कर लेने के पश्चात् आप वैदिक साहित्य में नीतियों के उद्भव को जानते हुए लौकिक संस्कृत में नीतिसाहित्य के अन्तर्गत सिद्धान्तपरक नीतियों के वर्णन के साथ-साथ उपदेशपरक नीतियों के बारे में भी जान चुके हैं। शुक्र नीति, विदुर नीति, चाणक्य नीति के साथ-साथ भर्तृहरि के नीतिशतकम् में भी अनेक नीतियों के वर्णन किए गए। किन्तु लौकिक संस्कृत साहित्य के कथाग्रन्थों में पंचतन्त्र के अन्तर्गत 5 भागों में विष्णुशर्मा ने अत्यन्त कला कौशल के साथ पशु पात्र प्रधान कथाओं की रचना करके सम्पूर्ण पाठक समाज को जीव जन्तुओं में मानवोचित क्रियाकलापों का दर्शन कराया है। इतना ही नहीं पंचतन्त्र की कथाओं में पशु पक्षी जीव जन्तुओं के संवादों में पदे-पदे केवल व्यावहारिक शिक्षा ही प्राप्त होती है। हितोपदेश में नारायण पण्डित ने चार भागों में अनेक कथाओं की सर्जना करके समस्त पाठक पीढ़ी को व्यावहारिक नीतिशास्त्र से अवगत कराया है। इतना ही नहीं हितोपदेश तो रुचिकर कथाओं के माध्यम से संस्कृत शिक्षण देने का बहुत ही कलात्मक कथाग्रन्थ साबित होता है। कथाओं के माध्यम से नीतियों की शिक्षा देने के क्रम में लोककथा ग्रन्थ भी संस्कृत साहित्य में कम योगदान नहीं रखते। वेतालपंचविंशतिका, सिंहासनद्वात्रिंशिका तथा पुरुष-परीक्षा नामक ग्रन्थ इस बात के साक्षी हैं। इन तीनों ग्रन्थों में निबद्ध कथाओं का अनुशीलन करने से उदीयमान पीढ़ी को लोकनीति, कूटनीति, पुरुषार्थ की प्राप्ति तथा समसामयिक सन्दर्भ में नवचेतना प्रदान करना ही ग्रन्थकारों का सहज उद्देश्य रहा है। यही कारण है कि लोक कथाओं की भाषा सहज रूप से हृदयग्राही भी कही जाती है। गद्य में तथा पद्य में कथाओं का सृजन करके उनमें व्यावहारिक नीतिशास्त्र से सम्बन्धित तथ्यों का वर्णन करके कवियों ने जीवन में अनुशासन, चरित्र निर्माण, युद्धवीरता, दयावीरता, दानवीरता से लेकर धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सभी की प्राप्ति के साधन को कथाओं के माध्यम से जनमानस के समक्ष रखा है।

4.9 शब्दावली

वाङ्मय	— परस्पर वाच्य वाचक से समन्वययुक्त शास्त्र
उद्भावक	— संवर्धक
मानवोचित	— मनुष्यों के अनुकूल, मनुष्योचित
अभीष्ट	— इच्छित, वांछित
कलेवर	— आकार
अनुगामी	— अनुयायी
आकृष्ट	— आकर्षित किया हुआ
मांगलिक	— मंगलसूचक, सुखद
स्पृहा	— अभिलाषा
मुमुक्षू	— मोक्ष पाने का इच्छुक

4.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- 1) संस्कृत साहित्य का वृहद् इतिहास पंचम खण्ड, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ।
- 2) संस्कृत साहित्य का इतिहास— पद्मभूषण आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन वाराणसी।
- 3) संस्कृत साहित्य का इतिहास —वाचस्पति गैरोला, चौखम्बा प्रकाशन वाराणसी।
- 4) संस्कृत साहित्य का इतिहास — डॉ शिवमूर्ति शर्मा, दया पब्लिशिंग हाउस इलाहाबाद।

4.11 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

- 1) (i) असत्य (ii) सत्य (iii) असत्य (iv) सत्य
(v) असत्य (vi) सत्य
- 2) (i) मित्रभेद (ii) मित्रभेद (iii) मित्रसम्प्राप्ति (iv) काकोलुकीय

बोध प्रश्न 2

- 1) (i) (घ) 25 (ii) (क) इन्द्र (iii) (क) विद्यापति
(iv) (क) पुरुष-परीक्षा
- 2) (i) शिंशपा (ii) दानवीर, धर्मवीर (iii) पृथ्वी (iv) 14वीं
- 3) (i) वेतालपंचविंशतिका को हिन्दी में वेतालपच्चीसी कहते हैं।
(ii) वेतालपंचविंशतिका की कथायें भिक्षुक, राजा तथा वेताल से सम्बन्धित हैं।
(iii) राजा ने वेताल से वरदान माँगा कि ये कथायें प्रसिद्ध हों तथा समाज में इनका आदर हो।
(iv) पुरुष-परीक्षा ग्रन्थ के अनुसार वीरता, सुबुद्धि, सदिग्धता तथा पुरुषार्थ से युक्त व्यक्ति को कन्या देनी चाहिये।

अभ्यास प्रश्न

इन प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।